ईश्वर की पूर्ण कृपा से

मसनवी मीरहसन

तसवीर समेत

पहली बार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

जून सन् १८८१ ई०

श्रीगणेशायनमः

मसनवी मीरहसन प्रारभ्यते

करूं पहिले तौहीद यज़दां रक़म | झुका जिसके सिजदे को अव्वल क़लम
सरे लौह पर रख बयाज़े जबीं। | कहा दूसरा कोई तुझसा नहीं
क़लम फिर शहादत की अंगुली उठा | हुआ हर्फ़ ज़न यों कि रब्बुल अला
नहीं कोई तेरा न होगा शरीक | तेरी ज़ात है वहदहू ला शरीक
परस्तिश के क़ाबिल तु है ऐ करीम | कि है ज़ात तेरी ग़फ़ूरुल रहीम
रहे हम्द में तेरे इज्ज़ो व अमल ॥ | तुझे सिजदा करना चलूं सिर के बल
वो अल्लह कि रे साहि माबूद है | क़लम जो लिखे उससे अफ़ज़ूद है
सबों का वही दीनो ईमान है। | यह दिल है तमाम अरु वही जान है
तरोताज़ा है उससे गुलज़ारे ख़ल्क़ | वो अबरे करम है हवादार ख़ल्क़
अगरचे वो बेफ़िक्रो ग़ैयूर है। | वले पर वरिश सब की मंज़ूर है
किसी से न बर आवे कुछ काम जां | जो वह मेहरबां है तो कुल मेहरबां
अगरचे यहां क्या है और क्या नहीं | पर उस बिन तो कोई किसी का नहीं
मुवे पर नहीं उससे रुको गुज़श्त | उसी की तरफ़ सब की है बाज़गश्त
रहा कौन अरु किसकी बात रही | मुए और जीते वही है वही ॥
निहां सब में और सब में है आशकार | ये सब उसके आलम हैं हिज़्दह हज़ार
वहीं सब है उससे वही सबसे पेश। | हमेश अह से है और रहेगा हमेश।
चमन में है वहदत के रंगता के गुल | कि मुश्ताक़ हैं जिसके यां जुज़्वो कुल
उसी से है कांटा उसीसे है फूल | उसी का है [illegible] उसी से [illegible]
जिसे चाहे जन्नत में देवे मुक़ाम | जिसे चाहे दोज़ख़ में रक्खे मुदाम

वह है मालिके मुल्के दुनिया व दीं	है क़ब्ज़े में उसके ज़मानो ज़मीं
सदा बेनमूदों की उससे नमूद ।	दिले बस्तगां का है उससे कशूद
उसी की नज़र से है हमसब की दीद	उसी के सख़ुन पर है गुफ़्तो शुनीद
वही नूर है सब तरफ़ जिलवा गर	उसी के यह ज़र्रे हैं शम्सो क़मर
नहीं उससे ख़ाली ग़रज़ कोई पूं ।	वो रुकु पों नहीं पर हर एक पों में है
जो गौहर में है वो नहै संग में ॥	वलेकिन चमक ता है हर रंग में ॥
वो ज़ाहिर में हरचंद ज़ाहिर नहीं	प ज़ाहिर कोई उससे बाहर नहीं
तअम्मुल से कीजे अगर ग़ौर कुछ	जो सब कुछ वही है नहीं और कुछ
उसी गुल की है बू से खुशाब गुलाब	फिरे है लिये साथ दरिया हुबाब
पर उस जोश में आके बहिना नहीं	समझने की है बात कहिना नहीं
क़लम गो ज़बां लावे अपनी हज़ार	लिखे कि सतर हम्द परवर दिगार
कि आजिज़ है यहं अंबिया की ज़बां	ज़बाने क़लम को यह कुदरत कहां
इस ओहदे से कोई भी निकला नहीं	सिवा इज्ज़ इसके था यां कुछ नहीं
वह माबूद यकता ख़ुदाये जहां ।	कि जिसने किया कुन में कौनो मकां
दिया अक़्लो इदराक उसने हमें	किया ख़ाक से पाक उसने हमें ।
पयम्बर को भेजा हमारे लिये ।	वली और इमाम उसने पैदा किये
जहां को उन्होंने दिया इन्तज़ाम	बुराई भलाई सुझाई तमाम ॥
दिखाई उन्होंने हमें यह रस्त ।	कि ता हो नफ़्स राह की बाज़ ख़्वास्त
सो वह कौन सी राह पारस्ये नबी	कि रस्ते को जन्नत के सीधी गई

नात हज़रत रिसालत पनाह सल्लेअल्ला अलैहव आलही वसल्लम

नबी कौन याने रसूल करीम	नबूवत के दरिया का दुर्रे यतीम
हुवा गो कि ज़ाहिर में उम्मी लक़ब	पर इल्मे लदुन्नी खुला दिल पे सब

बग़ैर अज़ लिखे और किये बे रक़म
चले हुक्म पर उसके लौहो क़लम

हुआ इल्म दी उसका जो आश्कार
गुज़श्ता हुआ हुक्म तक़वीम पार

उठा कुफ़्र इस्लाम ज़ाहिर किया
बुतों को ख़ुदाई से बाहिर किया

किया हक़ ने नबियों का सरदार उसे
बनाया नबुव्वत का हक़दार उसे ।

नबुव्वत जो की हक़ ने उस पर तमाम
लिखा अपना फ़ुलनास ख़ैरुल अनाम

बनाया समुझ बूझ का ख़ूब उसे
ख़ुदा ने किया अपना महबूब उसे

कहूं उसके रुतबे का क्या मैं बयां ।
खड़े हों जहां वां थे सफ़ मुरसिलां

मसीह उसके ख़रगाह का पारः दोज़
तजल्लीय नूर उसके मशअ़ल फ़रोज़

ख़लील उसके गुलज़ार का बाग़बां
सुलैमां से कई मुहरदार उसके वहां

ख़िज़्र उसके सरकार का आबदार
ज़िरः साज़ दाऊद से वहां हज़ार ।।

मुहम्मद के मानिन्द जग में नहीं
हुआ है न ऐसा न होगा कहीं ।।

यह थी रफ़्अ़त जो उसके साया न था
कि रंगे दुई वहां तक आया न था

न होने के सायः का था यह सबब
हुआ सर्फ़ पेशानी में काबे के सब

वह क़द इसलिये था न सायः फ़िगन
किया कुल वह एक मोजिज़े का बदन

बना सायः उसका लतीफ़ इस क़दर
न आया लताफ़त के बाइस नज़र ।।

अजब क्या जो उस गुल के सायः न हो
कि था वह गुले क़ुदरते हक़ की बो

ख़ुश आया न साये को होना जुदा
उसी नूर हक़ के रहा ज़ेर पा ।।

न डाली किसी शख़्स पर अपनी छांव
किसी का न मुंह देखा दे उसके पांव

वह होता ज़मीं गीर क्या फ़र्श पर
क़दम उसके सायः का था अर्श पर

न होने की साये के एक वजह और
मुझे ख़ूब सूझी पै है क़ाबिले ग़ौर ।।

जहां तक कि थे शौक़ के अहले नज़र
समुझ मा पये नूर कुह्लुल बसर

सभों ने लिया पुतलियों पर उठा ।
ज़मीं पर न साये को गिरने दिया

सियाही की पुतली का है यह सबब
वही सायः फिरता है आंखों में अब

बयान: यह थीं इस अपनी कहां | उसी से यह रौशन है सारा जहां ॥
नज़र से जो ग़ायब वह साय: रहा | मलायक के दिल में समाया रहा

मनक़बत हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली अलैहिस्सलाम

नहीं हम्सर उसका कोई जुज़ अली | कि भाई का भाई वसी का वसी ॥
हुई जो नबूवत नबी पर तमाम। | हुई त्यों इमामत उसी पर तमाम
जहां फ़ैज़ से उसके है कामयाब | नबी आफ़ताब व अली माहताब
अली दीनो दुनिया का सरदार है | कि मुख़्तार के घर का मुख़्तार है
दुर्याये इमामत के गुल ग़ुंचों का गुल | बहारे वलायत का बाग़ सँबुल ॥
अली राज़दारे ख़ुदा ओ नबी। | दुरे बंदारे सिर्रे ख़फ़ी ओ जली
अली बन्दये ख़ास दरगाह हक़ | अली सालिको रहरवे राह हक़
अली ये वली इब्न अमे रसूल | लक़ब शाहि मर्दां व ज़ौजे बतूल
कहे यों जो चाहे कोई बैर से | ये निस्बत अली को नहीं ग़ैर से
ख़ुदा ने क़स पैग़म्बरां ख़ास | दिया फ़ज़ीलत बकस मां ख़ास
यहां बात की अब समाई नहीं | नबी और अली में जुदाई नहीं
नबी वो अली हैं दो निस्बत बहम | दुआ ओ यके चूं ज़बाने क़लम
अली का दुई देखो दो नूर की | अली का मुहिब जन्नती जन्नती
नबी ओ अली फ़ातिमा: और हसन | हुसैन इब्न हैदर यह है पंजतन
हुई उनपे दोज़ग की ख़ूबी तमाम | उन्हों पर दरूद और उन्हों पर सलाम
अली से लगा ता ब: मेंहदीय दीं। | यह हैं येक नूरे ख़ुदाये बरीं ॥
उन्हों से है क़ायम इमामत का घर | कि बारह सितूं हैं यह असना अशर
सग़ीर: कबीर: से यह पाक हैं ॥ | हिसाबे अमल से यह बेबाक हैं
हुआ यां से ज़ाहिर कमाले रसूल | कि बेहतर हुवे सब से आले रसूल

तारीफ़ असहाब पाक रिज़वां अल्लाह अलैहुम

सलाम उन पः जो उसके असहाब हैं
वह असहाब कैसे कि अहबाब हैं
ख़ुदा ने उन्हों को कहा मोमनीन
वह हैं ज़ीनते आसमानो ज़मीन
ख़ुदा उन से राज़ी रसूल उन से ख़ुश
अली उन से राज़ी बतूल उन से ख़ुश
हुई फ़र्ज़ उनकी हमें दोस्ती ॥
कि हैं दिल से वह जां निसारे नबी

मुनाजात बदरगाह क़ाज़ीउल हाजात

इलाही बहक़्क़े रसूले अमीं ॥
बहक़्क़े अली और असहाब दीं ॥
बहक़्क़े बतूलो व आले रसूल ।
करूं अर्ज़ जो मैं सो होवे क़बूल ॥
इलाही मैं बन्दः गुनहगार हूं ॥
गुनाहों में अपने गरांबार हूं ॥
मुझे बख़्श दीजो मेरे परवरदिगार
कि तू है करीम और आमुर्ज़गार
मेरी अर्ज़ यह है कि जब तक जियों
शराबे मुहब्बत को तेरी पियों ॥
सेवा तेरी उलफ़त के और सब है हेच
यही हो न हो और कुछ पेच पेच ॥
ग़म हो तो हो आले अहमद का ग़म
सेवा इस अलम के न हो कुछ अलम
रहे सब तरफ़ से मेरे दिल को चैन
बहक़्क़े हसन और बहक़्क़े हुसैन
किसी से न करनी पड़े इल्तिजा
तु कर ख़ुद बख़ुद मेरी हाजत रवा ॥
सहीह और सालिम सदा मुझको रख
ख़ुशी से हमेशा ख़ुदा मुझको रख
मेरे आले औलाद को शाद रख
मेरे दोस्तों को तु आबाद रख
मैं ख़्वाहां हूं जिनका नमक ऐ करीम
सदा रहम कर उन पे तू ऐ रहीम
जियूं आबरू और हुरमत के साथ
रहूं मैं अज़ीज़ों में इज़्ज़त के साथ
बर आवें मेरे दीनो दुनिया के काम
बहक़्क़े मुहम्मद अलैहिस्सलाम

तारीफ़ सख़ुन

मिला मुझको साक़ी शराबे सख़ुन
कि मफ़तूह हो जिससे बाबे सख़ुन

सखुन है तो है और क्या बात है
सखुन की मुझे फ़िक्र दिन रात है

सखुन से है नामे निकोयां बलन्द
सखुन के तलबगार हैं अक़्लमन्द

सखुन नाम उनका रखे बरक़रार
सखुन की करें क़द्र मर्दाने कार

जिन्हें चाहिये साथ नेकी के नाम
सखुन से वही अपना रखते हैं काम

ज़बाने क़लम से बड़ाई रहे ॥
सखुन से सलफ़ की भलाई रहे

सखुन से रहे याद यह नक़्ले ख़्वाब
कहां रुस्तमो गेवो अफ़रासियाब

जवाहिर सदा मोल लेते रहे ॥
सखुन का सिला यार देते रहे ॥

सखुन से जो उसका ख़रीदार है
सखुन का सदा गर्म बाज़ार है

इलाही रहे क़द्रदाने सखुन।
रहे जब तलक के ज़बाने सखुन

मदह शाह आलम बादशाह ग़ाज़ी बहादुर की

ज़मींबोस हो जिसके पास से क़मर
ख़दीवे फ़लक शाह आली गुहर

वह है बुर्जे अक़लीम में आफ़ताब
जहां उसके परतौ से है कामयाब

जहां होवे और हो जहांदार शाह
उसी शहर से है मुनव्वर यह माह

और उसका यह [illegible]
वह महरे मुनव्वर यह माहे मुनीर

नगर से न वन्ने हकी देखा जिधर / दिया मिस्ल नरगिस उसे सीमो ज़र
सख़ावत यह अदना सी इक उसकी है / कि इक दिन दो शाले दिये साल से
सिवा इसके है और य हदास्तां । / कि हो जिससे कुर्बान हातिम की जां
हुई क़ौम जो इक बार कुछ वर्षा काल / गरानी सी होने लगी एक साल ॥
ग़रीबों का दम सा निकलने लगा / न वक्कुल का भी पाऊं जलने लगा
वज़ीरे ल मुमालिक ने तदबीरकार / ख़ुदा को दिया राह में मालोज़र
मुहल्ला मुहल्ला किया हुक्म यह / कि नाड़े से इस ग़म की खोले गिरह
यह चाहा कि ख़िलक़त किसी ढब जिये / कई लाख लाख एक दिन में दिये
य ह लग़ज़िश पड़ी मुल्क मे जो नमा / लिया हाथ ने उसके गिरतों को थाम
य है बन्दःनवाज़ी य ह जां परवरी / यह आईने सरदारी औ सरवरी ॥
हुई ज़ात पर उस सख़ी के तमाम / तकल्लुफ़ है आगे सख़ावत का नाम
फ़क़ीरों की है यां तलक तो बनी । / कि इक एक था हो गया है ग़नी ।
यह क्या दख़्ल आवाज़ दे जो गदा / घटक को कली की न होवे सदा ।
नहो उसका शामिल जो अब्रे करम / असर अब्रे नैसां से होवे अदम ।
करहले के नरगिस जो होवे खड़ी / तो ख़िज़ल्लत से जावे ज़मीं में गड़ी
हर इक काम उसके जहां की मुराद / फ़लातूं तबीयत अरस्तू नज़ाद ॥
जब ऐसा वह पैदा हुआ है बशर / तब उसको दिया है य ह कुछ मालोज़र

बयान शुजाअत का

लिखूं गर शुजाअत का उसके बयां / क़लम हो मेरा रुस्तमे दास्तां ॥
ग़ज़ब से वह हाथ अपना जिस पर उठाय / अजल का तमांचा क़सम उसकी खाय
करे जिस जगह ज़ोर उसका नमूद / दिले आहन उस जा पे होवे कबूद
तले तेग़ गर उसकी रहे मसाफ़ / नज़र आये दुशमन से मैदान साफ़
अगर बेहयाई से कोई उदू ॥ / मिला देवे उस तेग़ से मुंह कभू ॥

तो ऐसी ही खाकर गिरे सिर के बल
न हो क्यों कि वह तेग़ बरके ग़ज़ब
हुई हल कि जिस उसकी लोही अजल
लगा दे अगर कोह पर एक बार ।
ग़ज़ब से ग़ज़ब उसके कांपा करे
और उस ज़ोर पर है यह दिल मोहया
यहां तक कि है इल्मो फ़ज़्लो कमाल
सखुनदां सखुन संज शीरीं बयां
सखुन की नहीं उससे पोशीदः बात

कि सिर पर खड़ी उसके रोये अजल
कि दुर्रियों की नज़ारीद जो देहरे हैं सब
निकल आये यह गिर पड़े वह उगल
गुज़र जाये यों जैसे साबुन से तार ।।
वह खासे हैवत भी उसके डरे ।।
कि है खल्क़ का जैसे दरिया बहा
हरइक फ़न में माहिर है वह खुश खिसाल
वज़ीरे जहां तो वही है ज़मां ।।।।
गुनाबिन हैं सब अस्ल उनके कुरून

सलीक़ः हरइक फ़न में हर बात में ।
सहौर घर और तमाशे पे दिल
न हो उसको क्योंकर हवाये शिकार
दिलेरों का है बस दिलेरी से काम
यहां राज़कर अस्लम आके शिकार

निकलती नई बात दिन रात में
कुशादः दिली और खुशी मुत्तसिल
तहव्वर शुजाओं का है यह शुजा
कि रहता है शेरों को शेरों से काम
कि आयद पये सैद दिलहा बका

खुले बन्द हैं जितने सहरा में सैद
हैं नख्वाब के दाम उल्फ़त में क़ैद

ज़िबेह रा फ़ुदिले आहुवां से ख़ल:
व फ़ितराक के ओ चश्म हा वे ग़ुल:

शुजाअ़त का हिम्मत का यह काम है
दिल इस हाथ में है कि बादाम है ॥

न होता अगर उसको अज़्म शिकार
दरिन्दों से बचता न: शहरो दयार ।

न बचते जहां बीच खुर्दो बुज़ुर्ग ॥
यह फ़ौजें तो सब लुक़्म ए पेशो गुर्ग

वह इन्सान पर उसका अहसान है
कि बेख़ौफ़ इन्सान की जान है

बनाई जहां उसने नालकी गाह
रहे सैद क्यों आके फ़ामो पनाह

रखा सैद बहरी पे जिस दम ख़याल
लिया शुश्त पर अपने माही ने जाल

मगर अपना देते हैं जी जान कर
कि दामों पे गिरते हैं अल आनकर

नहंग ऐसे निकलती है दरिया में सूस
खुशी से उछलती है दरिया में सूस

परिन्दों का दिल उस तरफ़ है लगा
परिन्दों को रहती है उसकी हवा

फ़लों का है बल्कि जी का यही ।
कमर आ बंधावे हमारी कोई

ख़बर उसकी सुनकर ये गैंडा चले
कि हाथी भी हो मस्त ऐंडा चले ॥

जो कुछ दिल में गैंडे के आवे ख़याल
तो भागे उस आगे सिपर अपनी डाल

खड़े अपने होते हैं सिर जोड़ जोड़
कि जी कौन देता है बदबद के होड़

इताअ़त के हलक़े पे भागे जो फ़ील
पलक उसके आंखों में हो रोद नील

सो वह तो इताअ़त में इकदस्त हैं ।
नशे में मुहब्बत के सब मस्त हैं ।

उसी के लिये गो कि है यह पहाड़
क़दम अपने रखते हैं सब गाड़ गाड़ ।

कि शायद मुशर्रफ़ सवारी से हों
सर अफ़राज़ चलकर अमारी से हों

चलन जब ये कुछ होवे हैवान के
तो फिर हक़ बजा नित हो इन्सान के

किसे हो न सुहबत की उसकी हवस
वले क्या करें जो न हो दस्तरस ॥

इज्ज़ो इन्किसार मुसन्निफ़ और अर्ज़ करना दास्तान का

फ़लक बारगाहा मलक दरगाहा ।
जुदा मैं जो क़दमों से तेरे रहा ॥

न कुछ अक़्ल ने और न तदबीर ने | रखा मुझको महरूम तक़दीर ने
पर अब अक़्ल ने मेरे खोले हैं गोश | दिया है मदद से तेरे मुझको होश
सो मैं इक कहानी बनाकर नई । | दुरे फ़िक्र से गूँध लड़ियाँ कई ॥
ले आया हूँ ख़िदमत में बहरे नयाज़ | यह उम्मेद है कि हूँ सरफ़राज़
मेरा उज़्र तक़सीर होवे क़बूल ॥ | बहक़्क़े अली औ बआले रसूल ।
रहें शाद आबाद कुल ख़ैरख़्वाह | फिरें इस घराने से दुश्मन तबाह
रहे जाहो हशमत तेरा यह मुदाम | बहक़्क़े मुहम्मद अलैहुस्सलाम
अब आगे कहानी की है दास्तां | ज़रा सुनिये दिल दे के इसका बयां

आग़ाज़ दास्तान

किसी शहर में था कोई बादशाह | कि था वह शहंशाह गेती पनाह
बहुत हशमतो जाहो मालो मनाल | बहुत फ़ौज से अपने फ़रख़ुंदा हाल
कई बादशः उसको देते थे बाज | ख़ताओ ख़ुतन से वह लेता ख़िराज
कोई देखता आके जब उसकी फ़ौज | तो कहता कि है बह्रे हस्ती की मौज
तवेले के उसके जो अदना थे ख़र | उन्हें नालबन्दी में मिलता था ज़र
जहांतक कि सरकश थे अतराफ़ के | वह उस शह के रहते थे क़दमों लगे
रऐयत थी आसूदः औ बेख़तर । | न ग़म मुफ़लिसी का न चोरी का डर
अजब शह्र था उसका मीनू सवाद | कि क़ुदरत ख़ुदाई की आती थी याद
लगे थे हर इक जा पे वां संगो ख़िश्त | हर इक कोच: उसका था रश्के बिहिश्त
ज़मीं सब्ज़ो सेराब आलम तमाम | नज़र को तरावत वहां सुबहो शाम
इमारत थी गच की वहां बेशतर । | कि गुज़रे सफ़ाई से जिस पर नज़र ॥
कहीं चाह मुंबा कहीं हौज़ो नह्र । | हर इक जा पे आबे लताफ़त की लह्र
कहूं उसकी बस्ती का क्या मैं बयां | कि जों रूह हां था वह कि सौ जहां ॥

हुनरमन्द वाँ अहले हिरफ़ा तमाम
हर इक जो अपने फ़न का था इज़दहाम

वह दिलचस्प बाज़ार था चौक का
कि ठहरे जहाँ बस वहीं दिल लगा ।

जहाँ तक कि रस्ते थे बाज़ार के
कहे तू कि दस्ते थे गुलज़ार के ॥

वह सूरत: मकानों के दीवारो दर
सफ़ेदी पे जिसके न ठहरे नज़र

सफ़ा पर जो उसके नज़र कर गये
उसे देख कर संग मर मर गये ॥

कहूँ क़िले के उसके क्या मैं शिकोह
गये देख बुलन्दी को देख उसके कोह

वह दौलतसरा ख़ानये नूर था ।
सदा ऐशो इशरत से मामूर था ॥

हमेशः ख़ुशी रात दिन ऐशो बाग़
न देखा किसी दिल पै जुज़ लाला दाग़

सदा ऐशो इशरत सदा राग रंग ।
न था नीस्त से अपने कोई ब तंग

ग़नी वाँ हुआ जो कि आया तबाह
अजब शहर था वह अजब बादशाह

न देखा किसी ने कोई वहाँ फ़क़ीर
हुये उसके दौलत से घर घर अमीर

कहाँ तक कहूँ उसका जाहो हशम
महल्लो मकान उसका रश्के इरम

सदा माहरुयों से सुहबत उसे ॥
सदा जामा ज़ेबों से रग़बत उसे ।

हज़ारों परी पैकर उसके ग़ुलाम
कमरबस्तः ख़िदमत में हाज़िर मुदाम

किसी तरह का वह न रखता था ग़म
मगर एक औलाद का था अलम

इसी बात का उसके था दिल पे दाग़
न रखता था वह अपने घर का चिराग़

दिलों का अजब उसके यह फेर था
कि उस रोशनी पर यह अंधेर था ॥

वज़ीरों को इक रोज़ उसने बुला
जो कुछ दिल का अहवाल था सो कहा

कि मैं क्या करूँगा यह मालो मनाल
फ़क़ीरी का है मेरे दिल को ख़याल

फ़क़ीर अब न हूँ तो करूँ क्या इलाज
न पैदा हुआ वारिसे तख़्तो ताज

जवानी तो मेरी गई सर बसर ॥
नमूदार पीरी हुई सर बसर ॥

दरेग़ा कि अहदे जवानी गुज़श्त ।
जवानी मगो ज़िन्दगानी गुज़श्त

बहुत मुल्क पर जान खोया किया
बहुत फ़िक्र दुनिया में सोया किया

ज़हे बेत मीज़ी वो बे हासिली ।
कि अज़ फ़िक्र दुनिया वो दीं ग़ाफ़िलीं

वज़ीरों ने की अर्ज़ ऐ आफ़ताब ।
न हो ग़र :तुझको कभी इज़्तराब

फ़क़ीरी जो कीजे तो दुनिया के साथ
नहीं छूट जाना उधर ख़ाली हाथ।

करो सल्तनत लेकिन आमाल नेक
कि ता दो जहां में है हाल नेक ।।

जो आक़िल हैं वह सोच में लग रहे
कि ऐसा न होवे कि फिर सब कहें ।

तु करे ज़मीं शानि की सारवती ।।
कि दर आसमां जीज़ परदारदनी

यह दुनिया जो है मज़रए आख़िरत
फ़क़ीरी में ज़ाया करो इस को मत

इबादत से इस कि गुल को आबदो
कि खां जा के ख़िरमन भी तय्यार लो

रखो याद अदलो सख़ावत की बात
कि इस फ़ैज़ से है तुम्हारी नजात ।।

मगर हां ये औलाद का है जो ग़म
सो इसका तरद्दुद भी करते हैं हम

अजब क्या कि होवे तुम्हारे ख़लफ़
करो तुम न औक़ात अपनी तलफ़

न लावो कभी यास की गुफ़्तगू।।
कि कुरआं में आया है लातक़नतू।।

बुलाते हैं हम अहले तंजीम को ।।
नसीबों को अपने ज़रा देख लो ।।

तसल्ली तो दे शाह को इस क़दर
वले अहले तंजीम को भेजे ख़बर ।

नजूमी वो रम्माल औ बरहमन ।।
ग़रज़ याद था जिनको इस ढब का फ़न

बुलाकर उन्हें शाह कने ले गये ।।
जो हैं रूबरू सब वह शाह के गये ।।

पड़ा जब नज़र वह शाहे ताजो नगीं
दुआ दी कि हो शाह के बेदार बख़्त

किया क़ायदे से उठ हर एक ने सलाम
कहा शाह ने तुमसे रखता हूं काम

निकालो ज़रा अपनी अपनी किताब
मेरा है सवाल उसका लिक्खो जवाब

नसीबों में देखो तो मेरे कहीं ।।
किसी से भी औलाद है या नहीं

यह सुन कर वो रम्माल व ला ग़िनास
लगे खींचने ज़ायचे बेक़यास ।।

धरे तख़्ते आगे लिया कुरआ हाथ
लगा ध्यान औलाद का उसके साथ

जो फेंकी तो शक्लें कई बैठीं मिल
कई शक्ल से दिल गया उनका खिल

जमा आज़ने रम्माल के अर्ज़ की ॥ कि है घर में उम्मेद की कुछ ख़ुशी।

यह सुन हमसे रम्माल मी के शफ़ीक़ बहुत हमने तकरार की हर तरीक़।

बयाज़ अपनी देखी जो इस रम्ल की तो एक नुक़तः है फ़र्दे ख़ुशी ॥

है इस बात पर इज़्तमाये तमाम कि तालअ में फ़रज़न्द है तेरे नाम

ज़नो ज़ौज को शक्ल में है फ़रह ॥ पिया कर मये वस्ल की तू क़दह ॥

नजूमी भी कहने लगे दर जवाब कि हमने भी देखी है अपनी किताब

नहूसत के दिन सब गये हैं निकल अमल अपना सब कर चुके हैं ज़ुहल

सितारों ने तालअ के बदले हैं तौर ख़ुशी का कोई दिन में आता है दौर

नज़र की जो तसदीस ओ तसलीस पर तो देखा कि है नेक सब की नज़र ॥

किया पंडितों ने जो अपना विचार तो कुछ उंगलियों पर किया फिर शुमार

जनम पत्री शाह का देख कर। तुला और बरछीक पर कर नज़र।

कहा राम जी की है तुम पर दया चंद्रमा सा बालक तेरे होवेगा।

निकलते हैं अब तो ख़ुशी के बचन न हो गर ख़ुशी तो नहीं बरहमन ॥

महाराज के होंगे मक़सद शिताब कि आया है अब पांचवां आफताब

नसीबों ने की आपकी यावरी ॥ कि आई है अब पांचवीं सुपूतरी

मुक़र्रर तेरे चाहिये हो पिसर ॥ कि देती है यों अपनी पोथी ख़बर

वलेकिन मुक़र्रर है कुछ और भी कि हैं इस भले में बुरे तौर भी ॥

यह लड़का तो होगा वले क्या कहें ख़तर है इसे बारहें बरस में ॥

न आये यह ख़ुरशीद बालाय बाम बलन्दी से ख़तरः है इसको तमाम

न निकले यह बारह बरस बुर्ज से माह रहै बुर्ज में यह मेह चारदह ॥ ॥

कहा सुन के यह शाह ने उनके तईं कहो जी का ख़तरः तो इसको नहीं

कहा जान की सब तरह ख़ैर है ॥ मगर दपूत गुरबत की कुछ सैर है

कोई उसपे आशिक़ हो जिन्नो परी कोई उसका माशूक़ हो इसतरी

खफ़ा वो ही उस पर किसी के सबब । कुछ ऐसा निकलता है पोथी में अब

कि दुनिया में तो अम्र है आदी का ग़म । हुई कुछ ख़ुशी शाह को कुछ अलम

जो चाहे करे मेरा पर्वरदिगार ॥ कहा शाह ने इस पर नहीं एतबार

मुनज्जिम वहां से बरामद हुवे ॥ यह फ़रमा महल में दरामद हुवे ।

लगा मांगने हक़ से अपनी मुराद । ख़ुदा पर ज़िबस उसको था एतक़ाद

लगा आ के मसजिद में रखने दिया । ख़ुदा से लगा करने वह इल्तिजा

लगा देने इधर लव तो पाया चिराग़ ॥ निकाला मुरादों का आख़िर सुराग़

हुई कि फूल उम्मेद को बारबर ॥ सहाबे करम ने किया जो असर

रहा हम्ल इक ज़ौजये शाह को । इसी साल में यह तमाशा सुनो

मुबद्दल हुवे वह ख़ुशी साथ सब ॥ जो कुछ दिल पे गुज़रे थे रंजो तअब

दास्तान तवल्लुद होने शाहज़ादे बेनज़ीर की

कोई दिन में बजता है चंगो रबाब । ख़ुशी से पिला मुझको साक़ी शराब

कि इक नेक अख़्तर करे है तुलूअ । करूं नग़मये महनवी का शुरूअ

हुवा शाह के घर में तवल्लुद पिसर । गये नौ महीने जो उस पर गुज़र ॥

जिसे मेहरो मह देख शैदा हुवा । अजब साहिबे हुस्न पैदा हुवा ॥

उमैदें रखे थे नौबह आफ़ताब । नज़र को न हो हुस्न पर उसके ताब

रखा नाम उसका शाह बेनज़ीर । हुवा वह जो उस शक्ल से दिलपज़ीर

कई नज़रें गुज़रानियां और कहा । ख़वासों ने ख़्वाजः सराओं ने जा ।

कि पैदा हुवा वारिसे ताजो तख़्त । मुबारक तुझे ऐ शाहे नेक बख़्त ।

फ़लक मरतबत और फ़रीदे ज़मां । सिकन्दर नज़ाद और दारा हशम .

गुलामों के हैं उसके रक़ाबान चीं . रहे उसके अक़लीम ज़ेरे नगीं ।

किये फ़ाल सिजदे कि ऐ बे नयाज़ । यह सुनते ही मुज़्दः बिछा जानमाज़

सवारों को खोजों को जोड़े दिये
पियादे जो थे उनको घोड़े दिये ।

खुशी से किया थोनल का जो निसार
जिसे एक देना था बख़्शे हज़ार ।

किया भांड़ और भगतियों ने हुजूम
हुई आह आह मुबारक की धूम ।

तबाके वली चूंकि: पड़नी तमाम
कहां तक मैं लूं घरलकारों का नाम

जहां तक कि साज़िन्दे थे साज़ के
धनी दस्त के और आवाज़ के ।।

जहां तक कि थे गायकों के खुशकार
लगे गाने और नाचने थे के बार

लगे बजने कानून बीनो रबाब ।
वहां हर तरफ़ जूय इशरत का आब

लगी थाप तबलों की मिरदंग की
सदा ऊंची होने लगी चंग की ।।

कमांचों को सारंगियों को बना
खुशी से हर एक उनकी तरबें मिला

लगा मोमताने पे मुंह चंग के
मिला सुर तंबूरों के और रंग के

सितारों के परदे बना कर दुरुस्त
बजाने लगे सब वह चालाको चुस्त

गई थापें की आसमां तक धमक
उठा गुम्बदे चर्ख सारा धमक ।।

खुशी की ज़िब सहन अब थी बिसात
लगे नाचने उसपे अहले निशात

कनारी के जोड़े चमकते हुवे ।।
वह पाओं के घुंघरू झनकते हुवे

वह बाले चमकते हुवे कान में
फड़कना वह नथुने का हर आन में

वह घटना वह बढ़ना अदाओं के साथ
दिखाना वह रख रख के छाती पे: हाथ

कभी दिल को पावों से मल डालना
नज़र से कभी देखना भालना ।।

दिखाना कभी अपनी छबि मुस्करा
कभी अपनी अंगिया को लेना छिपा

किसी के चमकते हुवे नौ रतन
किसी के वह मुखड़े पे नथ का फबन

वह दांतों की मिस्सी वह गुल का तर
शफ़क़ में आया जैसे शामो सहर

वह गरमी थी चेहरे की जो आफ़ताब
जिसे देख कर दिल को हो इज़्तराब

चमकना गुलों का सफ़ा के सबब
वह गरदन के डोरे क़यामत ग़ज़ब

कभी मुंह के तईं फेर लेना उधर ।।
कभी चोरी चोरी से करना नज़र

दुपट्टे को करना कभी मुँह के ओट
कि परदे में हो जाय दिल लोट पोट ।

हर इक ताल में उनको अरमान यह
कि दिल लीजिये तान की जान यह

कोई फ़न में संगीत के शोल अरू
कम योग लस्मी लिये पर मलू ॥

कोई देसगति हो में पायों तले ॥
खड़ी आप्सरों के दिलों को मले ।

कोई दादरे में बजा कर परन ॥
कोई टप्पे में जता अपना फ़न

ग़रज़ हर तरह दिल को लेना उन्हें
नई तरह से दाग़ देना उन्हें ॥

कभी मार ठोकर करें क़त्ल आम
कभी हाथ उठा लेवें गेसों पे थाम

कहीं धुरपद औ गीत का शोरो गुल
कहीं कौलो कलबान औ नक़्शो गुल

कहीं भांड़ और लूलियों का समां
कहीं नांच कंचनियों का वहां ॥

मजीरा पखावज गले डाल ढोल
बजाते थे डूमजा खड़े बांधे ग़ोल ॥

महल में जो देखा तो इक इज़्दहाम
मुबारक सलामत की थी धूम धाम

परी पैकरों का हर इक जा हुजूम
वहां भी पड़ी ऐशोइशरत की धूम

छठी तक ग़रज़ थी खुशी की ये बात
कि दिन ईद और रात थी शबबरात

बढ़े ज्यूंही चक्र में नू हिलाल ।
महल में लगा पलने वह नौनिहाल

बरस गांठ जिस साल उसकी हुई ।
दिले बस्तगां की गिरह खुल गई ॥

वह गुल जब कि चौथे बरस में लगा
बढ़ाया गया दूध उस माह का ॥

हुई थी जो कुछ पहिले शादी की धूम
उसी तरह से फिर हुवा वां हुजूम ॥

तवायफ़ वही और वही राग रंग
हुई बल्कि दूनी खुशी की तरंग ।

वह गुल पाउं से अपने जिस जा चला
वहां आंख को नरगिसों ने मला ॥

लगा फिरने वह सर्व जब पाउं पाउं
किये बुर्द आज़ाद तब उसके नाउं

दास्तान तय्यारी में बाग़ के

मये अरग़वानी पिला साक़िया
कि तामीर के बाग़ के दिल चला

हुवा एक से जिसके लालः को दाग़ । दिया एक ने तख़्तए बुस्तानः बाग़

लगे जिसमें ज़रबफ़्त के सायबान । दू दामन की ख़ूबी सों की वह शान

हरों पर खड़ी दस्त बस्तः बहार ॥ चिकें और परदे बंधे ज़रनिगार ।

कोई ज़ेर ह्रषै ख़ूबी से लटका हुवा कोई दूर से उस पे अटका हुवा ॥

किसू हद का बंधा जिसमें ताब नज़र वह मुक़्क़ैश की डोरियां सरबसर ।

निगह को वहां से गुज़रना मुहाल । चिकों का वह माशःसा आंखों का जाल

वह दीवार और दर की गुलकारियां सुनहरी मुनक़्क़श छतें सारियां ॥

गया चौगुना लुत्फ़ उसमें समा । दिये हर तरफ़ आइने जो लगा ॥

बड़े जिसके आगे न पाये हवस । वह मख़मल का फ़र्श उसका सुथरा कि बस

मुक़र्रर गिलासों में जिनसे हम फ़ाम रहें लब ब लब उसमें रोशन मुदाम

चमकता था इस तरह हर थान में छपरखट मुरस्सअ का दालान में

सितारे की जैसी फ़लक पर चमक ज़मीं पर थी इस तौर उसकी झमक

दिःसंदल का एक पारचा था अयां ज़मीं का करूं उसके क्या मैं बयां

गई चांद उसके पानी की लहर । बनी संग मरमर की चौपड़ की नहर

कुछ एक दूर दूर उससे सेवो बिही । क़रीने से गिर्द उसके सर्व सही ॥

लगा के हैं नाक वां सब परस्त ॥ कहूं क्या मैं कैफ़ीयते दारो बस्त ।

चमन सारे आदाब और डहडहे ॥ हवा ये बहारी से गुल लहलहे ॥

रविशों पर जवाहिर लगा जैसे संग ज़मुर्रद के मानिन्द सबज़े का रंग ।

गुले अशरफ़ी ने किया ज़र निसार रविशों की सफ़ाई पे बेइख़्तियार

कहीं नरगिसो गुल कहीं यासमन चमन से भरा बाग़ गुल से चमन ॥

कहीं रायबेल और कहीं मोगरा चंबेली कहीं और कहीं मोतिया

मदनबान को और कहीं आन बान खड़े शाख़ शाख़ पे हज़ारों निशान

जुदा अपनी मौसम में सबकी बहार कहीं अरग़वां और कहीं लालःज़ार

कहीं नाफ़री और गेंदा कहीं
अजब चांदनी में गुलों की बहार
खड़े सर्व की तरह चंपे के झाड़ ॥
कहीं ज़र्द नसरीं कहीं नसतरन।

समा आब को दाऊदियों का कहीं
हुए थे कि गुल सफ़ेदों से महताबवार
कहे तू कि खुशबूइयों के पहाड़
अजब रंग पर ज़ाफ़रानी चमन ॥

तसवीर बाग़ मय मकान
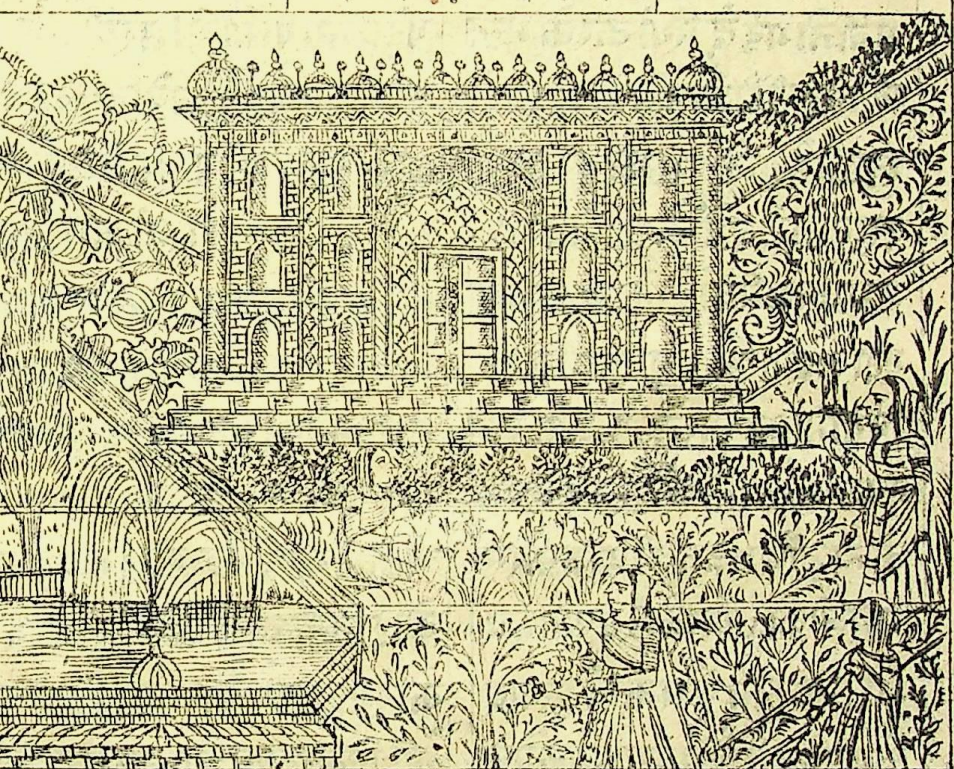
पड़े आबजू हर तरफ को बहे ॥
गुलों का लबे नहर पर झूमना
वह झुक झुक के गिरना खयाबान पर
लिये हाथ में बेलचे मालिनें ॥
कहीं तुख्म पाशी कहीं गोड़ कर
खड़े आबदस्ता हाथ में निहाल

कहीं कुमरियां सर्व पर चहचहे
उसी अपने आलम में मुंह चूमना
नशे का सा आलम गुलिस्तान पर
चमन को लगीं देखने भालने
धनी रीत भावें कहीं खोद कर।
कहीं हाथ में मस्त गर दल से डाल ॥

लबे नहर पे आईने में देख क़द	अकड़ना खड़े सर्व का गदनतद
ख़िरामाँ सबा सहन में चार सू ।।	दिमाग़ों को देती हर इक गुल की बू
खड़े नहर पर क़ाज़ और कुर्कुरे ।।	लिये साथ मुरग़ाबियों के परे ।।
सदा कुर्कुरों की बुतों का वह शोर	दरख़्तों पः बगले मुंडेरों पै मोर
चमन आनपी गुल से दहका हुवा	हवा के सबब बाग़ महका हुवा ।
सबा जो गई दे ग़िरीं कर के भूल	पड़े हर तरफ़ मौलसिरियों के फूल
वह केलों की और मौलसिरियों की छाउं	लगी नाय आखें लिये जिसका नाउं
खुशी से गुलों पर सदा बुलबुलें	तअ़श्शुक़ की आपुस में बातें करें
दरख़्तों ने बर्गों के खोल वरक़	कि लेनू तियाँ बोस्ताँ का सबक़
समाँ क़ुमरियों देख उस आन का	पढ़ें बाब पंजुम गुलिस्तान का ।।
ददा दाइयाँ और मुग़लानियाँ	फिरें हर तरफ़ उसमें जिलव: कुनाँ
ख़वासों का और लौंडियों का हुजूम	महल की वह चुहलें वह आपुस की धूम
तकल्लुफ़ के पहिने फिरें सब लिबास	रहें रात दिन शाहज़ादे के पास
कनीज़ाने महरू की हर तर्फ़ रेल	चंबेली कोई और कोई राय बेल
रंगीली कोई और कोई पूनम रूप	कोई चित्तलगन और कोई कामरूप
कोई केतकी और कोई गुलाब	कोई मह रतन और कोई माहताब
कोई सेवती और हँसमुख कोई	कोई दिल लगन और तनसुख कोई
इधर और उधर आतियाँ जातियाँ	फिरें अपने जोबन को दिखलातियाँ
कहीं अपने पट्टे सँवारे कोई	अरी और सीली पुकारे कोई ।।
कहीं चुटकियाँ और कहीं तालियाँ	कहीं क़हक़हे और कहीं गालियाँ
बजाती फिरे कोई अपने कड़े	कहीं वाह वाह और कहीं वा छड़े
दिखावे कोई गोखरू मोड़ मोड़	कहीं सुनबूरी कहीं तार तोड़ ।।
उदासे कोई बैठ हुक़्क़ा पिये ।।	दमे दोस्ती कोई भर भर जिये

कोई हौज़ में जा के गोता लगाय । कोई नहर पर पाऊँ बैठी हिलाय ।
कोई अपने तोते की लेवे ख़बर । कोई अपनी मैना पे रक्खे नज़र ।
किसी को कोई धौल मारे कहीं । कोई जान को अपने वारे कहीं ।
कोई आरसी अपनी आगे धरे । अदा से कहीं बैठि कंघी करे ।
मुक़ाबा कोई खोल मिस्सी लगाय । लबों पर धड़ी कोई अपने जमाय ।
हुवा उन गुलों से दुबाला समां । उसी बाग़ में था वह सर्वे रवां ॥
ग़रज़ लोग थे यह जो हर काम के । यह सब वास्ते उसके आराम के ।
पला जब वह इस नाज़ो न्यामत के साथ । पदर और मादर के शफ़क़त के साथ ।
हुई उसके मकतब की शादी यहां । हुवा फिर उन्हीं शादियों का समां ।
मुअल्लिम अतालीक़ मुनशी अदीब । हर इक फ़न के उस्ताद बैठे क़रीब ।
किया क़ायदे से शुरूअ कलाम ॥ पढ़ाने लगे इल्म उसको तमाम ।
दिया था ज़ि बस हक़ ने ज़हने रसा । कई साल में इल्म सब पढ़ चुका ।
मआनी वो मंतिक़ बयानो अदब । पढ़ा उसने मंक़ूल माक़ूल सब ।
ख़बरदार हिकमत के मज़मून से । ग़रज़ जो पढ़ा उसने क़ानून से ।
लगा हो ख़यालो हिन्दसा ता नजूम । ज़मीं आसमां में पड़ी उसकी धूम ।
किये इल्म नौ के ज़बां हर्फ़ हर्फ़ । इसी नहव से उसने की उम्र सर्फ़ ।
उतारिद को आने लगी उसकी रीस । हुवा साद: लौहों में वह ख़ुशनवीस ।
हुवा जब कि नव रुक़्त वह शीरीं रक़म । पढ़ा कर लिखे सात सैं नौ क़लम ।
लिया हाथ जब ख़ामए मुश्कबार । लिखा नस्ख़ वो रैहानो ख़त्ते ग़ुबार ।
अरूसुल ख़तूत और ख़ुल्सो रक़ाअ । ख़फ़ी और जली मिस्ल ख़त्ते शुआअ ।
शिकस्तः लिखा और तालीक़ जब । रहे देख हैरां अतालीक़ सब ॥
किया ख़त्म गुलज़ार से जब फ़राग़ । हुवा सफ़्हे क़त्अ गुलज़ार बाग़ ।
करूं इल्म उसका कहां तक बयां । कि है ख़ूब अब मुख़्तसिर यह बयां ।

लिया लौंडियों चिल्ले में सब फ़क़ीर
कमां के जो हर पै हुवा बे नज़ीर
किया जब कि नूद: यह नूपरां किया
सफ़ाई में सूफ़ार पैकां किया
किया अपने क़ब्ज़े में सब उसके फ़न
रखा कूटने ही में लकड़ी पै मन
उड़ाई कई हाथ में घाइयां ।।
हुई दस्त बाज़ू की सरमाइयां
किये क़ैद सब उसने हाथों में ताल
रखा मूस की पर जो कुछ कुछ ख़याल
रखे रंग सब उसके मद्दे नज़र ।।
तबीयत गई कुछ जो तसवीर पर
कि हैरां हुये देख अहले फ़िरंग
कई दिन में सीखा यह कस्बे तुफ़ंग
गुरबत की तो आदमीयत की चाल
सिवा इनके मालों के कितने कमाल
सदा कामिलों से है सुहबत उसे
रिज़ालों से नफ़रों से नफ़रत उसे
हो फ़न में सब अपने हुवा बेनज़ीर
गया नाम पर अपने वह दिल पिज़ीर

दास्तान सवारी की तैयारी के हुक्म में

जवानी पै आया है अय्याम गुल ।।
पिला साक़िया मुझको इक जाम मुल
कि गुल फ़स्ल रंगीं है दर बोस्तां ।।
ग़नीमत शुमार सुहबते दोस्तां
शिताबी से ले जो कुछ बो सके
समझ ले भलाई का गर हो सके
यहां चर्ख पर है खिज़ां नौ बहार
किसी चमन पर नहीं एतबार ।।
खुली गुल चढ़ी ग़म वो जंजाल की
पड़ी जब गिरह बारवें साल की
कि हो सुबह हाज़िर सभी ख़ासो आम
कहा शाह ने बुलवा नक़ीबों को शाम
मुहैया करें जो कि दरकार हो ।।
सवारी तकल्लुफ़ से तैयार हो ।।
सवारी का हो लुत्फ़ जिससे दोचन्द
करें शाह को मिल के आईनः बन्द
कि निकलेगा कल्ह शह्र में बेनज़ीर
रऐयत के खुश हों सग़ीरो कबीर
नक़ीबों ने सुनकर ली अपनी राह
यह फ़रमा महल में गये बादशाह
गया सिजदये मुश्क में आफ़ताब
हुई शब लिया मह ने जामे शराब

खुशी में गई जल्द ग़फ़्लत जो गुज़र — हुई सामने से नुमायां सहर ।।
अजब शाद थी वहां सहर से पहर — ग़म ओ रंज था मिस्ल रोज़े उमेद ।।
गया मुज़्दे ले महरो माहताब । — उठा सुर्ख़ आंखों को मलता शिताब
कहा शाह ने अपने फ़रज़न्द को — कि बाबा नहा धोके तय्यार हो ।।

दास्तान हम्माम में नहाने को ले जाने में

पिला आज ग़ी आब पीरे मुग़ां ।। — कि भूले मुझे गर्मी सर्दे जहां ।।
अगर चाहता है मेरे दिल को चैन — न देखा वह साग़र जो हो कुल्लतैन
कदूरत मेरे दिल की धो साक़िया — ज़रा धो प्याले मय का धोया के ला
कि सरगर्म हम्माम है बेनज़ीर — गया है नहाने को बद्रे मुनीर
हुवा जब कि दाख़िल वह हम्माम में — अरक़ आ गया उसके अंदाम में
तने नाज़नीं नम हुवा उसका कुल — कि जिस तरह डूबे है शबनम में गुल
पसत्तार बांधे हुवे लुंगियां ।। ।। — मह ओ मेह से तास ले कर वहां ।।
लगे मलने उस गुलबदन का बदन — हुवा उड़ उड़ा आप से वह चमन
नहाने में यों थी बदन की दमक — बरसने में बिजली की जैसे चमक
सरों पर जो पानी पड़ा सर बसर — नज़र आये जैसे दो गुल बर्गे तर ।
हुवा क़तरा आब यों चश्म बोस — कहे तो पड़ी जैसे नरगिस पे ओस
लगा होने ज़ाहिर जो ऐ नाज़ हुस्न — टपकने लगा उससे अंदाज़ हुस्न
गया हौज़ में जब वह शाह बेनज़ीर — पड़ा आब में अक्स से माहे मुनीर
वह गोरा बदन और बाल उसके तर — कहे तू कि सावन की शामो सहर
नमी से था बालों का आलम अजब — न देखी कोई ख़ूब तर उससे शब
कहूं उसकी ख़ूबी की क्या तुझ से बात — कि ज्यूं भीगती जाय सुहबत में रात
ज़मीं पर था इक मौज ये नूरे बेज़ — हुवा जब वह फ़व्वारः सा आबरेज़

ज़मुर्रद की ले हाथ में संग या।
किया ख़ादिमों ने जो आहंग या
हंसा खिलखिला वह गुले नौबहार
लिया खेंच पावों के वह रिख़्तयार
अजब आलम उस नाज़नीं पर हुवा
असर गुदगुदी का जबीं पर हुवा।
हंसा उस अदा से कि सब हंस पड़े।
हुवे जो से कुर्बान छोटे बड़े ॥ ।
दुआयें लगे देने वे ह रिख़्तयार
कहा ख़ुश रखे तुझ को परवरदिगार
कि तेरी ख़ुशी से है सब की ख़ुशी
मुबारक तुझे रोज़ो शब की ख़ुशी
न आवे कभी तेरे ख़ातिर पै मैल
चमकता रहे यह फ़लक का सुहैल
किया गुस्ल जब इस लताफ़त के सा
उड़ारे खिलायें उसे हाथों हाथ
नहा धो के निकला वह गुल इस तरह
कि बदली से निकले है मह जिस तरह
ग़रज़ शाहज़ादे को नहला धुला
दिया ख़िलअते ख़ुसरवानः पिन्हा
जवाहिर सरासर पिन्हाया उसे
जवाहिर का दरिया बनाया उसे
कड़े कंगन और कलग़ी और नवरतन
किया ऐक सेर का ज़ेवे बदन ॥
मुरस्सा का सरपेच जो मोजे आब
मुनव्वर व पुर्ले रुख़ आफ़ताब
वह मोती के बाले बसद ज़ेबो ज़ीं
कहें जिसको आराम जां दिल का चैं
जवाहिर का तन पर सुमन था ग़ुरूर
कि इक इक अदद उसका था कोहनूर
ग़रज़ हो के इस तरह आरास्तः
ख़िरामां हुवा सर्व नौ रास्तः
निकल घर से जिस दम हुवा वह सवार
किये ख़्वान गौहर के उस पर निसार
ज़ि बस था सवारी का बाहम हुजूम
हुवा जब कि डंका पड़ी सब में धूम
बराबर बराबर खड़े थे सवार ॥
हज़ारों ही थी हाथियों की क़तार
सुनहरी रुपहली वह अम्मारियां
शबो रोज़ की सी तरहदारियां
चमकते हुवे बादले के निशान
सवारों के गट और बानों की शान
हज़ारों ही अतराफ़ में पालकी
झलाबोर की जगमगी नालकी
कहारों की ज़रबफ़्त की कुरतियां
और उनके दबे पावों की फुरतियां

तसवीर सवारी शाहज़ादे बेनज़ीर जानिब बाग़

बंधीं कलग़ियाँ ताजों की सिर ऊपर
वह हाथों में सोने के मोटे कड़े ॥
वह मक़्क़ैश मानिन्द वह सब्ज़े रवाँ
वह शहनाइयों की सदा खुशनुमा
वह आहिस्तः घोड़ों प: नक़्क़ारची
बजाते हुवे शादियाने तमाम ॥

चकाचौंद में जिस से आवे नज़र ॥
झलक जिसकी हर हर क़दम पर पड़े
वह नौबत का दूलह का जैसे समा
सुहानी वह नौबत की आवे सदा
क़दम बा क़दम बा लिबासे ज़री
चले आगे आगे भले शादकाम

सवार और पियादः सग़ीरो कबीर जिलौ में तमामी अमीरो वज़ीर ।
वह नज़्ज़ारे कि जिस जिसने थी ठानियां पहले शाहज़ादे को गुज़रानियां ।
हुवे हुक्म से शाह के फिर सवार चले सब क़रीने से बांधे क़तार
सजे और सजाये स भी ख़ासो आम तिलाओ जरी में मुलब्बिस तमाम
तुरक़ के तुरक़ और परे के परे ।। कुछ ई धर उधर कुछ वो कुछ परे
मुरस्सा के साज़ों से बोतल समन्द कि ख़ूबी ने रह्हुल क़ुदस से दोचन्द
वह फ़ीलों की और मेगडंबर की शान झलकते वह मुहों के साइबान
चलै पाइये तख़्त के हो क़रीब । बदस्तूर शाहाना नपती नरीब ।
सवारी के आगे पये अज़्दिहाम लिये सोने रूपे के आसे तमाम
नकीब और जिलौदार और चोबदार पर आपुस में कह कहके थे हरदम पुकार
उसी अपने मामूलो दस्तूर से अदब से तफ़ावत से और दूर से
चलाने जवानों बढ़े जाइयो ।। हो ज़ानिब से बागें लिये आइयो
बढ़े जायं आगे से चलते क़दम । बढ़ेऊ मरो दौलत क़दम बा क़दम
ग़रज़ इस तरह से सवारी चली । कहै तू कि बादे बहारी चली
तमाशाइयों का हुवा था हुजूम कि हर तरफ़ थी तारअ आलम की धूम
लगा क़िलअ से शहर की हद तलक दुकानों पः थी बादले की झलक
मढ़े थे तमामी से दीवारो दर ।। तमामी था वह शहर सोने का घर
किया था ग़रज़ शाह आइनः बन्द हुवा चौक का तुरफ़ः बाज़ार चन्द
रअय्यत की कसरत हुजूमे सिपाह गुज़रती थी रुक रुक के हरजा निगाह
हुवे जमअ कोठों पः जो मर्दो ज़न हर इक सत्ह था ज्यूं ज़मीने चमन
पे वालिद की सुन क़ुदरते कामिलः तमाशे को निकली तने हामिलः
तमाशे के ताज़गी से नहीं फ़ तमाशे को निकले वज़ीओ शरीफ़
वह रू पोश थीं तो तलक के ख़लल पड़े आशियानों से अपने निकल

न पहुंचा जो यक मुर्ग़ क़िबलः नुमा
ग़रज़बस शाहज़ादा बहुत था हसीन
नज़र जिस को आया वह माहे तमाम
दुआ शाह को दी कि बारे इलाह ॥
यह ख़ुश अपने मह से रहे शहरयार
ग़रज़ शाह से वो हर इक सिम्त को
घड़ी चार तक ख़ूबसी सैर कर
उसी कसरते फ़ौज से हो सवार ॥
सवारी को पहुंचा गई फ़ौज उधर
जहां तक कि थी ख़ादिमाने महल
क़दम अपने कूनों से बाहर निकाल
बलायें लगीं लेने सब एक बार ॥
गया जब महल में वह सर्वे रवां ॥
पहर रात तक पहिने पोशाक वह
क़ज़ारा वह शब थी शबे चारदह ॥
नज़ारे से था उसके दिल को सरूर ॥
अजब लुत्फ़ था सैर महताब का
हुआ शाहज़ादे का दिल बेक़रार ॥
कुछ आई जो उस मह के जी में तरंग
ख़वासों ने जा शाह से अर्ज़ की ॥
इरादा है कोठे पे आराम का ॥
कहा शाह ने अब तो गये दिन निकल
पर इतना है उससे ख़बरदार हो ॥

सो वह आशियाने में तड़पा किया
हुये देख आशिक़ कहीं नो महीन
किया उसने झुक झुक के उसको सलाम
सदा यह सलामत रहे मेहरो माह
कि रौशन रहे शहर परवरदिगार
कोई बाग़ था शाह का उसमें से हो ।
ग़रज़ सब को दिखला के अपना पिसर
फिरा घर की तरफ़ वह शहरयार ॥
गये अपने मंज़िल में शम्सो क़मर
ख़ुशी से वह ड्योढ़ी तक आई निकल
लिया सबने आगे से बाहाल हाल
किया जी को एक दस्त सबने निसार
बंधा नाच और राग का वां समां ।
रहा शाम सब के तरब नाक वह ।
पड़ा तिलवाने ता शाह तर्फ़ मह ॥
अजब आलम नूर का था ज़हूर ॥
वह दिलकश था या सीमाब का
यह सेरी ने वां चांदनी की बहार ॥
कहा आन कोठे पे बिछे पलंग ।
कि शाहज़ादे की आज यों है ख़ुशी
कि साया है आलम तले बाम का
अगर यों है मरज़ी तो क्या है ख़लल
जिन्हों की हो चौकी वह बेदार हो

लबे बाम पर जब वह सोये सनम
तुम्हारा मेरा बोल बाला रहे ॥
कहा न बुज़ुर्गों ने हक़ से उम्मेद।
फिरी हुक्म लेवां से फिर शाह का ॥
क़ज़ारा वह दिन था उसी साल का
सख़ुन मौलवी का यह सच है क़दीम
पड़े अपने अपने जो सब ऐश बीच
वह जाना कि योंही रहेगा यह दौर
कि इसने वफ़ा की नहीं है तरंग ॥
फिरा बादये ऐश दर जाम ऐसा
न दारी न अज़ुबाने सैंग रहा ॥

करें सूरये नूर को उस पे दम ॥
यह इस घर का क़ायम उजाला रहे
यही है कि हम भी रहें सर सफ़ेद ॥
बिछौना वहीं जा किया माह का
ग़लत वह्म माज़ी में था हाल था ॥
कि आगे क़ज़ा के हो अहमक़ हकीम
न समझे ज़माने के कुछ ऊंच नीच
न देखा कुछ ऐ इस ज़माने के तौर ॥
यह गिरगिट बदलता है हर दम में रंग
कि तर फ़र्क़ से सुबह आन सदसमरोज़
कि आरज़ जिधर का हुआ निरवाकी नहर

दास्तान शाहज़ादे के कोठे पर सोने की और परी के उड़ा ले जाने की ॥

शिताबी से उठा कि ये सी भला ॥
बिलोरी गुलाबी में दे भर के जाम
न जानी कहां थी कहां फिर यह सिन
अगर सैके देने में कुछ देर है ॥
वह सोने का जोया जड़ाऊ पलंग
सरासर थे उसके ज़रीबाफ़ के ॥
सिरीं चादर उसपे शबनम की साफ़
कि सेज उसपे बसने वह धुले धाके ॥
भरे उसपे तकिये नरम नरम ॥

कि चारों तरफ़ माह है जिल्वागर
कि आया बलंदी पे माहे तमाम ॥
मसल है कि है चांदनी चार दिन
तो फिर जानियो यहां कि अंधेर है
किसी भी जवां को हो जिस पर उमंग
कि थे एक आईने से साफ़ के
कि हो चांदनी जिस सफ़ा का ग़िलाफ़
कि झब्बों में थे जिसके मोती लगे
कि मख़मल को हो जिसके देखे से शर्म

कहां तक कोई उनकी ख़ूबी को पाय
जिसे देख आंखों को आराम आय
वह गुलशन कि थे उसके जो पेशगाह
कि हर वजह थी उनको ख़ूबी में राह
कभी नींद में न कि होता था वह
तो फ़ुरसत से उस पे सोता था वह
छिपाये से होता न हुस्न उसका मांद
दिये थे लगा उसके मुखड़े को चांद
हुई दोनों के हुस्न की एक जोत
कि जैसे हों दो शम्मों के एक सोत
ग़रज़ बस नींद में था जो वह हो रहा
बिछौने पे आते ही बस सो रहा
वह सोया जो इस आन से बेनज़ीर
रहा पास बाक़ी उसका बद्रे मुनीर
हुआ उसके सोने पे आशिक़ जो माह
लगा दी ऊपर उसने अपनी निगाह
वह मह उसके कोठे का हाला हुआ
ग़रज़ वां का आलम दो बाला हुआ
वह फूलों की ख़ुशबू वह सुथरा पलंग
जवानी की नींद और वह सोने का रंग
जहां तक कि चौकी के थे बारी दार
हवा जो चली सो गये एक बार॥
ग़रज़ सब को वां आलमे ख़्वाब था
मगर जागता एक महताब था
क़ज़ा का हुआ इक परी का गुज़र॥
पड़ी शाहज़ादे पे उसकी नज़र
भबूका सा देखा जो उसका बदन
जला आतिशे इश्क़ से उसका तन
हुई जान जी से फ़िदा उस पर निसार।
वह तख़्त अपना लाई हवा से उतार
जो देखा तो आलम अजब है यहां
मुनव्वर है सारा ज़मीं आसमां।
दुपट्टे को उस मह के मुंह से उठा॥
दिया गाल से गाल अपना मिला
अगरचे हुई थी ज़ियादा हवस॥
व लेकिन हया ने कहा उसको बस
मये इश्क़ में फिर यह सूझी तरंग
कि ले चलिये इसका अमानत पलंग
मुहब्बत की आई जो दिल में हवा
वहां से उसे ले उड़ी दिलरुबा॥
हुआ जब ज़मीं से वह ग़ाली बुलन्द
हवा में सितारा सा चमका दो चंद
ग़ुबारे मह में वह यों ज़मीं से उठा॥
चले गौर जिस तरह से तोशा खा।
जले रश्क से उसके शम्-ओ-चिराग़
कि उस मह का पहुंचा फ़लक पर दिमाग़

उड़ाकर वह उसको परिस्तान में ॥ ग़रज़ ले गई आन की आन में ॥

ज़माने की जैसी है पस्तो बलंद ॥ कभी ख़ुश है दिल और कभी दर्दमंद

तसवीर उड़ा ले जाने परी की शाहज़ादे को ॥

दास्तान हालत तबाह करने मां बाप की शाह-ज़ादे के गायब होने से

कि यह हाल सुनकर हुआ दिल कबाब
पिलाना ही मुझे साक़िया दे शराब

ज़रा अब सुनो ग़मज़दों का बयां
यहां का तो क़िस्सा मैं छोड़ा यहां

कि गुज़रा जुदाई से क्या उनपे ग़म
कहूं हाल हिजरां ज़दों का रक़म

जो देखा कि वह शाहज़ादा नहीं
खुली आंख जो एक की वां कहीं

नहै वह पलंग और न वह माहरू — न वह गुल है उसका न वह उसकी बू
रहे देख यह हाल हैरान कार ॥ — कि यह क्या हुवा हाय परवरदिगार
कोई देख यह हाल रोने लगी ॥ — कोई ग़म से जी अपना खोने लगी
कोई बलबलाई सी फिरने लगी ॥ — कोई ज़ोफ़ खा खा के गिरने लगी
कोई सिर पे रख हाथ दिलगीर हो — गई बैठ मानन्द तसवीर हो ॥
कोई हाथ के नेरे जनन खड़ी ॥ — रही नरगिस आसा खड़ी की खड़ी
रही कोई उंगली को दांतों में दाब — किसी ने कहा घर हुवा यह ख़राब
किसी ने दिये खोल संबुल से बाल — तमांचों से जो गुल किये सुर्ख़ गाल
न बन आई कुछ उनको इसके सिवा — कि कहिये यह अहवाल अब शाह से जा
सुनी शाह ने अलक़िस्सा जब यह ख़बर — गिरा ख़ाक पर कह के हाये पिसर
कलेजा पकड़ मां तो बस रह गई ॥ — कली की तरह से कि कस रह गई
हुवा गुम जो यूसुफ़ पड़ी यह जो धूम — किया ख़ादिमों ने महल में हजूम ।
कहा शाह ने वां का मुझे दो पता — अज़ीज़ो जहां से वह यूसुफ़ गया ॥
गई ले वह शाह को लबे बाम पर ॥ — दिखाया कि सोया था वह सीमबर
यही थी जगह वह जहां से गया ॥ — कहा हाय बेटा तु यां से गया ॥
मेरे नौजवां मैं कहां जाऊं पीर ॥ — नज़र तू ने मुझ पर न की बेनज़ीर
अजब बहर ग़म में डिबोया मुझे ॥ — ग़रज़ जान से तू ने खोया मुझे ॥
करूं इस क़यामत का क्या मैं बयां — तलक़्क़ी में हरदम था शोरे फ़िगां
लबे बाम क़यामत जो यकसर हुई — तले की ज़मीं सारी ऊपर हुई ॥
शब आई थी वह जिस तरह से न कटी — रही थी जो बाक़ी वह रोते कटी ॥
अजब तरह की शब थी है हाल वह — क़यामत का दिन था न थी रात वह
सहर ने किया जब गरेबान चाक । — उड़ाने लगे मिल के सब सिर पे ख़ाक
उठा शहर में हर तरफ़ शोरो गुल । — कि ग़ायब हुवा इस चमन से वह गुल

ग़मो दर्द से दिल जो सबका भरा | हुवा बाग़ सारा वह मातम सरा ॥
गया जब कि वह सर्व उस बाग़ से ॥ | नज़र फूल आने लगे दाग़ से ॥
अकड़ना गये सर्व सब अपना भूल | उड़ाने लगीं कुमरियां सिर पे धूल
सदा अब जो कोई उन्हों की सुने ॥ | सो कू कू से उनके जिगर तक भुने
हुवे रुख़ से भुक और ज़र्द सारे निहाल | समर लग के पावों हुवे पायमाल
न रोने से बुलबुल का जी हट गया । | गुलों का जिगर दर्द से फट गया
न बस सुम्बुल गया हिज्र से गुंचा भूल | हुवा ग़म से अज़ बस लहू पीके फूल
उड़ा नूर नरगिस की आंखों का सब | हुवे बाल संबुल के मातम के ख़ाब
लबे जू के उड़ने लगी गिर्द गर्द ॥ | गुले अशरफ़ी का हुवा रंग ज़र्द ॥
लगी आग लाले के दिल को तमाम | दिया ख़ाक में फेंक इशरत का जाम
यह मातम उस बाग़ में बस कि सख़्त | हुवे नख़्ल मातम तमामी दरख़्त
गिरे ग़म से अंगूर मदहोश हो ॥ | पड़े सारे साये सियह पोश हो ॥
लगे थे जो पत्ते दरख़्तों के साथ ॥ | वह हिल हिल के मलते थे आपुस में हाथ
वह लबरेज़ जो नहरें थीं जा ब जा ॥ | सो आंखों की वह रह गईं डबडबा
उछलते थे फ़व्वारे जो उसके वां | गया सब निकल उनका ताबो तवां
सिरह पर जो कुछ अपूक थे भड़ गये | ग़रज़ रोते रोते गढ़े पर गये ॥ ॥
हुवा हाल चश्मों का यां तक तबाह | किया रख़्त पानी ने अपना सियाह
कहां वह कुवें और कहां आबशार | कोई दिल में रोती कोई ढाढ़ मार
जो चालों का आलम न वह कुरकुरे | न वह आबजू थे न सब्ज़े हरे ॥
जहां कूक करते थे ताऊस बाग़ ॥ | लगे बोलने हा मुंडेरों पे ज़ाग़ ॥
सुहानी वह छायें जो दिलचस्प थीं | सो क्या हो कि अब दिल लगे वां नहीं
मुनक़्क़श जहां थे वह रंगीं मकां ॥ | हुवे सब वह ज्यों दीदये ख़ूंचकां ॥
गुलों की तरह खिल रहे थे जो दिल | सो वह सब ख़िज़ां से हुवे मुज़महिल

ख़िज़ां का अलम दिल में जो आ गड़ा । जिगर बर्गे गुल की तरह झड़ पड़ा
न गुंचा न गुल ने गुलिस्तां रहा । फ़क़त दिल में इक ख़ार हिजरां रहा
अज़ीज़ों ने देखा जो अहवाल शाह । कि होती है अब इसकी हालत तबाह
कहा गो जुदाई गवारा नहीं ।। वले लेकिन ख़ुदाई से चारा नहीं ।।
नहीं ख़ूब इतना तुम्हें इज़्तिराब ।। नसीबों से शायद मिले वह शिताब
ख़ुदा जाने अब इसमें क्या भेद है ।। यह कहते हैं जीने की उम्मेद है
ख़ुदा की ख़ुदाई तो मामूर है ।। ग़रज़ उसके नज़दीक क्या दूर है ।।
नहीं एक सूरत पे कोई मुदाम ।। उसी की ग़रज़ ज़ात को है क़याम
यह कह और शह को बिठा तख़्त पर । वह रंजूर रहने लगे यक दिगर
लुटाया बहुत बाप ने मालो ज़र ।। व लेकिन न पाई कुछ उसकी ख़बर

दास्तान परिस्तान में ले जाने की

मुझे दे के मैं खोज उसका बता ।। ज़रा ख़िज़्र रह हो तू ही साक़िया
न पाई कहीं यां जो उस गुल की बू । करूं अब परिस्तान में जुस्तजू
उड़ी जो परी वां से लेकर उसे ।। उतारा परिस्तां के अंदर उसे ।।
वहां एक था सैर का उसके बाग़ । कि जिसके गुलों से हो ताज़ा दिमाग़
सिवा होने गुल उसमें अनवाअ के । तिलिस्मात कुल उसमें अनवाअ के
तिलिस्मात के सारे दीवारो दर ।। न यां कैसे कोठे न यां कैसे घर
मुतल्ला मुनक़्क़श मुशब्बक तमाम । यह क्या हो जो हो धूप का उसमें नाम
गिरे छनके वां इस लताफ़त से धूप । कि ज़र्दी का जो ज़ाफ़रां पर हो रूप
न अर्मान का ख़तरा न बारिश का डर । न सर्दी न गर्मी का उसमें ख़तर
हरे और भरे सब गुलों से मकां ।। जहां चाहिये जा के रख दे वहां ।।
दरख़्शां दर हर सक़्फ़ दालान की । हो दीवार जैसी चिराग़ान की ।।

ज़मीं व्हां की सारी जवाहिर निगार
अधड़ में चमन और हवा में बहार
किसी को हो जिस चीज़ का इश्तियाक़
नज़र आवे वह चीज़ बालाए ताक़
जवाहिर के जौं रूह वह आब ओ नूर
ख़िरामां फिरें सब्ज़ा में दूर दूर ॥
फिरें दिन में सारे वह हैवान हो ॥
करें रात को काम इनसान हो ॥
लगे हर तरफ़ गौहरे शबचिराग़
कहीं दिन को गौहर कहीं आब सिराग़
बना ये हुए लाल बाहम निहाल ॥
गुलो गुंचा सब व्हां के पुर अज़ ख़याल
सदा आप से आप घड़ियाल की
कहीं नाद की और कहीं नाल की
रहे व्हां वे हुनरों का ज़ोर खुला
वो दुनिया के बाजों की आवे सदा
अगर बन्द कर दीजिये एक बार
तो जों अरग़नूं राग निकलें हज़ार
मकानों में मख़मल का फ़र्शो फ़रूश
बसख़ुने सुलेमानी उन पर नक़ूश
तिलिस्मात के पर्दे और चिलवनें
इरादे पे दिल के उठें और गिरें ॥
ख़वासें परीज़ाद उसमें तमाम ॥
फिरें गिर्द गिर्द उस परी के मुदाम
सरे नहर बंगला मुरस्सा निगार ॥
सरापा बरंगे गुहर आबदार ॥
रखा शाहज़ादी का उसमें पलंग
खुला हुस्न से उसके बंगले का रंग
क़ज़ारा खुली आंख उस गुल की जो
न पाई वहां शह की अपनी बू ॥
न वह लोग देखे न वह अपनी जा ॥
न अजूबे से इक कह के तकता रहा
अचंभे का यह ख़्वाब देखा जो व्हां
लगा कहने यारब मैं आया कहां
ग़ज़बनाक वह लड़का सहमा भी कुछ
हुआ कुछ दिलेर और हैरां भी कुछ
सिरहाने जो देखी मह चारदह ॥ ॥
कि है अजनबी सी वह इक ख़ूबरू मह
कहा कौन है तू यह किसका है घर
ले आया मुझे कौन घर से इधर
फिरा मुंह को ले और उधर से नक़ाब
दिया उस परी ने यह हंस कर जवाब
ख़ुदा जाने तू कौन मैं कौन हूं ॥
मुझे भी तअज्जुब है मैं क्या कहूं
पर अब ख़ुद तू आया है यां मेरे घर
ले आई है तुझ को क़ज़ा वो क़दर

यह घर जो कि मेरा है तेरा नहीं ।।
पर अब घर यह तेरा है मेरा नहीं ।।

तेरे इश्क़ ने मुझ को पैदा किया
तेरा ग़म मेरे दिल में पैदा किया ।।

कुड़ा वार तेरा तुझ से शाहरो दियार
यह बन्दी ही लाई है तक़सीर वार ।।

परी हूं मैं और वह परिस्तान है ।।
यहां सब यह क़ौमें बनी जान है ।।

कहां सूरतें जिन कहां शक्ल इन्स
ग़रज़ कह रहे मुहबते ग़ैर जिन्स

परी को हुई शादी उस मह को ग़म
प नाचार क्या कर सके वह सनम

कभी रो भी है गर्दिशे रोज़गार
कि माशूक़ आशिक़ के हों इख़्तियार

ग़रज़ दिल को जो तो लगाया वहां
कहा उसने जो कुछ कहा उसको हां

वलेकिन न अक़्लो न होशो हवास
रहे वह परियों की तरह वह उदास ।।

कभी अश्क आंखों में भर लाय वह
कभी सांस ले कर कहे हाय वह ।।

वह महलों की कुहलें वह घर का समां
रहे रूबरू ध्यान में हर ज़मां ।।

वह अपना वतन जो मां बाप की याद आय
तो रातों को रो रो के दरया बहाय ।।

कभी अपनी तन्हाई का ग़म करे ।।
कभी अपने ऊपर दुआ दम करे ।।

करे याद जब अपना नाज़ो नअम ।।
फ़िग़ां ज़ेर लब वह करे दम बदम ।।

बहाने से दिन रात सोया करे ।।
न हो जब कोई तब वह रोया करे ।।

ग़रज़ इस तरह उसको हर हाल में
कि जों मुर्ग़ तड़पे नया जाल में ।।

ग़रज़ माहरुख़ उस परी का था नाम
पिदर से किया था यह पोशीदा काम

कभी घर में रहती कभी रहती व्हां
कि ता राज़ उसका न होवे अयां ।।

वह परियों में अज़बस कि थी जी शऊर
नई चीज़ लाती थी उसके हुज़ूर ।।

अजायब ग़रायब परिस्तान के ।।
दिखाती थी हर शब उसे आन के ।

नये खाने और मेवे अक़्साम के
मुहय्या सब असबाब आराम के ।

नई किश्तियां रोज़ पोशाक की
ख़ुशामद सदा जान ग़मनाक की ।।

नये स्वांग व्हां के नये शोख़ रंग ।।
कि ता दिल लगी और न हो जी व तंग

शराबों के शीशे चुने ताक़ में ।।
गज़क वह कि निकले न आफ़ाक़ में

शराबो कबाबो बहारो निगार
जवानी वो मस्ती वो बोसो कनार

नथा और कुछ ग़म तो उसको वहां
बग़ैर अज़ ग़मे दूरये दोस्तां ।। ।।

उसी ग़म में घुल घुल के मरता था वह
सदा शाम ओ सह आह करता था वह

परी वह जो थी दिल लगाये हुये ।।
वह बैठी थी उसको उड़ाये हुये ।।

वह थी नाज़नीं भी बहुत अ़क़्लमंद
न खुलने से कुछ उसके होती थी बंद

कहा एक दिन उसने ऐ बेनज़ीर ।।
तेरे दाम में तू हुवा है असीर ।।

तु एक काम कर एक पहर फिर कहीं
किया कर टुक एक सैर रूये ज़मीं ।।

तु रुक रुक के दिल को न कर अपने बंद
न पहुंचे कहीं तेरे दिल को गज़ंद ।।

मेरे शाम जाती हूं मैं बाप पास ।।
अकेला तु रहता है इस जा उदास ।।

यह घोड़ा मैं देती हूं कल का तुझे
वलेकिन ये दे तू मुचल्का मुझे

कि गर शहर की तर्फ़ जावे कहीं ।।
न या दिल किसी से लगावे कहीं

तो फिर हाल हो जो गुनहगार का
वही हाल हो तुझ से दिलदार का

कहा क्यों कि मैं तुम को जाऊंगा भूल
मुझे जो कहा तुमने सब है क़बूल

कहा माहरुख़ ने कि ये तेरे बर तू ।।
कि बरवपा तू मैं मैं तुलेमाका नर तू

जो उतरे तो कल उसकी यों जोड़ियो
जो बर अक्स चाहे तो यों मोड़ियो ।।

ज़मीं से लगा और ता आसमां ।।
जहां चाहियो जाइयो तू वहां ।।

दास्तान घोड़े की तारीफ़ में

कहूं क्या मैं उस अस्प की ख़ूबियां ।।
परिंदों में हो कब यह महबूबियां

ग़रज़ कल को मोड़े फ़लक पर हुवा
जो कुछ हिये तो कहये उसे बाद पा।

न खावे न पीवे न सोवे कभी ।।
न रावे न बीमार होवे कभी ।।

वह पारी न कमरी न शबकोर वह ।।
न वह कुदना संग और न मुंह ज़ोर वह

वह हौज़ों का वह मोतियों का खलल
नये पानी ऊपर सितारे का बल
न था दिन न था गिर न भौंरों का डर
हर एक ऐब से वह ग़रज़ बेख़तर
वह घोड़ा और उस कल की थी बरख़्श का
फ़लक सैर था नाम उस रख़्श का
से प्राम वह बेनज़ीरे जहां ।।
उसी रख़्श पर होके ज़ीनत कुनां
हर एक तर्फ़ से हो गुज़रता था वह
वहीं इक पहर सैर करता था वह ।।
पहर जब कि बजता तो फिरता शिताब
कि फिर क़स्र था माहरुख़ का इताब

दास्तान वारिद होने में बेनज़ीर के बाग़ में बद्रे मुनीर के

किधर है तो ए साक़िये गुलरंग
कि आया हूं मैं बैठे बैठे बतंग ।।
पिला मुझको दारू कोई तुर्शो तुंद
कि होता चला है मेरा ज़ेहन कुंद
मेरे तौसने तबअ को पर लगा ।।
मुझे ख़्वाब से ले चल फ़लक पर उड़ा
सुनो एक दिन की यह तुम वारदात
उठा सैर को बेनज़ीर एक रात ।।
हुवा नागहां उसका इक जा गुज़र
सुहाना सा इक बाग़ आया नज़र
सफ़ेद एक देखी इमारत बलंद ।।
कि थी नूर में चांदनी से दो चंद ।।
वह छिटकी हुई चांदनी जा बजा
वह जाड़े की आमद वह ठंडी हवा ।।
वह निखरा फ़लक और महका ज़हूर
लगा शाम से सुबह के वक़्त नूर
यह आलम जो भाया तो कोठे पै आ
उतर अपने घोड़े से और सिर झुका
लगा झांकने उसमकां के तईं ।।
कि देखूं तो यां कोई है या नहीं
जो देखा तो ऐसा कुछ आया नज़र
कि सब कुछ गया उसके जी से उतर
कहा जी से अब तो जो कुछ हो सो हो
ज़रा चलके इस सैर को देख लो ।।
यह कह जीने उतरा दबे पाउं वह ।।
नज़र से बचाये हुवे ठाउं वह ।।
अलग तो लहाओं से ढांके किवाड़
चला [illegible] दरख़्तों की आड़
थे एक जा गुंजान बाहम दरख़्त ।।
छिपाते थे जो मिल के मह [illegible]

लगा उसे छिप छिप के करने नज़र
जो देखी तो सुहबत अजब है वहां
अजब सूरतें और नूर का महल
मिली जिन्स की अपने जो उसको बू
नज़र आई वां चांदनी की बहार
दरो बाम इक लख़्त सारे सफ़ेद ॥
सुग़र्रक़ ज़मीं पर तमामी का फ़र्श
ज़मीं का तबक़ आसमां का तबक़
बिलोरी धरे हर तरफ़ संग फ़र्श ॥

दरख़्तों से जो माह हो जिल्वागर
अजब चांदनी है अजब है समा ॥
चला देखते ही दिल उसका निकल
लगा तकने हैरत से हर एक का मूं ॥
कि आंखों ने भी खो दिया इख़्तियार
हर इक ताक़ मेहराब सूरत उमेद
झलक जिसकी ले फ़र्श से ता बफ़र्श
सुनहरे रुपहले हों जैसे वरक़ ॥
कि जिससे मुनव्वर रहे रंग फ़र्श

तसवीर इमारत वो बाग़

गई उसके आलम पे जिस दम निगाह । और आई नज़र उसमें इक एक माह
तरह उसकी ही दिल की मानूस थी । कि गोया वह शीशे को फ़ानूस थी
कहूँ हैरत उसके तईं हो पसंद ।। परी को किया है मा शीशे में बंद ।।
हर इक सिम्त वां नूर का इज़दहाम । लगे आइने क़द्द आदम तमाम ।।
लपेटे हुये बादलों से दरख़्त ।। ज़मीं नो हवा माह बे गाजो नख़्त ।।
मुलब्बस वह चौपड़ की पाकीज़ा नहर । पड़े चश्मये माह से जिसमें लहर ।।
लबे नहर पर साफ़ जो गार की ।। जो पटरी थी वह एक बिलौर की
पड़े उसमें फ़व्वारे छुटते हुये ।। हुवा बीच मोती से लिपटे हुये ।।
मुक़र्रर पड़ा उसमें मुक़ैश था जो ।। गिरा माह चार आक से पुरज़े हो ।।
लिये गोद मुक़ैश था छोटे बड़े ।। हर इक जा सितारे उड़ावें खड़े ।।
ग़रज़ अपनी सूरत से तारों को तोड़ । ज़मीं को फ़लक का बनाया था जोड़
हवा में वह जुगनू से चमकें बहम ।। मलें जिलवये मह को ज़ेरे क़दम ।।
फ़क़त चांदनी में कहां तौर यह ।। कि तुर्रा नज़र तक मिले और यह
ज़माना ज़र अफ़्शां हुवा ज़र फ़िशां । ज़मीं से लगा तासमा ज़र फ़िशां ।।
गुलो मुचाज़री थे ताज़ो ख़रूस ।। ज़मीं ने चमन सब ज़बीने अरूस ।।
ख़िरामां ज़री पोश था हर माह वश ।। करें देखकर मेह्रो मह जिनको ग़श
खड़ा एक नम गीरये ज़र निगार ।। कि थे जिसके झालर पे मोती निसार
जड़ाऊ वह इस्तादे इल्मास के ।। ढले एक सांचे के एक रास के ।।
खिंचो डोरी हर तर्फ़ ज़रतार की ।। लड़ी जो किनारे के हों हार की ।
कहूँ क्या मैं झालर की उसकी फबन । कि सूरज की हो गिर्द जैसे किरन
मुग़र्रक़ बिछी मसनद इक जगमगी । यह थी चांदनी जिसके क़द में लगी
न फूले समाते थे तकिये धरे ।। कि थे वह फ़क़त तहुल्ल ही से भरे ।।
बिलोरी सुराही वह जामे बिलूर ।। दिले शीशा बक़ा के तमाशाए नूर ।।

जिधर देखो ऊधर समा नूर का
ज़मीं नूर की आसमां नूर का ॥

जवानाने खुशरू के हरजा परे
चमन सो दरियाओं से भरे ॥

कि चूने के पानी में कतरे हों जो
सितारों का महताब में हाल यों

मेहे वह भी जो सायये महरो माह
अगर कीजिये साय इन पर निगाह

नमूद नूर आता नहीं कुछ नज़र
करे है निगह जिस तरफ़ को गुज़र

हर इक आइने में वही माहताब
करूं कौन से फूल को इन्तख़ाब

उसी एक मह का है सब जा ज़हूर ॥
नज़र जिस तरफ़ जाये नज़दीको दूर ॥

वही नूर है जिस बग़र जा बजा ॥
निकल अपनी वहदत से कसरत में आ

वही कनज़ कुन्ता कि जिसकी किताब
लिये देख हर तरफ़ माहताब ॥

कि देखे वह इसके सिवा ग़ैर को ॥
हक़ीक़त को सोचिये सब भी है

दास्तान तारीफ़ बद्रमुनीर और आशिक़ होना बेनज़ीर का

मह चारदह को दिखा कर बिलाल ॥
गुलाबी मेरे सामने साक़िया ॥

नज़र का मकर आय नज़दीको दूर
कि देखे जिसके हो दिल को सरूर

कि है बाद हुस्बो तिमननी का बयां
करूं उस मका के मकीं का बयां

वहां देखो इक मसनद आरास्ता
वह मसनद जो थी मौज नरवा मुनम्म

लिहाफ़ मसनद सी और साहेब जमाल
अरस पर रक्खे एक कासिन दो शाल

सरे नहर बैठी थी अंदाज़ से ॥ ॥
दिये कुहनी तकिये पे इक नाज़ से

सितारों का हो माह पर इज़दहाम
खवासें खड़ी इधर ऊधर तमाम

कि जूं चांदनी पर लगाये हुये
वह वैरी थी सज धज बनाये हुये ॥

उधर यह ज़मीं पर मह चारदह ॥
उधर आसमां पर दरख़्शिन्दा मह

लगे लोटने चांद हर लहर में ॥
पड़ा अक्स दोनों का जो नहर में ॥

ज़माने के मुंह को लगे चार चांद
नज़र आये दूने जो इक बार चांद

अजब तरह का हुस्न था जां फ़िज़ा । कि मह रूबरू जिसके याचक रहा ।
करूं उसके पोशाक का क्या बयां । फ़क़त एक कमख़्वाब आबेरवां ।।
ज़िबस मोतियों की थी संजाफ़ गुल । कहे तू वह बैठी थी मोती में गुल ।।
और इक ओढ़नी जो हवा या हुबाब । जिसे देख शबनम को आवे हिजाब
सबाहत सफ़ा उसमें झलकी हुई ।। पड़ी सिर से कांधे पे ढलकी हुई ।।
गरेबां में तकमा इक इलमास का । सितारा सा महताब के पास का ।।
वह कुरती वह अंगिया जवाहिर निगार । नया बाग़ और इक ख़िज़ां की बहार ।।
झलक पायजामे की दामन से यों ।। कि रौशन हो फ़ानूस में शमअ ज्यों
सफ़ाई पे पोशाक की देख यों ।। नज़र सोच में है कि मैली न हो ।।
वह तरकीब और चांद सा वह बदन । वह बाज़ू पे ढलके हुये नौरतन ।।
जड़ाऊ वह बाले कि हाले को रश्क । वह मोती के माले कि आफ़ाक़ का अश्क
वह आंखों की मस्ती वह मिज़गां की नोक । करनफूल की धूम वह बाले की झोंक
वह मोती का इक लड़ा वह मोती का हार । सदा अश्क ग़मदीदा जिसपर निसार
लगा धुकधुकी पचलड़ा सतलड़ा ।। सरासर गले हुस्न उसके पड़ा ।।
जड़ाऊ छमकनी वह चंपाकली ।। इसे जिससे इलमास को बेकली ।।
गले उसके मोती लगे गिर्द कुल ।। कि जों शबनम आलूदा होवे गुल
जहांगीरियों का करूं क्या बयां ।। कि उठती थी हाथों से जिसके फ़िगां
जवाहिर से सोने की हैकल जड़ी ।। नज़र और कुरती के नीचे पड़ी ।।
छड़े कुछ मोतियों की पड़ी पायज़ेब । कि जिसके क़दम से मुहर पायज़ेब ।।
किसी के कहां हाथ वह पांउ आय ।। जवाहिर जहां पांउ पड़ पड़ के जाय ।।
सरापा अगर हो ज़बां मेरा तन ।। सरापा में उसके करूं क्या सख़ुन ।।
सब आज़ा बदन के मुवाफ़िक़ दुरुस्त । हर इक काम में अपने चालाको चुस्त
जहां जैसी चाहिये रास्ती ।। कजी जिस जगह चाहिये वां कजी ।

वह मुखड़ा कि जिसे देख मह दाग़ खाय वह नक़्शा कि तसवीर को हैरत आय
जो कुछ चाहिये ठीक नख सिख से अंग नज़ाकत भरा सेवती का सा रंग ।।
कुछ एक कमसिनी और कुछ बाँकपन ग़ज़ब हर तरह में अनोखी फबन ।।
करिश्मा अदा ग़मज़ा ज़ाहिर आन में ।। ग़रज़ दिलबरी उसके फ़रमान में
तग़ाफ़ुल हया नाज़ इश्वा ग़रूर हर इक अपने मौक़े पे वही ज़रूर
तबस्सुम तकल्लुम तरह्हुम सितम मुवाफ़िक़ हर इक हौसले के करम
वह अबरू कि मेहराब ऐवान हुस्न झुकी शाख़ नख़्ले गुलिस्तान हुस्न
निगह आफ़ते चश्म ऐसे बला मज़ा दे सफ़ों को उलट बर मला ।।
दुरे गोश जब उसका ताबिंदा हो सदफ़ का दिले साफ़ शर्मिंदा हो
वह बीनी कि जिसकी नहीं कुछ नज़ीर है अंगुश्त क़ुदरत की सीधी लकीर
वह रुख़सार नाज़ुक कि हो जाय लाल अगर उसपे बोसे का गुज़रे ख़याल
नहीं रुख़ वो या बिस का यह कुछ हिसाब बयाज़े गुलू सबके सब इन्तख़ाब
वह साअ़द वह बाज़ू भरे गोल गोल बराबर हो इक लाल से जिसका मोल
वह दस्ते हिना बस्ता ख़ूबी का बाब शफ़क़ में हो चूँ पंजये आफ़ताब
ज़िबस भी भरा आईना था उसका तन कहे तू कि थी नाफ़ अक्स ज़क़न ।।
कमर को कहूँ क्यों कि मैं उसके हेच । न आवे नज़र सौ है क़िस्मत का पेच
वह ज़ानू कि आ जाय गर उस पे हाथ ।। है उम्र भर हाथ ज़ानू के साथ ।।
वह साक़े बिलूरी वह अंदाज़ पा ।। फिरे हर सहर चश्मो दिल में सदा
क़दे क़ामत आफ़त का टुकड़ा तमाम क़यामत करे जिसको झुक कर सलाम
वह अठखेलियाँ और वह उसकी चाल कि दिल जिससे आलम का हो पायमाल
कहाँ कब्क कैसी ही गो चाल लाय कहाँ पर वह रफ़्तार को उसके पाय
अलम चाल उसकी कोई क्या चले यह अंदाज़ सब उसके पावों तले ।।
[illegible]नब पुश्ते पा आफ़ अंगुश्त पा ।। कफ़े पा दिखावे से पुश्ते पा

सुर्ख़ के जवाहिर से इक क़ुफ़्ल नक़्श
न वह कुफ़ल था बल्कि था कुफ़्ल-ए-नक़्श

यह क़ुदरत का देखा जो उसने ख़याल
कहा शाहज़ादे ने या ज़ुलजलाल ॥

दरख़्तों से वह देखता था निहां ॥
किसी की नज़र जा पड़ी नागहां

जो देखे तो है इक जवाने हसीं ॥
दरख़्तों की है ओट में मह जबीं ।

यह चरचा जो फैला तो ज़ाहिर हुआ ।
हर इक हाल से उसके माहिर हुआ

ये सुन एक से एक यां सबके सब ॥
फिरें बर्गे गुल की तरह गुंचा लब ॥

जो देखें तो शोला सा रौशन है कुछ
दरख़्तों का रौशन सा [illegible] गन है कुछ

किसी ने कहा कुछ न कुछ है बला
किसी ने कहा चांद है यां छिपा

किसी ने कहा है परी या कि जिन ॥
किसी ने कहा है क़यामत का दिन

लगी कहने माथा कोई अपना कूट
सितारा पड़ा है फ़लक पर से टूट ॥

हुई सुबह शब का गया उठ हिजाब
दरख़्तों में निकला है यह आफ़ताब

किसी ने कहा देखयो ऐं बुवा ॥
खड़ा है कोई साफ़ यह मर्दुवा ॥

किसीने कहा यह तो दिलदार है ॥
किसी ने कहा कुछ यह इसरार है

यह आपुस में बातें जो होने लगीं ॥
इशारों से घातें जो होने लगीं ॥

गई बात यह शाहज़ादी के गोश
यह सुनते ही जाता रहा उसका होश

कहा मैं तो देखूं यह कहकर उठी ॥
गया सनसना जी तो रह कर उठी ॥

ख़वासों के कांधे पै धर अपना हाथ
अजब इक अदा से चली साथ साथ

कुछ इक ज़ोफ़ से होल खाती हुई ॥
धड़क अपने दिल की मिटाती हुई ॥

कई हमदमें थीं जो कुछ कुछ पढ़ीं ॥
दुआयें वह पढ़ पढ़ के आगे बढ़ीं

गई जब वह करके दिल अपना कड़ा
वहां जिस जगह थे वह बाहम दरख़्त

जो देखे तो है इक जवाने हसीं ॥
खड़ा है वह आईना सा मह जबीं ॥

सरकने की वां से न जागह न ठाउं ॥
दिये हैरत इश्क़ ने गाड़ पाउं ॥

बरस पंदरह या कि सोलह का सिन
मुरादों की रातें जवानी के दिन ॥

नई पुश्त लब से मिसी की नमूद । जिसे देख तोता हो चर्खे कबूद ।।
गले में पड़ा तीमा ग्रबनम का एक । बदन से अयाँ नूर आलम का एक ।।
तमामी को संजाफ़ ज़िलबा कुजाँ । कि चूं अ़क्स मह ज़ेब आवे रवाँ ।।
तरहदार इक सिर पे फेटा सजा । तमामी का पटका कमर से बंधा
अजब पेच से पेच बैठे थे मिल ।। कि हर पेच पर पेच खाता था दिल
जवाहिर का तकमा गले में लगा ।। सितारा हो जों सुबह का जग मगा
वह मोती का लटकन ज़मुर्रद को हर । लटक जिस की ज़ेबिंदा दस्तार पर
वह मेरा बदन साफ़ तरकीब वार । भरे डंड पर तो रतन की बहार ।।
इक इलमास की हाथ में अंगुश्तरी । सरासर हिनादस्तो पा में लगी ।।
अयाँ चुस्ती चालाकी गात से ।। नमूदे जवानी हर इक बात से ।।
बदन आईना सा दमकता हुवा ।। गुले बाग़ खूबी लहकता हुवा ।।
अकड़ ज़ुल्फ़ की और काकुल का बल । जवानी की शाख और समा बा अहल
क़ियाफ़े से ज़ाहिर सरापा गुरूर ।। जबीं पर बरसता शुजाअ़त का नूर
वले इश्क़ की तेग़ खाये हुये । खड़ा दिल किसी पर लगाये हुये
यह आलम जो देखा तो ग़श कर गई । वह जिन ती कि आई थी सब भर गई ।
शिताबी से जा कर कहा वाँ का हाल । कि ऐ शाहज़ादी ये साहिब जमाल ।
अजब सैर है सैर महताब में ।। यह आलम तो देखा नहीं ख्वाब में
कहे से हमारे न मानोगी तुम ।। जो देखोगी आँखों तो जानोगी तुम
उठा पाय गुलगूँ को तल दी निगार । न जाये कहीं हाथ से यह बहार ।।
नहीं और कुछ तुम न कीजो हिरास । चली आवो तुम इन दरख्तों के पास
गई उस जगह जब वह बद्रे मुनीर ।। और उसने जो देखा शाहे बेनज़ीर ।
मगर देखते ही सब आपुस में मिल ।। नज़र से नज़र जी से जी दिल से दिल ।।
ग़रज़ बेनज़ीर और बद्रे मुनीर ।। गिरे दोनों आपुस में होकर असीर ।।

रही कुछ न तन मन की सुध बुध उसे | न कुछ अपने तन की रही सुध उसे
थी हमराज़क उसके दुख़्ते वज़ीर | निहायत हसीं और क़यामत शरीर
ज़िबस थी सितारे से वह दिलरुबा ॥ | उसे लोग कहते थे नजमुन्निसा
शिताबी से ला उसने छिड़का गुलाब | तब आई तनों में ज़रा आबो ताब ॥
वह उठते तो उट्ठी पे हैरान सी ॥ | गुले शबनम आलूदा गिरयान सी
वह शहज़ादये दिल शुदः सो ठिठक | वहीं रह गया नक़्शे पासा झिझक
कि वह नाज़नीं कुछ झिजक मुंह छिपा | कमर और चोटी का आलम दिखा
चली उसके आगे से मुंह मोड़ कर ॥ | वहीं नीमबिस्मिल उसे छोड़ कर
वह गुद्दी वह शाने वह पतले कमर | वह चोटी का कोने पे आना नज़र

दास्तान ज़ुल्फ़ और चोटी की तारीफ़ में ॥

पिला साक़िया साग़रे मुश्क बू ॥ | कि है मुझको दरपेश तारीफ़े मू ।
सरे शाम से है यहां तक शराब ॥ | कि मस्ती में देखूं रुखे आफ़ताब
करूं उसके बालों का क्या मैं बयां | न देखा किसी रात में यह समां
वह ज़ुल्फ़ें कि दिल जिसमें उलझा रहे | उलझने से जी जिसके सुलझा रहे
वह कंघी वह चोटी खिंची साफ़ साफ़ | किनारी का पीछे चमकना मुबाफ़
कहूं उसकी चोटी का क्या रंग ढंग ॥ | कि जों आख़िरी शब हो शमा के का रंग
नुमायां थी यों ओढ़नी से झलक ॥ | कि जों अब्र में बर्क़ की हो चमक ॥
मुबाफ़े ज़री ने किया है ग़ज़ब ॥ ॥ | दिया है गिरह दिन को दुंबाले शब
सिंगारों में वह सबसे है गो उतार ॥ | यह कहते हैं चोटी का उसको सिंगार
न हो क्यों कि चोटी का रुतबा बड़ा | कि इक नूर है उसके पीछे पड़ा ॥
गुलो संबुल उस पर से क़ुर्बान हैं ॥ | कि उसकी लटक में अजब आन है
लड़ी थी ज़िबस सख़्त से उसके साथ ॥ | शबे रोज़ को देखा उसने गांठ ॥

वले हाथ आता है उसका कठिन
उलट कर न देखे उसे होशियार ।।
कहूं पीठ उसकी कि शफ़्फ़ाफ़ आईना सां
कहूं उसके आलम का क्या माजरा ।
भरी थी दिनों से ज़िबस उसकी मांग ।।
दिले आशिक़ उसपर से कुर्बान है ।।
कशाकश में था वरना जीना तो हेच ।।
ग़रज़ हुस्न का उसके है सब यह भेद ।।
करै सुर्ख़ जो कोई उसमें मुबाफ़ ।।
किया क़त्ल गो उसने दिल को तो क्या
कहां तक कहूं उसकी चोटी की बात
दिया तूर को गरचे हर बार तूल ।।।
बहुत मूशिगाफ़ी जो की मैंने यां ।।
तिस ऊपर जो पूरी न बैठी मिसाल
न इस पेच से बाहर आता हूं मैं ।।
ग़रज़ वह मुई जब दिखा अपने बाल
उतारे सब अपनी दिखानी चली ।।
ग़रज़ मुंह पे ज़ाहिर वले दिल में चाह
यह है कौन कमबख़्त आया यहां ।।
ग़रज़ कह तो हुई आन की आन में ।।
[illegible] से छोड़ परदा शिताब ।।
कि [illegible] वह क़ुदरते वज़ीर
मुझे चोचले तो ख़ुश आते नहीं ।।

कि है ज़िल्फ़ दूकी क़ज़ वह काले का मन
कि वह इक सितारा है दुंबाला दार
तिस ऊपर वह चोटी का पड़ना वहां ।।
कि जो होवे दरया पे काली घटा ।।
बहुत दिल लिये उसको कंघी ने मांग
कि मशशाता का सिर पे अहसान है
भले को रखा उसने ढीला है पेच ।।
तो चाहे करे वह सियाह हो सफ़ेद ।।
करै ख़ून दिल अपना उसको मुआफ़
शफ़क़ का नहीं काम पर ख़ूब हां ।।
कि थोड़ा है स्वांग और बड़ी है यह रात
वलेकिन यह हो अर्ज़ मेरी क़बूल
घटाने की जागह न थी दरमियां ।।
हुई है मेरी फ़िक्र मुझ पर वबाल
समां एक नाना दिखाता हूं मैं ।।
तो गोया कि मारा मुहब्बत का जाल
छिपा मुंह को और मुसकराती चली
निहां आह आह और अयां वाह वाह
मैं अब छोड़ घर अपना जाऊं कहां
छिपी जाके अपने वह दालान में ।।
छिपा अब्र तारीक में आफ़ताब
लगी हंस के कहने कि बद्रे मुनीर ।।
तेरे नाज़ बेजा यह भाते नहीं ।।

मेरे तर्फ टुक देख तू हाय हाय ।। मसल है कि मन भावे मुड़िया हिलाय
किया है अगर तूने घायल उसे ।। तो मत छोड़ अब नीम बिस्मिल उसे
टुक एक दम उठा ज़िंदगानी का तू । मज़ा देख अपनी जवानी का तू ।।
मरे ऐश का नाम अब जोया कर । ग़मे दीनों दुनिया फ़रामोश कर ।।
यह हुस्नो जवानी यह जोशो ख़रोश ग़फ़ूरस्ल रज़ द तुसाग़र बिनोश ।।
कहां यह जवानी कहां यह बहार यह जोबन का आलम रहै यादगार
सदा ऐश दौरां दिखाता नहीं ।। गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं ।।
सभी ये तो दुनिया के हैं कारोबार बले हासिले उम्र है वस्ले यार ।।
ख़ुशा वह ज़माना कि दो एक जगह करै एक दिगर ज़िल वये मेहरो मह
कहां चाह वाले हैं यूसुफ़ अज़ीज़ ।। अरी बावली चाह में कर तमीज़ ।।
तेरे घर में आया है मेहमां ग़रीब ।। यह है वारदाते अजीबो ग़रीब ।।
शिताबी से मजलिस को तय्यार कर तु इस गुल से घर एक गुलज़ार कर
बुलाया कि याने गुल अन्दाम को निगह साथ गर्दिश में ला जाम को
शबोरोज़ पी मिल के जामे शराब ।। मह़ो मेह्र को एक से कर कबाब ।।
यह सुन सुन के वह नाज़नी मुसकरा लगी कहने अच्छा भलारी भला ।।
मैं समझी तेरा दिल गया है उधर ।। बहाने तु करती है क्यों मुझ पे धर ।।
लगी कहने हंस हंस के वह माहवश हुई थी उसे देख मैं तो ही ग़श ।।
तुम्ही ने तो छिड़काया मुझ पर गुलाब भला मेरी ख़ातिर बुला लो शिताब
यह आपुस में रमज़ों की बातें हुई ।। इशारों की बाहम जो घातें हुई ।।
बुला लाई जा उस जवां के तईं ।। किया मेज़बां मेहमां की तईं ।।
बुला एक मकां में बिठाया उसे महल का समा सब दिखाया उसे
फिर उस नाज़नीं ने पकड़ उसका हाथ लिया था है ला आख़िर उस गुल के साथ

दास्तान मुलाक़ात करना बद्रमुनीर का बेनज़ीर से

पिला साक़िया मुझको महताब रेख्ता
वह मिलके बैठे हैं दो एक मह॥
हरएक बुर्जरुके गुलिस्तां है आज
वज़ीर उसको लाकर बिठाया जो वां
वह बैठी अजब एक अंदाज़ से॥
मुंह अंचल से अपना छिपाये हुये
पसीना पसीना हुवा सब बदन॥
घड़ी दो तलक वह महो आफ़ताब
उन्हों के रुके बैठने से खफ़ा॥
गुलाबी कोला उसके आगे धरा
कहा शाहज़ादी को बैठी है क्या॥
ज़रा मेरी खातिर से हंस बोल तू।
मैं सदके तेरे तुझको मेरी क़सम॥
यह देख उसकी मिन्नत पियाला उठा
कहा बादा नोशी से हो जिसको ज़ौक़
कहा शाहज़ादे ने हंसकर के यों॥
ग़रज़ होके आपस में राज़ो नयाज़
फिर आख़िर को शाहज़ादे ने भी उठा
जब आपुस में चलने लगे जाम मुल
हुई एक दिगर फिर तो नफ़नी शुमाल
खुला बंद जिस दम दे गुफ़्त गू॥

मिले हैं नसीबों से यहां आय रे यार
क़िराने महो मेह्र है इस जगह॥
बहारे विसाले गरीबां है आज॥
न पूछ उस घड़ी की अदा का बयां॥
बदन को चुराये हुये नाज़ से॥
लजाये हुये शर्म खाये हुये॥
कि जों शाबनम आलूदा हो यासमन
रहे शर्म से पाय बन्दे हिजाब॥
हुई दिल में अपने वह नजमुन्निसा
पियाले को फिर जल्द उसने भरा॥
यह प्याला तो उस बुत के मुंह से लगा
लबे लाल शीरीं को टुक खोल तू।
कई साग़र उसको पिला दम बदम॥
उधर से फिरा मुंह को और मुसकुरा
पिये यह पियाला नहीं उसका शौक़
पियूं मैं किसी के निहोरे से क्यों॥
पिये दो पियाले बसद इमतियाज़
दिया साग़र उस मह के मुंह से लगा
मुंदे गुंचा सां दिल खिले मिस्ल गुल
लगे होने आपुस में क़ालो मक़ाल
लगाने लगे कोकन कही मू बमू॥

कही इश्क़ दासें जो गुज़री थी सब । जताया सब अपना हसब औ नसब
परी का भी अहवाल ज़ाहिर किया । छिपे राज़ से उसको माहिर किया
कहा एक पहर की है रुख़सत मुझे । ज़ियादा नहीं इससे फ़ुरसत मुझे ॥
यह सुन दिल ही दिल बीच खा पेचो ताब । दिया शाहज़ादी ने उसको जवाब ॥
मरो तुम परी पर वह तुम पर मरे ॥ बस अब तुम ज़रा मुझ से बैठो परे ॥
मैं इस तरह का दिल लगाती नहीं ॥ यह शिरकत तो बन्दी को भाती नहीं
अबस तुम से क्यों दिल लगावे कोई । भले चंगे दिल को जलावे कोई ॥ ॥
बहे शमअ सां क्यों कोई अश्क से । जले किस लिये आतशे रश्क से ।
यह सुन पांउ पर गिर पड़ा बेनज़ीर । कहा क्या करूं आह बद्रे मुनीर ॥
कोई लाख जी से हो मुझ पर फ़िदा । मैं तुझ पर फ़िदा हूं मुझे उससे क्या
कहा चल सिर अपना क़दम पर न धर । किसी के मुझे जी की क्या है ख़बर
यह रश्को कनाये जो होने लगे ॥ तो आपुस में हंस हंस के रोने लगे ।
रही दिल ही दिल में ग़रज़ दिल की बात । पहर भर गई इतने अरसे में रात ॥
ख़बर रात की सुन उठा बेनज़ीर । कहा अब मैं जाता हूं बद्रे मुनीर
अगर क़ैद से छूटने पाऊंगा ॥ तो फिर आज के वक़्त कल आऊंगा
यह मत समझियो हूं मैं आराम में । करूं क्या फंसा हूं अजब दाम में ॥
दिल इस जा से उठने को करता नहीं । कोई आप से जान मरता नहीं ॥
करम मुझ पे रखियो ज़रा मेरी जां । मैं दिल छोड़े जाता हूं अपना यहां
यह कह उस तरफ़ को रवाना हुवा । दिल इस तर्फ़ उस का दिवाना हुवा ॥
गया अपने मामूल से बेनज़ीर ॥ इधर का हुवा क़ैदी ऊधर असीर ।
परी साथ काटी वह जों तों की रात । उठा सुबुह मलता हुवा अपने हाथ
समा ख़्वाब का आंखों में छाया हुवा । मज़ा दिल में सारा समाया हुवा ॥
उठी जो कोई देख कर वस्ल ख़्वाब । न हो वस्ल और दिल को हो इज़्तराब

नई बात का लुत्फ़ पाना ग़ज़ब ॥ वह पहिले पहिल दिल लगाना ग़ज़ब

क़लक़ दिल पै यानी कि रोज़ कब मिले मुझसे शाम और दिल अफ़रोज़ कब

मुहब्बत में ज़ुल्फ़े सियह फ़ाम की लगा देखने राह फिर शाम की ।

वह दिन हिज्र का उस पै आफ़त हुआ उसे काटना दिन क़यामत हुआ ॥

इधर का तो अहवाल था इस तरह कहा मैंने कर मुख़्तसर जिस तरह

ज़रा अब सुनो तुम उधर का बयां हुआ तर्फ़ सानी का क्या हाल वां ।

वह शब उसको अंदोह ग़म में कटी पड़ी जो कटी सो अलम में कटी ॥

रही सूरत आंखों में जो यार की हुई याद में सुबह रुख़सार की ॥

कुछ उम्मेद दिल में कुछ एक जी को यास लबों पर हंसी लेक चेहरा उदास ॥

लगा उसको बातों में क़ुल निसां लगी कहने जी चाहता है मेरा ॥

कि अब आज कर खूब अपना सिंगार मुझे हुस्न की अपनी दिखला बहार

लगी कहने चलनी दिवानी न हो ॥ कोई चीज़ अपनी बिगानी न हो ॥

करूं किसके ख़ातिर मैं अपना सिंगार वह है कौन जिस को दिखाऊं बहार

ग़रज़ शाहज़ादी बहुत दूर थी ॥ वह शौक़ उसको यह लेकिन मंज़ूर थी

नहा धोके उस रोज़ ऐसी बनी ॥ कि दो दिन की सच मच हो जैसे बनी

वह मुखड़े का आलम वह कंघी का रंग शबे माह हो देख कर जिस को दंग

वह मिस्सी वह उसके लबे लाल फ़ाम मज़ा दे दिया रे वह रखड़ों की शाम

वह आंखों का आलम वह काजल ग़ज़ब कहे तू पड़ी नरगिसिस्तां में आब

सितम जिस पे सुरमे की तहरीर से । खिंची हाथ काफ़िर के शमशीर सी

लखौटा वह पानों का मिस्सी के साथ कि जो सामने अब शफ़क़ के हो हाथ

वह पिशवाज़ एक डांक की जगमगी सितारों की थी आंख जिस पर लगी

और एक ओढ़नी खाली मुक़ैश की पड़ी चांदनी सी मंह से पूरा की ॥

जो देखे वह अंगिया जवाहिर निगार फिरे मलता मलते हाथ बेइख़्तियार

वह बारीक कुरती मिसाले हवा
ज़िया मूबमू जिससे तन की सफ़ा

झलक सुर्ख़ नेफ़े की उभरी हुई
गुलाबी सी गिर्द एक तह दी हुई ।।

मुग़र्रक़ ज़री का वह ख़िलवार बंद
मुसल्लस से ताबिन्दगी में दो चंद ।।

पड़ी पाउं में कफ़्श ज़री निगार
सितारों की जिसकी ज़मीं पर बहार

लगा पास से वह नाज़नीं ताब फ़र्क़
सरापा जवाहिर के दरिया में ग़र्क़

गड़ी हुई वह नाक़ीब और वह बदन
वह पोशाक वो ज़ेवर की उसपर फबन

वह छब नख़्रो उसकी व नाज़ुक तनज़ाद
चमन नाज़ कुदरत में नख़्ले मुराद

भरी मांग मोती से जिलवा कुनां
नुमायां थी शब तीरा में कहकशां

वह माथे पे टीके की उसकी झलक
सहर चांद तारा की जैसी चमक ।।

हवस हो न देख उसके ज़ेवर को फिर
कहे तू कि टीका था सब उसके सिर

वह बाले की ताबिंदगी ज़ेरगोश
जिसे देख उड़ जायें बुल्बुल के होश

वह हीरे का नक़ मा बसद आबोताब
वह मुंह से गुले यासमन लये आफ़ताब

वह नक़ में पे चम्पा कली की फबन
कि सूरज के आगे हो जैसी किरन

वह छाती पे इल्मास की धुकधुकी
कहें आरसी मूरत की जिसपर झुकी

वह मोती के माले लटकते हुये
रहें दिल जहां सिर पटकते हुये

वह इल्मास की हैकल खुशनुमा
न सब्र रहे जिसका दिल से लगा

वह भुजबंद बाज़ू के और नौरतन
कि जो गुल से हो शाख़ ज़ेरे चमन ।।

वह पहुंची ज़मुर्रद की और दस्तबंद
नज़ाकत में थी शाख़ गुल से दो चंद

वह लालों की पाज़ेब आवेज़ादार
सदा अपुक ख़ूनी हो जिसपर निसार

वह मीने के पावों में छल्ले थे गुल ।।
कि आंखों से दिल उनपे खाते थे गुल

वह बालों की बू पर फुक मुसुके खुतन
वह डूबा हुवा इत्र में उसका तन ।।

ज़मीं से मुअत्तर हुवा ता फ़लक ।।
ज़माना गया उसकी बू से महक

किया इस तरह से जब उसने सिंगार
हुवे मेह्रो मह उसके मुंह पर निसार

फ़लक तक गई दुहन की उसके धूम
लिया हाथ में पथ्थरों ने अबना चूम

ख़वासों ने घर को दिया इन्तज़ाम ।।
तमामी के परदे लगाये तमाम ।।

बिछा फ़र्श और कर छपरखट को साफ़
मुसह्हरा का उस पर उढ़ा चार गिलाफ़

वह नरगिस के दस्ते जो आफ़ाक़ में
न निकलें सो लाकर चुने ताक़ में

वलायत के मेवे धरे हर तरफ़ ।।
कि लेजावे बू उनकी गुल पर शरफ़

धरे लख़लख़े ख़ास ऐवान में ।।
हवा होगई इतर दालान में ।। ।।

धरी क्यारियां इक तरफ़ बे शुमार
चुनी इक तरफ़ डालियों की क़तार

अचारो मुरब्बे धरे ख़ुशनुमा ।
वह बल्हूर के दालान में आ बना

छपरखट के पास एक मसनद बिछा
और उसपर तमामी के तकिये लगा

वंगेरें बना और रख पानदान ।।
क़रीने से उसमें धरे ढारो पान ।।

कई इतरदाने मुरस्सा धरे ।।
अनोखी गढ़न के कई चौघड़े ।।

सिरहने मुजल्लद धरी इक किताब
ज़हूरी नज़ीरी का कुल इन्तख़ाब

धरी इक बयाज़ और रश्के चमन ।।
पुर अज़ मीर सौदा व मीर हसन ।।

क़लमदान भी एक नज़ाकत भरा
क़रीने से ज़ेरे छपरखट धरा ।।

धरा इक तरफ़ गंजिफ़ा ख़ुश क़िमाश
धरी चौपड़ एक तरफ़ को ग़म तराश

बिछा एक चौकी पड़ा तोरा पोश
करें देख कर ग़श जिसे बादा नोश

सुराही वो साग़र शराबो कबाब ।।
धरा उसपे साक़ीने कर इन्तख़ाब

वले उसकी रक्खा छिपाये हुये ।।
कि छोटे नहीं मुंह लगाये हुये ।।

कहा ख़्वासापन को ख़बरदार कर
कि रखियो तो ख़ासे को तय्यार कर

यह सब कुछ हुवा जब कि आरास्ता
ख़िरामां हुवा सर्व नौ रास्ता ।।

सरे शाम ले हाथ में एक छड़ी ।।
वलेकिन छड़ी वह कि जुगनू जड़ी

रविश पर लगी फिरने इधर उधर ।।
कि छिप जाय सूरज उसे देख कर ।।

दास्तान बेनज़ीर के आने की और बाहम मुहब्बत करने की

पिला मुझको साक़ी शराबे विसाल कि अब हिज्र से तंग है मेरा हाल ॥
गई पता उसका था जो वह बेनज़ीर ॥ हुई शाम बारे तो छूटा असीर ॥
पर उसने भी इतना तकल्लुफ़ किया कि एक दिन में जोड़े को धानी रंगा
जमामों की संजाफ़ भी कर दुरुस्त बना जल्द जल्द और पहिन तंगो चुस्त
पहिन लालो याक़ूत के नौ रतन वह गुल इस तरह हो के रूहे चमन
फ़लक के सैर पर हो ख़िरामी सवार हुवा आसमां पर हुवा एक बार
इलाक़े के जो वारिद हुवा उस जगह कि जिस जा ख़िरामी थी वह रश्के मह
नज़र नाज़नीं की जो उसपर पड़ी हुई जादूगरों के आ झलखड़ी
किया छिप के आलम पे उसके जो ध्यां तो देखा अजब रंग से वह जवां ॥
कि धानी है जोड़ा गले में पड़ा ॥ छिपा सब्ज़े में चांद सा है खड़ा ॥
कहे तू कि अब चांदनी आन के निकाला है मुंह खेत से धान के ॥
वह हुस्न और वह पोशाक और वह शबाब ज़मुर्रद में जो जिल्वये आफ़ताब ॥
समा देख उस शोलये सब्ज़ का हुई और जलने की दूनी हवा ॥
ख़वास जो थी दम बख़ुद जान कर कहा एक महरम ने आन कर ॥
कि अब किस तरफ़ इनको ले जाइये जहां हुक्म हो जाके बिठलाइये ॥
कहा वह जो आरास्ता है मकां ॥ इधर से तो वां हो के ले जा वहां ॥
कहे के बमोजिब उठा कर नक़ाब छिपा उसको वां ला बिठा सा शिताब
वह बैठा जो ख़िलवत में आ बेनज़ीर और इधर से आई जो बद्रे मुनीर ॥
उसे देख उसने तो फिर ग़श किया लिबास और ज़ेवर से आरास्ता किया
ज़बस हौसिले ने तो तंगी सी की हया इश्क़ ने ख़ाना जंगी सी की ॥
पकड़ हाथ मसनद पे खींचा उसे मुहब्बत के रिश्ते से खींचा उसे ॥

लगी कहने है है मेरा छोड़ हाथ
यह गरमी है जिससे रहूं उसके साथ ।।

कहा हाय प्यारी जलाया मुझे ।।
रुखाई ने तेरे सताया मुझे ।।

अरे ज़ालिम इक दम तो तू बैठ जा ।
ज़रा मेरे पहलू से तकिया लगा ।।

तड़पता है कबसे पड़ा मेरा दिल ।
ज़रा खोल आग़ोश और मुझसे मिल

ग़रज़ आख़िरश बाद राज़ो नयाज़ ।।
वह मसनद पे बैठी बसद इम्तियाज़

हुवा फिर तो सहबा ओ गुलगूं का दौर
हुवे ऐसे ही और कुछ बांके तौर ।।

हुये जब वह बदमस्त दो माहरू
लगी उनमें होने अजब गुफ़्तगू ।।

कि दस्ते जो नरगिस के थे वां हज़ार
लगे ढांपने आंख बेइख़्तियार

ख़वासें जो थीं रूबरू हट गईं ।।
बहाने से हर काम के बट गईं ।।

ग़रज़ रफ़्ता रफ़्ता वह मदहोश हो
छपरखट पे लेटे हम आग़ोश हो

लिया खींच उन्होंने जो पर्दाए ख़्वाब
छिपे एक जा दो मह ओ आफ़ताब ।

लगी होने बेपरदा जो छेड़छाड़
दरे हुस्न के खुल गये दो किवाड़ .

लगे पीने बाहम शराबे विसाल
हुये नख़्ल उम्मेद से वह निहाल ।।

लबों से मिले लब दहन से दहन
दिलों से मिले दिल बदन से बदन ।।

लगी आंख से आंख ख़ुशहाल हो
गई हसरतें दिल की पामाल हो ।।

लगी जाके छाती जो छाती के साथ
चले नाज़ो ग़मज़े के आपुस में हाथ ।।

किसी की गई चोली आगे से चल
किसी की गई चीन सारी निकल

ग़मो दर्द दामन कशीदा हुये ।।
वह गुलनार सौदा रसीदा हुये ।।

उठ पीके बाहम शराबे उमेद ।।
कोई सुर्ख़रू और कोई रू सपेद ।।

छपरखट से बाहर रख अपना क़दम
निकल आये भरते मुहब्बत का दम

नशे से वह लज़्ज़त के बेहोश हो
गये बैठ मसनद पे ख़ामोश हो ।।

अरक़ में इधर ग़र्क़ वह मह जबीं
किये आंख नीचे उधर नाज़नीं ।।

यह बैठे थे ख़ुश होके बाहम दिगर
कि इतने में ऊधर से बाजा पहर ।।

पहर के वह बजते उठा बेनज़ीर | हुई ग़म की तसवीर बद्रे मुनीर ॥
न बोली न की बात ने कुछ कहा | न देखा उधर आंख अपनी उठा ॥
कहा मुझसे प्यारी न बेज़ार हो | फिर आऊंगा बोली कि मुख़तार हो ॥
रुख़सत उसके होने से वह नौजवां | गया तो चले मुंह पे आंसू रवां ॥
हुवे दिल जो दोनों के आपुस में बंद | लगे हिज्र से दिल पे आने गज़ंद
बंधा फिर तो मामूल उसका मुदाम | कि हर रोज़ आना उधर वक़्त शाम
पहर रात तक हंसना और बोलना | दो कुफ़्ल और इश्क़ को खोलना ॥
कभी हिज्र से उनको होना मलूल | कभी वस्ल में बैठना फूल फूल ॥

दास्तान ख़बर पाना माहरुख़ का ज़बानी देव के इ-श्क़ बेनज़ीर और बद्र मुनीर से और क़ैद करना बेनज़ीर को

पिला जल्द साक़ी मुझे भर के जाम | कि है चर्ख़ भी दरपये इन्तिक़ाम
वह दो दिल को इक जा बिठाता नहीं | किसी का इसे वस्ल भाता नहीं ॥
यह है दुश्मने वस्लो दिलसोज़े हिज्र | करे है ख़राबे वस्ल को रोज़े हिज्र ॥
जुदाई उन्हों की ख़ुश आई उसे ॥ | फिर इतनी भी सुहबत न भाई उसे
किसी देव ने दी परी को ख़बर ॥ | कि माशूक़ आशिक़ हुवा बेख़बर
यह सुनकर वह पोला भभूका हुई | लगी कहने है यह बला क्या हुई ॥
क़सम मुझको हज़रत सुलेमान की | हुई दुश्मन अब उसके मैं जान की
कहा देव से दे मुझे तो बता ॥ | कहां वह किसी बाग़ में था खड़ा
कोई नाज़नी सी थी एक उसके साथ | खड़ी थी दिये हाथ में उसके हाथ
कज़ारा उड़ा मैं जो होकर उधर ॥ | वह दोनों मुझे वां पड़े थे नज़र ॥
यह उड़ती सी उसको ख़बर सुन परी | कहा देखने पाऊं उसको ज़री ॥

तोबा जानूं कम्बख़्त उसे मौत हो
वह आवै तो आगे मेरे नाबकार
यही क़ौलो इक़रार था मेरे साथ।
हमारे बुज़ुर्गों ने सच है कहा॥
ग़ज़बनाक बैठी थी यह तो उधर
उसे देख ग़ुस्से में वह डर गया॥
वलासी वह देख उसके पीछे पड़ी
तुझे सैर को मैंने घोड़ा दिया॥
अलग हमसे यों रहना और छूटना

लगी है मेरी अब तो वह सौत हो
गरेबां को उसके करूं तार तार
भला उसका दामन है और मेरा हाथ
कि हैं आदमीज़ाद कुल्ल बेवफ़ा
कि इतने में आया वह सुर्ख़ क़मर
कहै तू कि जीते ही जी मर गया
कहा सुन तो ऐ मूज़िये मुर्दई॥
कि इस माल ज़ादी को मोड़ा दिया
यह ऊपर ही ऊपर मज़े लूटना॥

नसरी देव के गिरफ़्तार करने की बेनज़ीर को धमकी देने से

दिल उस नाज़नी का धड़कने लगा
जिगर टुकड़े हो कर फड़कने लगा

अंधेरे उजाले न निकला था जो ॥
हुवा और आ उस अंधेरे में वो ॥

निकलने की सूझी न वां उसको राह
हुवा उसकी आंखों में आलम सियाह

अंधेरे ने उसका किया दम ख़फ़ा
कि जों ले सियाही किसी को दबा

फ़िग़ां की बहुत और पुकारा बहुत
सिर अपने को हर तर्फ़ मारा बहुत

पुकारा वह जिस तिस को फ़रयाद कर
न पहुंचा कोई कारवां भी उधर

न मूनिस न ग़मख़्वार उसका कोई
न था जुज़ ख़ुदा यार उसका कोई

वही चाह तारीक उसका रफ़ीक़
वही संग सिर पर बजाये शफ़ीक़

हवा भी न वां जिससे दम साज़ हो
कुवें की सुनै कौन आवाज़ को

कुवां ही मुदाम उसका हमदम रहे
जो उससे सुने वह ही उससे कहे ॥

कुवां उसको पूछे वह पूछे उसे ॥
अंधेरे सिवा कुछ न सूझे उसे ॥

सियाही में जैसे हो काफ़िर का दिल
सक़ूबत में उससे जहन्नुम ख़िजल

न शब की सियाही न वां दिन का नूर
सदा ज़ुल्मते ग़म का उसका ज़हूर

ग़मो दर्दो उल्फ़त को ख़ा ख़ा जिये
लहू पानी अपना कुवें में पिये ॥

इस अंधेर को क्या लिखूं अब मैं आह
क़लम को निकलते हैं आंसू सियाह

न था वह कुवां था सितूने अलम
निशाने गुबे आफ़ते दर्दो ग़म ॥

करूं मुख़्तसिर तांसे इस ग़म की बात
लगा रहने उसमें वह आबे हयात ॥

नहीं मुख़्लसी सूझती अब उसे ॥
निकाले ख़ुदा देखिये कब उसे ॥

फंसा इस तरह से जो वह बेनज़ीर
पड़ी बेक़रारी में बद्रे मुनीर ॥ ॥

वह हम दो दिलों में जो होती है चाह ॥
जो होती है दिल के तईं दिल से राह

क़लक़ वां जो गुज़रा तो यां ग़म हुवा
रुका जी वहां यां ख़फ़ा दम हुवा

कई दिन न आया जो वह रश्के मह
नज़र से हुवा उसके आलम सियह

लगी कहने नज्मुन्निसा से बुवा ॥
ख़ुदा जाने उस शारुख़ पर क्या हुवा

कहा उसने वो तुमको सौदा है कुछ | वह माँ पूछे है उसको परवा है कुछ
ख़ुदा जाने किस शग़्ल में लग गया | कभी चिढ़ के इतना भी होता कि हां
वह रह रह के तुमको दिखाता है चाह | अबस आप को मत करो तुम तबाह
रुके जो कोई उससे रुक जाइये ॥ | झुके आपसे वह तो झुक जाइये
तग़ाफ़ुल भला कुछ निकाला करो | ज़रा आपको तुम संभाला करो
यह सुन चुप रही दिल में खा पेचो ताब | दिया कुछ न इस बात का फिर जवाब
गये इसपे जब दिन कई और भी ॥ | भड़कने लगे फिर तो कुछ तौर भी
दिवानी सी हरतरफ़ी फिरने लगी ॥ | दरख़्तों में जा जा के गिरने लगी
टहलने लगा जान में इज़्तिराब ॥ | लगी देखने वह ख़्याल आलूदा ख़्वाब
नये हिज्र का दिल में करने लगी ॥ | हुई [illegible] भरने लगी ॥
ख़फ़ा ज़िंदगानी से होने लगी ॥ | बहाने से आ जा के सोने लगी ॥
नये ग़म की शिद्दत से वह कांप कांप | अकेली लगी रोने मुंह ढांप ढांप ॥
न अगला सा हंसना न वह बोलना | न खाना न पीना न लब खोलना
जहाँ बैठना फिर न उठना उसे ॥ | मुहब्बत में दिन रात घुटना उसे ॥
कहा गर किसी ने कि बीबी चलो | तो उठना उसे कहिये कि हां जी चलो
जो पूछा किसी ने कि क्या हाल है | तो कहना यही है जो अहवाल है
किसी ने जो कुछ बात की बात की | जो दिन की जो पूछो कहो रात की
कहा गर किसी ने कि कुछ खाइये | कहा ख़ैर बेहतर है मंगवाइये ॥
किसी ने कहा सैर कीजे ज़रा ॥ | कहा सैर से दिल है मेरा भरा ॥
जो पानी पिलाना तो पीना उसे ॥ | ग़रज़ ग़ैर के हाथ जीना उसे ॥
न खाने की सुध और न पीने का होश | भरा दिल में उसके मुहब्बत का जोश
चमन पर न मायल न गुल पर नज़र | वही सामने सूरत आठों पहर ॥
न हरफ़ा उसी से सवालो जवाब | सदा रूबरू उसके ग़म की किताब

जो आ जाय कुछ ज़िक्र शेरो सुख़न	जो पढ़ना यह दो तीन शेरें हसन ।।

ग़ज़ल

यह क्या इश्क़ आफ़त उठाने लगा।	मेरे दिल को मुझसे छुड़ाने लगा ।।
मिला मेरे दिलबर को मुझसे खुल	नहीं तो मेरा दिल ठिकाने लगा ।।
गुनह चश्म ख़ूंबार का कुछ नहीं	मेरा दिल ही मुझको डुबाने लगा।
फ़लक ने तो इतना हंसाया न था	कि जिसके एवज़ यों रुलाने लगा।
नहीं मुझको दुश्मन से शिकवा हसन	मेरा दोस्त मुझको सताने लगा ।।
ग़ज़ल या रुबाई वो या कोई फ़र्द ।।	इसी ढब से पढ़ना कि हो जिसमें दर्द ।।
सो यह भी जो मज़कूर निकले कहीं	नहीं तो कुछ इसकी [illegible] नहीं
सबब यह कि दिल से तअल्लुक़ है सब	न हो दिल तो फिर बात भी है ग़ज़ब ।।
गया हो जब अपना ही जीउड़ा निकल	कहां की रुबाई कहां की ग़ज़ल ।।

दास्तान बद्रमुनीर के ग़मो अंदोह की और सेपा बाई के बुलाने में

गुलाबी में गुंचे के मुझको पिला ताब	पिला साक़िया केतकी की शराब ।।
पियाले में नरगिस के दे मेरी जां ।।	कि देखूं मैं कैफ़ीय्यते बोस्तां ।।
हिकायत करूं एक दिन की रक़म	कि दुनिया में तोअमहै शादी वो ग़म ।।
उठी सोते एक दिन वह रश्के परी ।।	ज़रा जाके देखो चमन की जरी ।।
मगर गुंचा सा कुछ खिले मेरा दिल	कि ग़म ने किया है निपट मुज़महिल ।।
ज़िबस गुल से आती थी बू यार की	हवा फिर हुई उसको गुलज़ार की ।।
फिर एक दिन हुवा यह कि मुंह हाथ धो	चली उठके दालान से सैर को ।।
ज़मुर्रुद का मोढ़ा चमन पर बिछा	वह बैठी अजब शान से दिलरुबा ।।

कि ज़ानू पे एक पाऊं को धर लिया
और एक पाऊं मोढे से लटका दिया

न पूछ उसके पाये निगारी का हाल
ज़बानें थीं ना वस्फ़ में जिसके लाल ॥

कफ़क और फ़िंदक़ से लाले को दाग़
न हो ऐसी कै फ़ोख्ते पाई बाग़ ॥

तिलाई कड़े और कफ़क का वह रंग
सुनहरी था फ़क जिस को हो देख दंग

जवाहिर के छल्ले भरे पोर पोर ॥
ज़री की रुकी जैसी मख़मल पे तोर

ग़ि बस सोती उठी थी वह नाज़नीं
पड़ी थी अजब ढब से चीं ने ज़बीं ॥

ख़ुमारी वह आंखें वह अंगड़ाइयां
वह जोबन के आलम की सरसाइयां

जवानी का मौसम शुरू ये बहार
वह सीने से उसके कुचों का उभार

न प्रेम में वह आहुस्त के बैठना ॥
वह छब तफ़्ती अपनी को देख ऐंठना

ख़वास एक हुक़्क़ा लिये थी खड़ी
कि लाले की पत्ती थी उसमें पड़ी ॥

वह चिलिम और हुक़्क़ा मुरस्सा का काम
मुग़र्रक ज़री का वह नैचा तमाम

बले एक उस पर पड़ा था जो पेच ॥
यह सब उसके आगे था गोया कि हेच

लबे नाज़ुक ऊपर वह मुंहनाल धर
निकाले थी पर्दे से टूटे जिगर ॥

इधर और उधर हर तरफ़ थी निगाह
किसी की कोई जैसे तकता हो राह

ख़वासें खड़ी उसके सब गिर्द पेश
जो थीं अपने उहदे पे हाज़िर हमेश ॥

कोई मोरछल ले कोई पीकदान ॥
कोई ले चंगेर और कोई हार पान ॥

रसीली छबीली बनी तंग चुस्त ॥
लिबास और ज़ेवर से हर एक दुरुस्त

खड़ी थीं वो आंखें किये बा अदब ॥
इसी शान से पर क़यामत ग़ज़ब ॥

वह आंखें कि करती थीं जी पर निगाह
उधर गुल में आते थे सब फूलोंकार

कई हमदम उस की जो थीं माहरू
बिछाये हुये कुरसियां रूबरू ॥

बराबर बराबर इधर और उधर ॥
वह गिर्द उसके बैठी थीं वाएक दिगर

समा उस घड़ी का कहूं क्या मैं आह
सितारों में था जेलवागर एक माह

अजब हुस्न था बाग़ में जिलवागर
कि हर गुल की थी उसके मुंह पर नज़र

चमन उस घड़ी बाग़ रे जोश था ॥
गुलो गुंचा जो था सो बेहोश था ॥
निकस आतर में थी वह डूबी हुई ॥
हुआ लाहिक़ एक गुल की खूबी हुई
मुअत्तर हुआ और गुल का दिमाग़
कि महका तमाम उसकी खुशबू से बाग़
पड़ा अक्स उसका जो तरफ़े चमन ॥
हुआ लाला गुल और गुल नस्तरन
दरख्तों पे उसके पड़ी जो झलक
ज़मुर्रद को दी और उसने चमक ॥
हुई उसके बैठे से गुलशन की ज़ेब
गया उड़ सबा का भी सब्रो शकेब
चमन ने जो उस गुल की देखी बहार
हुआ देख अपने गुलों को फ़िगार
गुलो गुंच वो लाला आपुस में मिल
लगे कहने इस बाग़ का है यह दिल
गई जी से बुलबुल के गुलशन की चाह
हुई सर्व की तरह क़ुमरी को आह ॥
हुई देखके आईना दीवारो दर ॥
वह माह सबके दिल में हुई जिलवागर
कि इतने में कुछ जी में जो आ गया
अदा से लगी कहने वह दिलरुबा
अरे है कोई या ज़रा जाइयो ॥
मेरी ऐशा बाई को ले आइयो ॥
अजब वक़्त है और अजब है समा
करे दो घड़ी आके मुजरा यहां ॥
ख़फ़ा हूं मेरा जी भी मशग़ूल हो
कोई दम तो दाग़े जिगर फूल हो
किसी तरह से दिल तो लगता नहीं
जले है जिगर दिल सुलगता नहीं ॥
यह सुनते ही दौड़ी गई एक निगार
लिया ऐशा बाई को उसने पुकार ॥
वह आने लगी काफ़िराना आन से
कि जाने लगा जी मुसलमान से ॥
अजब चाल से वह चली नाज़नीं
कि मस्ती में पाओं कहीं का कहीं ॥
वह खिलक़त की गर्मी वह जोबन घना
नशे में भभूका सा चेहरा बना ॥
लटें मुंह पे छूटी हुई बेक़रार ॥ ॥
कि बदली हो जों महके इधर उधर ॥
वह बिन पी के होंठों की मिस्सी ग़ज़ब
कि मुंह पर थी गोया क़यामत की शब
झमकता कानों में एक बाला पड़ा
कहे तू कि था महके हाला पड़ा
वह पेशवाज़ आई बदन पर से केहार
वह कमख्वाब के बंद कसी इज़ार

कमर की लचक और मटकनी वह चाल
बंधा सिर पे जूड़ा पड़ी ज़र्द शाल।।

किनारों पे मीना बनत का दुरुस्त।।
वह अतलस की अंगिया बनी तंग ओ चुस्त

वह मसकी हुई चोली अंदाज़ की
वह उड़ी हुई चीन पिशवाज़ की।।

वह पाओं में सोने के दो दो कड़े।।
वह मेंहदी का आलम वह तोड़े कड़े

कड़े से कड़े को बजाती हुई।। ।।
चली बांके सामान उठाती हुई।।

कि आलम था एक उस पे दिल बाख़्ता
अजब एक आलम था बेसाख़्ता

लिये साथ साथ उसके सब अपना साज़
कई काफ़िरें और भी दिलनिवाज़

खड़ी वो हुई एक अंदाज़ से ।।
चली एक आग़माज़ और नाज़ से

अदब से वहां बैठ कर मिल के दूर।।
शगुफ़्ता मगर जो था फ़र्श उसके हुज़ूर

लिये साज़ अपने सभों ने उठा।।
हुवा हुक्म गोरी का जो बरमला

हर एक थाप में दिल लिया सब का खैंच
दिया असमा पर जो तबला को खैंच

निकलने लगी जान हर तान से।
लगी गाने टप्पा वह इस आन से ।।

कि बेताल थी हर तान आवाज़ से
अजब ताल पड़ती थी अंदाज़ से

मुसलसल थी एक फुलझड़ी नूर की
वह थी फिरकनी या लड़ी नूर की

खुली और मुंदी दिल की मरग़ूब थी
खुली गुंचा की तरह महबूब थी।।

अजब तरह की बंध गई थी हवा।।
ग़ज़ल का कहूँ उसका मैं माजरा।।

वह गुलशन की खूबी वह दिन का समां
वह गाने का आलम वह हुस्ने बयां

सुहाना हर एक तर्फ़ साया ढला।
घड़ी चार दिन था कि उस वक़्त था।।

वह धानों की सबज़ी वह सरसों का रूप
दरख़्तों का कुछ छाओं और कुछ वह धूप

रुपेहले सुनहले वरक़ सुबहो शाम
लपेटे हुये बोस्तां भरे तमाम ।।

वह आरतों के डोरे नशे का तरंग।।
वह लाले का आलम हज़ारे का रंग ।।

दरख़्तों से आना शफ़क़ का नज़र
गुलाबी से हो जाना दीवारो दर ।।

हर एक जानवर का सखुओं पे शोर।।
वह चादर का छुटना वह पानी का ज़ोर

वह मस्ती से पानी का बहना वहां
वह सर्वे सही और आबे रवां ।।

कहीं दूर से गोया पड़ती थी आ ।।
वह उड़ती सी नौबत की धीमी सदा

वह गोरी की तानें वह तबलों की थाप
वह रक़्से बुतां और सुघरी अलाप

उछलना वह दामन का ठोकर के साथ
वह दिल पीसना हाथ पर धर के हाथ

हुवे मह्व सुनके चरिंदो परिंद ।।
न इन्सान ही का हो दिल इसमें बंद ।।

खड़े जिस जगह से खड़े रह गये ।।
ग़रज़ जो खड़े थे खड़े रह गये ।।

जो बैठे से बैठे न फिर हिल सके ।।
जो पीछे थे आगे न वह चल सके

गुलों ने दिये कान उधर लगा ।।
लगे देखने आंख नरगिस उठा ।।

खड़े रह गये सर्व होकर करख़्त ।।
लगे हिलने आ वज्द में सब दरख़्त ।।

बने मिस्ल आईना दीवारो दर ।।
दरख़्तों से गिरने लगे जानवर ।।

भरा अश्क से बुलबुलों ने चमन
हुई क़ुमरियां शौक़ से नारा ज़न

पड़े सारे फ़व्वारे उसके उछल ।।
हुये नह्र से संग पाये पिघल ।।

कि हो जाय पत्थर का पानी जिगर ।।
अजब राग को भी दिया है असर

हुवा सबके दिल का अजब हाल वां
बंधा इस तरह का जो उस जा समा

कि बिन आये हर इक वहां मर गया
बलेकिन जो कुछ दिल गयों पर गया

लगी खींचने आह बद्रे मुनीर ।।
लगा थी ज़िबस इश्क़ का उसको तीर

लगी रोने आंखों पे धरकर रुमाल ।।
बंधा उसको आशिक़ का अपने ख़याल

हवा से हुई और दूनी वह आग ।।
कहीं का कहीं ले उड़ा उसको राग

न हो पास मेरे वह यादश बख़ैर ।।
लगी कहने है है यह देखूं मैं सैर

कि माशूक़ बिन सब है गुलज़ार आग
वह जाने कि हो जिसके कुछ दिल को लाग

कि हिज्रां का ग़म जिसके दुम्बाल हो
भला क्यों कि जी उसका ख़ुश हाल हो

लगे ख़ार कैसा ही गो फूल हो ।
जिगर में अगर आह की सूल हो

जिसे याद ग़मख़्वार की हो कमाल
दरख़्तों के आलम से क्या हो निहाल

करे गुलपरस्ती जो गुल पे क्या वह नज़र । जिसे अपने गुल की न होवे ख़बर ॥
यह कह कर उठी वां से वह दिलरुबा । छपरखट पे जा कर गिरी मुंह छिपा ॥
ख़ुशी का जो आलम था मातम हुवा । वस्ल का सब कहीं वह बहम हुवा ॥
सब उठते ही बस उसके जाती रही । न वह फ़स्ल कहीं और ख़्वाब से कहीं
मेरी अक़्ल इस जा पे हैरान है ॥ किया रब यह कैसा गुलिस्तान है
हर एक वक़्त है इसका आलम जुदा । जो चाहो कि फिर हो तो इसका न था
कभी है ख़िज़ां और कभी है बहार ॥ नहीं एक वतीरे पे लैलो नहार ॥

दास्तान बेनज़ीर के ग़मे हिज्र से बद्रमुनीर की बेक़रारी में

गरज़ आ गई एक नागह को ख़िताब । कि पर्दे में छुप के गया आफ़ताब
गये हिज्र की फिर अलामत हुई ॥ ग़रज़ आ परी को पर क़यामत हुई ॥
गिरी जब छपरखट पे वह रश्के हूर ॥ सभों को कहा तुम रहो दूर दूर ॥
अकेली वह रोने लगी ज़ार ज़ार ॥ उसी अपने आलम में बेइख़्तियार
गिरे चश्म से उसके इतने गुहर ॥ कि धोया उसी आब से मुंह सहर ॥
सबूही न दे साक़िये लाल फ़ाम । कि रो धो के मैं रात काटी तमाम
हुवा आफ़ताबे अलम जो तुलू । उदासी का होने लगा दिन शुरू
ज़रा आईना लेके देखा जो रंग ॥ तो जो आईना रह गई वह भी दंग ॥
बदन को जो देखा तो ज़ारो नज़ार ॥ किसी को कोई जैसे देवे फ़िशार ॥
फ़लक की तरफ़ देख और झुक के कर । लगी दिल को बहलाने इधर उधर ।
ज़बां पर तो बातें वले दिल उदास ॥ पर मांदा हैरत से होश्यो हवास ॥ ॥
न मुंह की ख़बर और न तन की ख़बर । न सिर की ख़बर ने बदन की ख़बर
अगर सिर खुला है तो कुछ ग़म नहीं । जो कुर्ती है मैली तो महरम नहीं
जो मिस्सी है दो दिन की तो है वही ॥ जो कंघा नहीं है तो यों ही सही

जो सीना खुला है तो दिल चाक है ॥ ग़म आलूदा मुंह है तो ग़मनाक है ॥
न मंज़ूर सुरमा न काजल से काम नज़र में वही तीरा बख़्ती की शाम
व लेकिन वह ख़ूबी का देखा सुभाउ कि बिगड़े से दूना हो उनका बनाउ
नहीं हुस्न की इस तरह भी कमी ॥ जो बिगड़ी है बैठी तो गोया बनी ॥
ग़रज़ बेअदाई है यां की अदा ॥ भलों को सभी कुछ लगे है भला ॥
जो माथे पे चीन जबीं ग़म से है ॥ तो वह भी है एक मौज दरयाव में ॥
वह आंखें जो रोई हैं बस फूट फूट जो गोया कि मोती भरे कूट कूट ॥
न वे ग़म से यों न मनमाये हैं गाल ॥ कि ज्यों गुल लाला हो बर्ग़े नहाले ॥
गरेबान सीने पे है जो खुला ॥ तो गोया वह है सुब्ह इशरत फ़िज़ा ॥
बक़ाहत से चेहरा अगर ज़र्द है ॥ तो या आह होंटों पे कुछ सर्द है ॥
अदा से नहीं वह भी ख़ाली ज़रा ॥ कि है चांदनी और ठंडी हवा ॥

दास्तान बेक़रारी बद्र मुनीर की बेनज़ीर के फ़िराक़ में और नजमुन्निसा के तसल्ली देने में ॥ ॥

दिलासा किया साग़रे बेनज़ीर फंसी दामे हिज्रां में बद्रे मुनीर ॥
वह हुस्नो जवानी और उस पर यह ग़म सितम है सितम है सितम है सितम ॥
जहां बैठना आह करना उसे ॥ वहां ना नज़ाकत पे धरना उसे ॥
कभी ख़ून आंखों से रो डालना ॥ किसी को कभी देख भो डालना
ख़वासों को टाला बताना उसे ॥ अकेली दरख़्तों में जाना उसे ॥
व ले उन दरख़्तों में जिसमें वह माह से शाम छिप छिप के करता निगाह
सो वह भी पहर दिन से आ वां मुदाम उसी छांउ में बैठ करती थी शाम ॥
गया इस तरह जब महीना गुज़र ॥ कि वह माह मुतलक़ न आया नज़र
और उसका उधर रंग घटने लगा जिगर ख़ूं हो मिज़गां पे बटने लगा ॥

लगी रहने सफ़ग़ान बेताब से ॥
लगे फ़र्क़ आने ख़ुरो ख़्वाब में ॥
मुहब्बत का सौदा सा होने लगा
जनूं दुख सा वहशत का होने लगा
सरकने लगा पास नामूसो नंग ॥
लगी मुंहा औ रुख़ में होने जंग ॥
ख़मोशी उठाने लगी दिल में शोर
जताने लगी बात बातों भी ज़ोर ॥
यह अहवाल देख उसका दुख़्ते वज़ीर
लगी जल के कहने कि बद्रे मुनीर ॥
तु यह है कि सबके तईं बेवक़ूफ़
किधर दिल गया तेरा ऐ बेवक़ूफ़
मुसाफ़िर से कोई भी करता है प्रीत
मसल है कि जोगी हुये किसके मीत
अरी चार दिन के यह हैं आशना
मिला दिल को आख़िर को रहे जुदा
यह हैं आसमां गह ज़मीं के हैं यह ॥
जहां बैठे जा बस वहीं के हैं यह ।
तू भूली है किस बात पर ऐ बुवा
ख़बर ले दिवानी तुझे क्या हुवा
सुनो जानी अपने पे जो कोई मरे
तो दिल पहिले अपना भी सदके करे
अगर आप पर कोई शैदा न हो
तो फिर चाहिये उसकी परवा न हो
वह ख़ुश होगा अपनी परी को लिये
अबस उसपे बैठी हो तुम जी दिये ।
तुम्हारी उसे चाह होती अगर ॥
तो अबतक वह तुमको न आता नज़र
लगी कहने तब उसको बद्रे मुनीर
कि सुनती है ऐ मेरी दुख़्ते वज़ीर ॥
किसी की बदी तू न कर ऐ बहे ॥
कि उसका ख़ुदा आलिमुल ग़ैब है
वह अपने दिलों से तो है नेक ज़ात
हुई उसपे क्या जानिये वारदात ॥
हुवा क़ैद या आने पाया न वह ॥
गये इतने दिन अबतक आया न वह
मुझे रात दिन इसका रहता है डर
परी ने सुनी हो न यां की ख़बर ॥
न बांधा हो उसको किसी ग़ार में
किया हो न उसके तईं क़ैद में ॥
परी ने कहीं तैश खा लाफ़ में ॥
दिया हो न फेंक उसको कुह क़ाफ़ में
परिस्तान से भी निकाला न हो
किसी देव के मुंह में डाला न हो ।
न मिलने के दुख उसके सब मैं सहे
भला अपने जी से वह जीता रहे ।

यह कह हाल दिल अपना रोने लगी | गुहर आंसुवों के गिराने लगी ॥
कई मुड़ करी मार आख़िर को लेट | छपरखट के कोने पे सिर मुंह लपेट

ख़्वाब देखना बद्रमुनीर का बेनज़ीर को कुवें में और जोगिन बनकर निकलना नजमुलनिसा का उसके तलाश में

पिला साक़ी यह जामे जम से वह मुल | कि ग़ायब का अहवाल ज़ाहिर हो कुल
किसी के तो क्या जामे जम फ़रखुंदा फ़ाल | कि आख़िर यह दुनिया है ख़्वाबो ख़याल
ज़रा आंख झपकी जो उस हाल में | तो देखा फंसा उसको जंजाल में
क़ज़ा ने दिखाया अजब उसको ख़्वाब | कि दुश्मन न देखे यह हाले ख़राब
जो देखे तो सहरा है एक लक़ो दक़ | कि रुस्तम जिसे देख हो जाये फ़क़
न इनसान है वां न हैवान है ॥ | फ़क़त एक कफ़े दस्त मैदान है
मगर बीच में उसके है एक कुवां ॥ | कि उठता है आहों का वां से धुवां ॥
कुवें का है मुंह बंद और उस से अड़ी ॥ | कई लाख मन की है एक सिल पड़ी
सदा वां से आती है बद्रे मुनीर ॥ | मैं चाहे ग़म में हूं याहू असीर ॥
मैं भूला नहीं तुझको ऐ मेरी जां | करूं क्या कि है मुझ पे क़ैदे गरां ॥
प इस क़ैद में भी तेरा ध्यान है ॥ | फ़क़त तेरे मिलने का अरमान है
तू अपनी जो सूरत दिखा दे मुझे ॥ | तू इस क़ैदे ग़म से छुड़ा दे मुझे ॥
नहीं मुझको मरने से कुछ अपने डर | यह ग़म है कि तुझको न होवे ख़बर
तुझे काश इस वक़्त मैं देख लूं ॥ | जियूं मैं अगर तेरे आगे मरूं ॥
वलेकिन यह है ख़ाम मेरा ख़याल | नहीं वस्ल मुमकिन बग़ैर अज़ विसाल
कोई दम का मेहमान हूं आज कल | इसी चाह में जायगा दम निकल ॥
यह सुन नारा मारा कि आह बेनज़ीर | जो चाहे करे बात बद्रे मुनीर ॥
प हरगिज़ मयस्सर न आई उसे ॥ | क़ज़ा ने न इसको सुनाई उसे ॥

रुका एक गई आंख दूलने मे सुल
तरह चाह देखा न वह मराज़ वह ॥
सदा अपने यूसुफ़ को सुन ख़्वाब से
कहा गो किसी से न उसने यह भेद
दले दुहे थे आंसू दुखा दसके रंज
वह महताब सा चेहरा हो गई ज़र्द ॥
ज़िबस आह पिनहां से घुटने लगी
मिज़ा सह न सकी जो थी तेज़ सी
मुअन्ना सा कद था जो रश्के चनार
जली उसकी आहों से कुल सूरतें
छिपाया बहुत उसने पर हम न भी
किसी से किसी को जो होती है लाग
ख़वासें कई वह जो हमराज़ थीं ॥
कहा उनसे रो रो के अहवाल ख़्वाब
सुना जब कि नजमुन्निसा ने यह हाल
लगी कहने वह यों न आंसू बहा ॥
बस अब सबर कर ता निकलती हूं मैं
जो बाक़ी रहा कुछ मेरे दम में दम ॥
अगर मर गई तो बला से मुई ॥ ॥
कहा शाहज़ादी ने सुन ऐ रफ़ीक़।
भली चंगी अपनी न खो जान तू ॥
रसाई तेरी होगी क्योंकर वहां ॥
मैं जीती हूं इस आसरे पर फ़क़त ॥

भरे अश्क [illegible] आय हाल
पड़ी गोश में फिर न आवाज़ वह ॥
उठी बावली आग [illegible] से ॥
चलो यूं मह सुबह चेहरा सफ़ेद ॥
हुई चांदनी में सितारों के गंग ॥
सरापा हुआ ग़ाज़ा आंखों हो दर्द ॥
तो मुंह पर हवाई सी छूटने लगी ॥
हुई अपनी ख़ूनीं से गुलरेज़ सी ॥
निकलने लगे उसके शोले हज़ार
हुई सब वह मिट्टी की सी सूरतें ॥
छिपाये से आतश छिपै है कहीं
बग़ैर अज़ कहे और लगती है आग
बड़ी खिदमतों में सरअफ़राज़ थीं
सो लाया उन्हें पढ़के ग़म की किताब
हुई बेक़रारी तब उसको कमाल
तेरे वास्ते मैंने सब दुख सहा ॥
उसे ढूंढ लाने को चलती हूं मैं ॥
तो फिर आके देखती हूं क़दम
तो यों जानियो मुझपे सदक़े हुई ॥
हुई मैं तो इस चाह ग़म में ग़रीक़ ॥
कि है वह परी और इनसान तू ॥
मुझे भी न दे हाथ से मेरी जां ॥
कि होता है मुझसे मेरा ग़म ग़लत

वह मोती की सेली वह तन की दमक
शबे तीरा में कह कशाने फ़लक

ज़री का वह हल्का सिर ऊपर धरे ।।
कि जों शब में कोई बनेटी करे ।।

ज़माने को भाई जो उसकी अदा
तो इस रात पर दिन को सदके किया

करे जो कि तक़वीम दिल से हिसाब
कहै सुंबला में गया आफ़ताब ।।

यह बके और यह अब्रो सियह है अगर
तो दामाने उश्शाक़ होयेंगे तर

तस्वीर वज़ीरज़ादी का जोगिन बनना तलाश में शाहज़ादे
के सामने शाहज़ादी औ मसखवासों के

ज़मुर्रुद के मुंदे वह इस आन पर ।।
कहूं क्या कि जैसे खुले कान पर ।।

वह मुंदे वह तन उसका ख़ाकिस्तरी
हुई हुस्न की और खेती हरी ।।

उड़े सब्ज़ा औ गुल के देख उसको होश
वह दोनों हुवे उसके हल्क़ा बगोश

नज़र कर सफ़ाई को उस गोशवा की॥ ज़मुर्रद को उस गोशवा की लौ लगी
बढ़े क्यों न हरदम ज़मुर्रद की शान जब ऐसे किसी के लगे जा के कान
वह मोती के माले वह मूंगों के हार गुलो नस्तरन की चमन में बहार
गुलाबी से वह नर्गिसे शोख़ रंग भरे जिसमें लाला के लाले के रंग
वह कप्पू का खिंचा सुर्ख़ माथे पे यों पड़े नूर पर लाल का अक्स ज्यों॥
मज़ा उसके देखे जो आशिक़ का ख़ूं जो रोया करे चश्म से वह लहू॥
यह बीन उसके कांधे पे थी ख़ुशनुमा चले जो कोई मस्त शीशा उठा॥
दियारे मुहब्बत में महंगी थी वह न थी बीन इशरत की बहंगी थी वह
न थी बीन थे कुमकुमे रंग को॥ वो था थे सबू बहू आहंग के॥
सो वह बीन कांधे पे रख यों चली किलावे कोई जैसे गंगाजली॥
हर एक तार था बीन का रोदे नील वह थी हिंद के राग की सलसबील
न आशिक़ हुये उसके आलम पे लोग दिवाना हुवा जोग देख उसका जोग
बनी जब कि जोगिन वह इस रंग से लगी फोड़ने दोस्त सिर संग से॥
वह रुख़सत जो इस तरह होने लगी तो वह साहिबे ख़ाना रोने लगी॥
वह रोरो के दो अब्र ग़म यों मिले कि जिस तरह सावन से भादों मिले
यहां तक बंधा उसके रोने का तार बहे फूट दीवारो दर एक बार॥
खड़े थे वह जोगिन के जो गिर्द कुल वह रोरो हुये शबनम आलूदा गुल
न देखा किसी ने जो कुछ इख़्तियार कहा हक़ को सौंपा तुझे ले सिधार
चलो जिस तरह पीठ अपनी दिखा इसी तरह दिखला हमें मुंह फिरा
किसी ने कहा भूल यों मत मुझे॥ ख़ुदा के तईं मैंने सौंपा तुझे॥
कहा उसने ऐ ख़ैर अब जानती हूं मैं जो मिलता है तो उस को लाती हूं मैं
तुम्हें भी ख़ुदा को मैं सौंपा सुना॥ मेरा बख़्शिया यों तुम कहा और सुना
जुदा हो के अलक़िस्सा रोनों को छोड़ चली अपने घरबार से मुंह को मोड़

नसुध बुध की ली और न मंगल की ली
निकल शहर से राह जंगल की ली

लिये बीन फिरती थी सहरा नवर्द
तने चाक चाक और रुख़ गर्द गर्द ॥

कि शायद कोई शख़्स ऐसा मिले ॥
कि जिससे वह शैदा का शैदा मिले

जहां बैठ कर वह बजाती थी बीन
तो सुन्ने को आते थे आहूए चीन

बजाती वह जोगिन जहां जोगिया
तो वां बैठती खल्क धूनी रमा ॥

उसे सुन के आता था सहरा को जोश
सदा से दरख़्तों को आता ख़रोश ॥

गुले नग़मा जो उससे गिरते हज़ार
तो लेते उन्हें ख़्वार दामन पसार

कहीं हलक़ा हलक़ा कहीं लख़्त लख़्त
खड़े होके गिर्द उसके सुनते दरख़्त ॥

बजाती थी जों जों वह बनबन के बीन
ख़सो ख़ार सुनते थे बनबन के बीन

नज़र जो कि पड़ती थी बूटी जड़ी ॥
हर एक आलम शौक़ में थी खड़ी

न सामान ऐसा था जो यह कभी ॥
ददोद पुल गुश हो पड़े थे सही ॥

यहां तक कि सहमें जो के नक़्श पा
वह बैठे थे कान अपने ऊधर लगा

गुले नग़मये नर्की यह थी बहार
कि सहरा के गुल उसके आगे थे ख़ार

सुन आवाज़ की उसकी आनो शिकोह
निकलने लगी दबके आवाज़ कोह

न थानी ही सुन और उसका वल्ले ॥
कुवें के भी दिल में उठे वलवले ॥

न चश्मे ही कुछ आबदीदा रहे ॥
गरेबान कर चाक दरिया बहे ॥

हुवा बुलबुलों गुल का यां तक हजूम
कि गिरती थीं वां डालियां झूम झूम

वह ख़ुश का था वां हर एक को मुक़ाम
ज़बां का निकलता था हाथों से काम

चमन करते फिरते थे जंगल के तईं ॥
बसाते थे जंगल में दंगल के तईं ॥

यह हर जा पे था उसके दम से तिलिस्म
बंधा था उसी दम क़दम से तिलिस्म

था बोरोज़ [illegible] गूं ता मिस्ले सबा
इसी तरह फिरती थी वह जा बजा

दास्तान फ़ीरोज़ शाह जिन्नों के बादशाह के बेटे का आशिक़ होना जोगिन पर

कि रहे तु रसा किये गुलज़ार ॥
कोई फूल सी दे शिताबी शराब ॥
वह गुल फ़ित्ना दिल को जो रास हो ॥
मुहब्बत के असबाब देखो ज़रा
सफ़ेदो सियह उसके हैं इख़्तियार
जहां में है अन्दोह ख़्याल वहम ॥
दुरुस्ती ज़माने को मशहूर है ॥
क़ज़ारा सुहाना सा एक दश्त था
वह थी इत्तफ़ाक़न शबे चारदह ॥
बिछी हर तरफ़ चादरे नूर थी ॥
बिछा मिरगछाले को औ लेके बीं
किदारा बजाने लगी शौक़ में ॥
किदारा यह बजने लगा उसके हाथ
बंधा उस जगह इस तरह का समा ॥
वह सुनसान जंगल वह नूरे क़मर ॥
वह उजला सा मैदां चमकती सी रेत
दरख़्तों के पत्ते चमकते हुये ॥
दरख़्तों के साये से मह का ज़हूर
व या यह कि जोगिन का मुंह देखकर
गया हाथ से बीन सुनकर जो दिल

कि सहरा से जब दिल हुवा ख़ारख़ार
कि शाहे मलालिब को यह चूं शिताब
कि जीने की बीमार को आस हो
कि क़ुदरत में उसके है क्या क्या भरा
बनाया है उसने यह लैलो निहार ॥
कहीं सुबह ख़ुश कहीं शाम ग़म ॥
कहीं साया है और कहीं नूर है ॥
कि एक शब हुवा उसका यों बिस्तर
छत से वह बैठी वहां रूकश मह ॥
यही चांदनी उसको मंज़ूर थी ॥
दुकानूं से भल कर वह ज़ुहरा जबीं
लगी दस्तो था मारने ज़ौक़ में ॥
कि मह ने किया दायरा लौ के साथ
सबा भी लगी रक़्स करने वहां ॥
वह बर्राक़ था हर तरफ़ दश्तो दर
उगा नूर से चांद तारों का खेत ॥
गुलसो ख़ारख़ार झमकते हुये ॥
गिरे जैसे छलनी से छन छन के नूर
हुवा नूर साये का टुकड़े जिगर ॥
गये साया ओ नूर आपुस में मिल ॥

वह सूरत खुश आई जो उस हूर की
दिल अपने पे साये ने मंज़ूर की ॥
हवा बंध गई उस घड़ी इस उसूल
बसेरा गये जानवर अपना भूल
दरख़्तों से लग लग के बादे सबा
लगी वज्द में बोलने वाह वा ॥
कि दारे का आलम था वह उस घड़ी
कि थी चांदनी हर तरफ़ ग़श पड़ी
यहां का तो आलम था और तो यह
तिस ऊपर मज़ा तुम सुनो और यह
कि था एक परीज़ाद फ़र्रुख़ सियर
जिन्नों के वह था बादशाह का पिसर
निहायत तरहदार सा हुस्न माल
बरस बीस इक्कीस का सिन वो साल
हवा पर उड़ाये हुये अपना तख़्त ॥
किसी तर्फ़ जाता था फ़ीरोज़ बख़्त
वह जाता था करता हुआ सैर माह
उसे ख़ल्क़ कहती थी फ़ीरोज़ शाह
इका इक सुनी बीन की जो सदा
वहां तख़्त ला उसने अपना रखा ॥
जो देखी तो जोगिन है एक रश्क हूर
कि चश्मे फ़लक ने न देखा यह नूर

तसवीर जिन्नों के बादशाह के बेटे की मै दो जिन्नों के
और जोगिन सामने बीन बजाती हुई ।

नज़र करके हुस्न उसका ग़श आ गया
न अपूपु के आलम में बस भर गया
यह समझा बनावट का कुछ भेस है
लगा कहने जोगीजी आदेस है ॥
पड़ा तुम पे ऐसा कहो क्या बिजोग
लिया वास्ते किसके तुमने यह जोग
किधर से तुम आये कहां जाओगे
दया अपनी हम पर भी फ़रमाओगे
वह समझी कि इसका दिल आया इधर
कि दिल भी तो रखता है दिल की ख़बर
ख़बरदार है इश्क़ हुस्न आग है ॥
सदा इश्क़ और हुस्न में लाग है ॥
वले रंग ही और उन में हुवा ॥
कि दोनों तरफ़ आग दी है लगा ॥
कहा हंस के जोगिन ने इस बोल पर
कहां से तु आया चला जा उधर ॥
कहा तब परीज़ाद ने वाह जी ॥
बहुत गर्म है आप अल्लाह जी
न रूखे हो तुम तो भला जाऊंगा
ज़रा बीन सुन कर चला जाऊंगा
कहा हांने सोते से अपने कहो
फ़क़ीरों को छेड़ो न बैठे रहो ॥
यह दोदो लतीफ़े जो बाहम हुये
इसी लुत्फ़ में यह तो बेदम हुये ॥
गया बैठ आ सामने रेत में ॥
रहा खेत यह तो उसी खेत में ॥
नज़र हुस्न पर गाह गह बीन पर
सरापा दिल उस लावुले चीन पर
रहा तन बदन का न कुछ उसको होश
बना गुल कि जों नक़्शे पा चश्मो गोश
वह जोगिन जो थी दर्द ग़म की असीर
हुवा ग़म में जोगिन के यह भी असीर
न सुध बुध रही तो और न तो राह की
जब आई ज़रा सुध तो फिर आह की
बजाती रही बीन वह सुबह तलक
यह रोया किया सामने बेधड़क ॥
इधर तान पर बीन की थी बहार ॥
बंधा था उधर उसके रोने का तार
धरी अपने कांधे पे जब उसने बीन
उठी लैके अंगड़ाई ज़ुहरा जबीन ॥
परीज़ाद ने तब पकड़ उसका हाथ
बिठाना बी बिठा तख़्त पर अपने साथ
ज़मीं से उड़ा आसमां के तईं ॥
वह कितना कहा की नहीं रे नहीं ॥
न माना और उसने उड़ाया उसे ॥
परिस्तां में लाकर बिठाया उसे ॥

यह सुनकर गया बाप पास अपने ले । कहा अर्ज़ रखता हूं मैं आपसे ।।
यह योगी जो है एक साहिब कमाल । ज़रा बीन सुनिये और इसके ख़याल
बहुत आप उससे उठायेंगे हज़ ।। बहुत बीन से उसके पायेंगे हज़ ।।
कहा उसने बाबा बहुत ख़ूब है ।। हमें ख़ास ये राग अपना मरग़ूब है ।।
कहा आओ जोगी जी बैठो इधर ।। करो रौशन अपने क़दम से यह घर
खुले बख़्त बेटे के और बाप के ।। सिरों पर हमारे क़दम आप के ।।
बहुत उसकी ताज़ीम-ओ-तकरीम की । जगह एक पाकीज़ा रहने को दी

दास्तान फ़ीरोज़ शाह की मजलिस आराई और जोगिन के बुलाने में

पिला मुझको साक़ी मुहब्बत का जाम । कि मेहमानियों में हुआ दिन तमाम
यह जोगिन जो बैठी बिरोगिन हुई ।। कि इतने में रात आई जोगिन हुई
भभूत अपने मुंह पर ग़ाज़ा बी से मल । रख इंडवे को मह के शताब आई निकल
दिखाती हुई सोज़ दिल दूर से ।। उड़ाती हुई राख को नूर से ।।
सितारों के माले गले बीच डाल ।। वह पहुंची परिस्तान में हाल हाल
हुई ख़ाक जो वह बज़्म अंजुम फ़रोज़ ।। छिपा रुख़ से उसके परदे में रोज़ ।।
मलिका ने परिस्तां में मजलिस बना । बुलाया उसे जिसकी थी यह तमना
परीज़ाद सारे हुये जमअ वां ।। कि देखें तो जोगिन का चलकर समां
वह जोगिन कि सच मच थी ज़ुहरा जबीं । सो मजलिस में आई लिये अपनी बीं
बहुत मिन्नतों से बुलाया उसे ।। बड़ी इज़्ज़तों से बिठाया उसे ।।
कहा हम हैं मुश्ताक़ कुछ गाइये । समा बीन का हमको दिखलाइये
कहा कुछ बजाना नहीं अपना काम । हर एक तरह लेना हमें हरि का नाम
है बेज़ार फ़रमाइशों से फ़क़ीर ।। वले क्या करें अब हुए हैं असीर

कहा योगी साहिब यह क्या बात है | करम आपका हमपे दिन रात है
जो मरज़ी हो तो तुम को न तकलीफ़ दें | नहीं जिसमें राज़ी हो तुम सो करें ॥
कहा इस तरह से जो फ़रमाउगे ॥ | तो हां बंदगी ही में कुछ पाउगे ॥
यह कह उसने और बीन कांधे पे धर | यहां तक बजाई कि दीवारो दर ॥
खड़े रह गये होश खोये हुये ॥ | नज़र जो पड़े वां सो रोये हुये ॥
गया अहले मजलिस का दिल तो पिघल | तो तों आमस्र अश्क आंखे इसके निकल
हुई बीन पर अंगुलियां यों रवां ॥ | कि हाथों से उसके हुवा दिल रवां ॥
रवानी दवां कर दिया जान को ॥ | रुलाया हर एक जिन्नो इन्सान को
हुवा हाल पर उसका यह कुछ तबाह | वह आशिक़ जो था उसका फ़ीरोज़ शाह
कभी सामने आके करता नज़र ॥ | कभी देखता छिपके इधर उधर
सितूं के कभी ओट में होके वह ॥ | खड़ा देखता उसको रो रो के वह
कभी इधर उधर से फिर फिर के आ | छिपे उसके मुखड़े को लेता बला
वह गो कुछ न सुनती न कहती उसे | कन खियों से पर देख रहती उसे
नज़र उसकी जब आन पड़ती उधर | तो यह और की तर्फ़ करती नज़र
इस आनो अदा पर वह फ़ीरोज़ शाह | दिलो जां से करता था हर लहज़ा आह
अगर कोई जोगिन की करता सना | तो खा रश्क कहता कि फिर तुमको क्या
ग़रज़ थी यह सुहबत कि मैं क्या कहूं | यही दिल था उसका कि देखा करूं
बजी पाहेली सुहबत में वां ऐसी बीन | कि गश खा कर गये वे जो थे नुकताचीन
सराहा परीज़ाद के बाप ने ॥ | कहा की दया जोगी जी आपने ॥
इसी तरह हर शब करम कीजिये | मेरी बज़्म रश्के इरम कीजिये ॥
मुक़द्दम हमारा रिझाना करो | हमें अपना माशूक़ जाना करो
यह घर बार है आपही का तमाम | हुये आज से हम तुम्हारे गुलाम ॥
तकल्लुफ़ को मौक़ूफ़ कर दीजिये | जो कुछ तुमको दरकार हो लीजिये

कहा उसने मतलब नहीं कुछ हमें
मुबारक रहे घर तुम्हें ॥

कहां तुम कहां हम मुबारक यह जो साथ
यह थी बात सब आबोदाने के हाथ

यह कह वां से उट्ठी वह गुलरू जिधर
दिया था जहां उसने रहने को घर

लगी रहने उसमें पुआ बो रोज़ वह ॥
समझ जी में कुछ कुछ दिल अफ़रोज़ वह

कहा अपने जी से कि सुनता है जी
न घबराइयो अपने दिल में कभी

ज़ुबां नम कि ना खिदमतगार जहां ॥
ही आप कारा चिहारह निहां ॥

ग़रज़ इस तरह उसका मामूल था
कि उस शाह परियों की ख़िदमत में जा

यह सारी तक हंसती और बोलती
हर एक बात में क़न्द थी घोलती

बजा लेके सब को रिझाती थी वह
पहर के बजे घर में आती थी वह ॥

वले क्या कहूं हाल फ़ीरोज़ शाह
कि थी दिन बदन उसकी हालत तबाह

न दुनिया की उसको न दीं की ख़बर
इसी को न सब कुछ में शामो सहर ॥

उसी शमअ के गिर्द फिरना उसे ॥
पतंगे के मानिंद मिरना उसे ॥

वह हाले से हर काम के रोज़ो शब ॥
वही काटती उसको औक़ात सब

इसी तरह औक़ात खोना उसे ॥
सदा बीन सुन सुन के रोना उसे

वह जोगिन भी सौ सोन रह कर सदा
हर एक तान में उसको लेती लुभा

वले कुछ कभी धाती मौक़ूले तलब
तो आशिक़ के गुस्सा वह करती ग़ज़ब

कभी ख़ुश किया और किया गह उदास
कभी दूर बैठी कभी उसके पास ॥

किया उसने परदे में जब कुछ सवाल
दिवाना किया उसको बातों में डाल

कभी तीखी नज़रों से घायल किया
कभी मीठी बातों से मायल किया

कभी टेढ़ी नज़रों से मारा उसे ॥
कभी सीधे दिल से पुकारा उसे

कभी हंस के देखा ज़रा ख़ुश किया
कभी हो के ग़मगीन नाख़ुश किया

कभी मुंह छिपाया दिखाया कभी
कभी मार डाला जिलाया कभी

तरों में कभी दिल को लटका लिया
कभी साथ बातों के खिसका दिया

वह हरचंद आंखें दिखाती रही ।। पै नज़रों से दिल को लुभाती रही ।।
बिचारा परीज़ाद वह सादा दिल कहां से यह इनसान की मुत्तसिल
इसी तरह मुद्दत गई जब उसे ।। वही गर्मिये इश्क़ की लप उसे ।।
न मुंह पर वह आलम रहा और न नूर कई दिन में दिल हो गया चूर चूर ।।
निगह बंद हो आंखों से आया निकल गया दिल सब अंदर ही अंदर पिघल
यह ही पर दिये दिल से जी ने सदा ।। कि है सब्र की अपने बस इन्तिहा
जो कहता है उससे तो कह हाल दिल कि अब तंग है अपना अहवाल दिल
से मलता है अब भी तो मालिश से मल नहीं कोई इसमें चला मैं निकल
मला करती अब दस्त अफ़सोस को पड़ा रह लिये नंगो नामूस को ।।
यह सुन नीका पैग़ाम मजबूर हो ।। कहा अपने नज़दीक को दूर हो ।।
बला से अगर आन रहती नहीं ।। कि अब बिन कहे जान रहती नहीं
ग़रज़ एक दिन बात यह ठान कर लगा घात पर अपने वह आन कर
न था उस घड़ी कोई ईधर उधर ।। अकेली पड़ी उसको जोगिन नज़र
अकेली उसे देख हो बेक़रार ।। गिरा पाउं पर उसके बेइख़्तियार
गिरा इस तरह से क़दम पर जो वह तो कहने लगी मुसकरा उसको वह
कि है आज यह क्या ख़िलाफ़े क़यास गिरा इतना तू होके क्यों बे हवास
किसी ने तेरा दिल सताया कहीं व या जी को तेरे लुभाया कहीं ।।
मेरे बैठने से अज़ीयत हुई ।। ।। कि मेहमानियों की मुसीबत हुई ।
फ़क़ीरों से इतना न हो तू ख़फ़ा ।। चले हम भला जाते राहो भला ।।
अज़ीयत मगर हमसे पाता है तू ।। कि अब पाउं पड़ पड़ उठाता है तू ।।
लगा कहने रो रो के फ़ीरोज़ शाह कि बस बस यही तो कहोगी न वाह ।।
तुम्हारी समझने तो मारा हमें यह बातें नहीं अब गवारा हमें ।।
सताये हुये को सताती हो क्या ।। जले दिल को नाहक़ जलाती हो क्या

हुई तुम न वाक़िफ़ मेरे हाल से ॥ फ़िदा मैं रहा जान और माल से ॥
तुम अपना सा मुझको समझने रहे भला तुमको अब या कोई क्या कहे
तुम ऐसी ही बेरहम बेदर्द हो ॥ ग़रज़ अपने आलम में तुम फ़र्द हो
कहा उसने ले कह शिताब अपना हाल कि तू क्यों गिरा सिर को पावों पे डाल
कहा तब परीज़ाद ने मेरी जां ॥ कहां तक करूं राज़ दिल को निहां
भला हिज्र में कब तलक हूं मलूल ग़ुलामी में अपने मुझे कर क़बूल
लगी हंस के कहने कि टुक तौर से जो मेरी कहानी सुने ग़ौर से ॥
मतालिब अगर मेरे बतलाये तू ॥ तो शायद मुराद अपनी भी पाये तू
कहा उसने फिर जल्द फ़रमाइये जो कुछ आपसे हो बजा लाइये
कहा उसने यह है मेरी दास्तां ॥ कि शहरे सरन्दीप है एक मकां
मलिक एक वां का है मसऊद शाह कि बेटी है एक उसके मानिंद माह
जहां में है बद्रे मुनीर उसका नाम मैं रहती हूं ख़िदमत में उसके मुदाम
बनाया है उसने अलग एक बाग़ कि फ़िरदौस का है वह चश्मो चराग़
जुदा बाप से थी वह उसजा मुक़ीम सदा सैर करती थी बेख़ौफ़ो बीम
मैं नजमुन्निसा उसकी दुख़्ते वज़ीर हमेशा से हमराज़ थी और मुशीर
जुदा एक दम उससे होती न थी ॥ सुलाये बग़ैर उसके सोती न थी
ख़ुशी से सरोकार ग़म से फ़राग़ ॥ बरंगे चमन रहती थी बाग़ बाग़ ॥
किसी तरह का ग़म न था ध्यान में तरक़्क़ी ख़ुशी की थी हर आन में
हुई एक दिन यह अजब वारदात कि एक पारस वादि हुवा एक रात ।
कहां तक कहूं उसका क़िस्सा है दूर न था आदमी नूर का था ज़हूर ॥
गया उस पे उस शाहज़ादी का दिल गये एक दोनों वह आपुस में मिल
चले आशिक़ उसपर थी कोई परी मुहब्बत में थी उसके वह भी भरी
कहीं वां के आने की सुनकर ख़बर ख़ुदा जाने फेंका है उसको किधर

वो या क़ैद में उसको डाला कहीं	कि मुद्दत से उसकी ख़बर कुछ नहीं
सो मैं खोज में उसके ग़मगीन हुई	यहां तक तो पहुंची बिरोगन हुई
परीज़ाद आपुस में तुम एक हो	अगर तुम ज़रा खोज उसका करो
तो शायद मदद से तुम्हारी मिले	तो फिर आर्ज़ू भी हमारी मिले ॥
दिल आबाद हो जी को आराम हो	तुम्हारा भी इस काम में काम हो
कहा तब परीज़ाद ने हाथ ला ॥	अंगूठा दिखाया कि इतरा न जा ॥
कहा फिर यही कुछ नहीं महजबीं	लगी हंसके कहने नहीं रे नहीं ॥
यह सुन क़ौम को अपनी उसने बुला	तकय्यद से सबको बुलाकर कहा
कि जाओ तो ढूंढो करो मत कमी	कि है एक परिस्तां में क़ैद आदमी
जो तुममें से लावेगा उसकी ख़बर	जवाहिर के दूंगा लगा उसके पर
यह सुन अपने सरदार का यह कलाम	तजस्सुस में फिरने लगे सुबहो शाम
हुआ एक का नागहां वां गुज़र ॥	जहां क़ैद में था वह ख़स्ता जिगर
वह रोता जो था नालाओ आह से	तो कुछ उसको आई सदा चाह से
कहा कुछ तो मिलता है यां से सुराग़	कि आती है यां बूए गुलज़ारे बाग़
वह चौकी के जो देव थे जाबजा ॥	लगा पूछने किसकी है यह सदा
कहा शाहरुख़ का है क़ैदी यहां	कुंएं में तड़पता है एक नौजवां ॥
वह तहक़ीक़ कर और ले वां का भेद	उड़ा शाह को अपने देवे सफ़ेद ॥
किया जाके फ़ीरोज़ शाह को सलाम	सुन आया जो कुछ था सुनाया कलाम
कहा मेरा मुजरा है अब लाइये ॥	जो देने कहा है सो दिलवाइये
यह मामूल था वां के इन आम का	जवाहिर के उसके दिये पर लगा

दास्तान पैग़ाम भेजने में फ़ीरोज़ शाह के माहरुख़ को

यह भेजा फिर उस माहरुख़ को पयाम	कि क्यों ज़ीस्त करती है अपनी हराम

दास्तान कुवें से निकलने में बेनज़ीर के ।।

कुवें से निकलता है यूसुफ़ अज़ीज़
क़दह भर के लासा किये बेतमीज़
गये लाला गूं से दिखा लालाज़ार
गये दिन ख़िज़ां के और आई बहार
समां कोई ऐसा दिखादे मुझे ।।
गुलाबी झमकती पिलादे मुझे ।।
मनाज़िल को अपने फिरे बा महल्ल
कि वह माहे नख़शब कुवें से निकल
कुवें में उतर कर वह सबे मुराद ।।
कोई ऐवया था सिकंदर निज़ाद
कि फ़व्वारा जो आप को दे उछाल
अलग यों ले आया कुवें से निकाल
निकाल आब है दो को ज़ुल्मात से
ले आया वह जों ख़िज़्र सौ घात से
कि निकला वह संबुल से मानिंद गुल
हुवे मस्त उस नाज़ बू से वह कुल्ल
कि हर्फ़ों से जो होवें मानी अयां ।।
अंधेरे से निकला वह रौशन बयां
कि बीमार हो नज़ा में जिस तरह
वह जीता जो निकला वले इस तरह
कहे तू कि मरता था ऊपर का दम
ज़िबस ऊपर आने का था उसको ग़म
गड़ा जैसे निकले है पुतला कहीं
ज़मी खाक तन पर बरंगे ज़मीं ।।
कि जों खुश्क हो नरगिसे बोस्तां
न आंखों में ताक़त न तन में तवां ।।
वह जोड़ा जो था सब्ज़ नीला हुवा
वह तन सुर्ख़ जो था सो पीला हुवा
हुवे लाग़री से बदन के व बाल
वह सिर में जो थे उसके संबुल से बाल
न था ख़ून का रंग भी दर्मियां ।।
फ़क़त पोस्त बाक़ी था औ उस्तख़्वां
कि उल्झी हो जो रस्मा ने कबूद ।।
बदन से रगों की थी इस ढब नमूद ।।
ख़िज़ां दीदा हो जिस तरह बर्ग गुल
बदन खुश्क जो ज़र्द इस तरह था वह गुल
सो वह होगये बढ़के बद्रे कमाल ।।
वह नाख़ुन जो थे उसके मिस्ले हिलाल
जो ऐसा हुवा जल्द फ़ीरोज़ शाह ।।
यह देखा जो अहवाल उसका तबाह
ले आया वह बैठी थी जोगिन जहां
लिटा तख़्त पर अपने उसको वहां

तसवीर कुवें से निकल आना बेनज़ीर का बहुक्म शाहज़ादा जिन्न [illegible] हुई
वज़ीरज़ादी नज्मुलनिसा

रखा तख़्त एक जा पे उसका छिपा
कहा फिर यह जाकर कि नज्मुलनिसा

चल अब तो कि मैं उसको लाऊं यहां
यह सुनते ही घबरा के बोली कहां

दिवानी थी अज़ बस वह उस नाउ की
न सिर की रही सुध न कुछ पाउं की

कहा चल कहां है बता तू मुझे ॥
ज़रा उसकी सूरत बता तू मुझे ॥

कहा राह देख लियो ज़रा थम रहो
कि शादी बड़ी है कहीं ग़म न हो

यह कह और ले हाथ में उसका हाथ
ले आया वह जोगिन को वां साथ साथ

गया आप उस तख़्त पर बैठ और ॥
दिखाया उसे और कहा कर के ग़ौर

जिसे ढूंढती थी सो यह है वही ॥
कहा हां रे हां यह वही है वही ॥

यह कह और उस तख़्त के पास आ
कहा ऐ परीज़ाद तू उठ ज़रा ॥

कि इस तख़्त के गिर्द एक दम फिरूं
बलायें मैं दिल खोल कर इसकी लूं

कहा उसने हंस कर भला देख लो
तु इस बात पर मेरे रूके न हो ॥

कहा उसने तब अपनी सूरत दिखा | अरे ईद तू क्यों दिवाना हुआ ॥
ग़रज़ वह परी शाद नीचे उतर ॥ | खड़ा हो गया तख़्त से हो उधर
वह उस तख़्त के गिर्द फिरने लगी | बला उसकी लेले के गिरने लगी
गले लग के रोने लगी ज़ार ज़ार ॥ | किया अपने तन मन को उस पर निसार
वह देखे जो टुक आँख उठा बेनज़ीर | तो नज्मुल्निसा है यह दुख़्तरे वज़ीर
कहा तू कहाँ और किसका यह जोग | कहाँ यह लिबास और कहाँ तुम ये लोग
कहा तेरे ग़म ने दिवाना किया ॥ | कि आलम से अपने बिगाना किया
ग़रज़ बोल कर फिर तो आपुस में दिल | वह दोनों किये देर तक मुत्तसिल ॥
बयाँ हाल दोनों जो करने लगे ॥ | दुखे आपुस के दम भरने लगे ॥
कही सरगुज़श्त उसने उसके तलक | कि इस तरह पहुँचे हो तुम यहाँ तलक
यह सुन बेनज़ीर अपने दिल सोज़ से | लगा शाद होने उसी रोज़ से ॥
किया एक दिन तो उन्हों ने मुक़ाम | चले दूसरे दिन वह नज़दीक शाम
उसी तख़्त पर बैठ कर वह उधर ॥ | किया नक़्श मतलूब जिनका उधर
वह जोगिन वह फ़ीरोज़ शाह और वह माह | चले तख़्त पर बैठ ऊपर की राह ॥
गये उड़ के मतलब तो कुछ सोच कर | तो बे कस्र बैठे मुसल्लस के घर
मुरब्बा नशीं थी जो बद्रे मुनीर ॥ | वहाँ उसको लाई वह दुख़्तरे वज़ीर
उतारा वहीं ला दरख़्तों में तख़्त ॥ | दुबारा खुले उन दरख़्तों के बख़्त ॥
अकेली उन्हें वाँ से आई उधर ॥ | लिये सोग बैठी थी वह माह जिधर
सका रूक जो आ वह क़दम दरगीरी | तो फ़ितने की वह शाहज़ादी औ कुछ डरी
फिर आख़िर जो देखा तो जोगिन है यह | मेरे दर्द ग़म की बिरोगिन है यह ॥
कहा मेरी नज्मुन्निसा तू है जाँ ॥ | अरी तेरी सदक़े मेरी मेह्रबाँ ॥
हमें तेरे मिलने की कब आस थी | कि जीने से अपने हमें यास थी ॥
बहुत उसने चाहा कि हो वे खड़ी | खड़ी होते होते वहीं गिर पड़ी ॥

कहा बारे गम से इफ़ाक़त नहीं ।।
बला लेने लगी नज्मुलनिसा ।।
उसे शाहज़ादी का था हाल याद
न घर की वह रौनक़ न उसका वह हाल
पड़े सारे वे दाग़ दीवारो दर ।।
ख़वासें जो थीं पास वह नाज़नीं
न चोटी गुंधी और न कंघी दुरुस्त
हरएक अपने आलम में देखा तो दंग
न आपुस की चुहलें न वह चहचहे
ग़म आलूदा हरएक ज़ारो नज़ार
जो बैठी तो रोना जो उट्ठी तो ग़म ।।
चमन सारे वीरान से हैं पड़े ।।
जो ख़ुद है तो हैरान बीमार सी ।।
न ताबो तवां और न होशो हवास
यह देख उसका अहवाल नज्मुलनिसा
वलेकिन महल में पड़ी जब यह धूम
सुनी एक ने एक से यह ख़बर ।।
कोई गुंचा की तरह खिलने लगी
टके कोई सदक़े के लाने लगी ।।
कोई आई बाहर से घर से कोई ।।
हक़ीक़त लगी पूछने आ कोई
हुवा सिर पे उसके ज़िबस इज़्दहाम
कहा बीबियो कल कहूंगी मैं हाल

अरी क्या करूं मुझमें ताक़त नहीं
लगी गिर्द फिरने बरंगे सबा ।।
जो देखा तो यां उससे कुछ है ज़ियाद
गुलों से लगा दिल तलक पायमाल
महल को जो देखा तो टूटा सा घर
सो मैली कुचैली कहीं की कहीं
जो चालाक थीं बन गईं वह भी सुस्त
उड़ा रंग चहरे का मिस्ले पतंग ।।
न गाना बजाना न वह क़हक़हे ।।
न आराम दिल को न दिल को क़रार
ग़रज़ बैठ ते उठते उसपर सितम ।।
शजर गुल के एक झाड़ से हैं खड़े
कि जो ज़र्द शाख़ों की हो आरसी
ज़ईफ़ो नहीफ़ो परेशां उदास ।।
जली शमअ की तरह आंसू बहा
किया मिस्ले परवाना उसपर हुजूम
मुबारक सलामत हुई एक दिगर
कोई दौड़ कर उससे मिलने लगी
कोई सिर से चोटी छुवाने लगी
इधर से कोई और उधर से कोई ।।
लगी करने आपुस में चरचा कोई
लगी करने घबरा के सबको सलाम
कि अब राह की मांदगी है कमाल

वह अंदोह गम कुछ हुआ बरतरफ़
कहा शाहज़ादी तु आती नहीं ॥
चलो चल के आराम टुक कीजिये
गई जब कि ख़िल्वत में वह मुनीर
यह सुन एक दम में वह गुस्सा कर आई
तअम्मुद से पूछा कि सच क्या है यह
कहा मुझ को सौगंद इस जान की
निशाते ख़ुशी की ख़बर एक एक
कहा क्या कि लाई कहा जिस तरह
तेरा केदी जाकर छुड़ा लाई हूं ॥
कहा फिर वह दोनों कहां हैं कहा
अजब वक़्त में मैं हुई थी जुदा ॥
मगर एक यह आ पड़ी बेबसी ॥
सो अब एक को तो ले आती हूं मैं ॥
यह सुन शाहज़ादी हंसी खिलखिला
और एक कही तू बड़ी क़ह्र है ॥
चल अब दोचार ले बस ज़ियादा न कर
कहा फिर परीज़ाद के रूबरू ॥
कहा हमको ऐसा दिवाना नहीं
अगर दिल में कुछ तेरे वसवास है
ज़रा पूछ लीजो तो इस बात को
यह सुन कर शिताबी गई वह निगार
छिपाये हुये ला बिठाया वहां ॥

तो फिर ले के नज्मुलनिसा की तरफ़ ॥
इधर अपनी तआरीफ़ लाती नहीं
कुछ एक तुमसे कहना है सुन लीजिये
कहा मैं ले आई तेरा बेनज़ीर ॥
कहे तू कि हैरत में आ मर गई ॥
नया छेड़ने को मेरे कुछ है यह ॥
ग़लत कहने वालों में कुर्बान की
नहीं मुंह पे कह बैठती बेधड़क ।
वह सब कह दिया हाल था जिस तरह
और एक और बेधवा उड़ा लाई हूं
दरख़्तों में उनको रखा है छिपा ॥
कि दिलबर को तेरे दिया ला मिला
कि मैं तेरे ख़ातिर बला में फंसी ॥
हवा दूसरे को बताती हूं मैं ॥
कहा क्यों उड़ाती है नज्मुलनिसा
कहो तू है अब्तर कहीं ग़र्क़ है ॥
उन्हें जाके जल्दी ले आ तू इधर ॥
बग़ैर अज़ किसी के खुली होगी तू ॥
वह इस बात को क्या कहेगा नहीं
कहो तू वह भी तेरे पास है ॥
कि वह रूबरू उसके हो या नहीं
लिया जाके आहिस्ता उनको पुकार
वह ख़िल्वत का जो था कदीमी मकां

फिर उससे यह पूछा कि ऐ बेनज़ीर ॥ कहाँ है तू चली आय बद्रे मुनीर ॥
कहाँ पे है तुम के रश्के चमन ॥ छिपे है कहाँ भाई से भी बहिन ॥
मेरा जानो माल उसपे कुर्बान है ॥ कि उसके सबब से मेरी जान है ॥
मेरा यह तो हमदम है दिन रात का ॥ मुझे इससे पर्दा है किस बात का ॥

दास्तान बेनज़ीर और बद्रे मुनीर के मिलने की और उसके बाप को ब्याह का रुक़्क़ा लिखने में ॥

मेरे मुँह से साक़ी मिला दे शराब ॥ कि मिलते हैं बाहम मह ओ आफ़ताब ॥
यह सुन सुन के बातें वह पर्दानशीं ॥ चली आई वाँ नाज़ से नाज़नीं ॥
हया से फिर आकर जो बैठी वह पास ॥ फिर आये गये उसके होशो हवास ॥
नज़र से नज़र जो मिली एक बार ॥ किये चश्म ने लालो गौहर निसार ॥
इधर चश्म खूनी इधर चश्मे नम ॥ उसे इसका ग़म और इसे उसका ग़म ॥
न वह रंग उसका न वह उसका हाल ॥ तने ज़र्द ज़र्द और रुख़े लाल लाल ॥
वह ग़म वह फ़िराक़ दीदा गुलज़ार से ॥ मिले जैसे बीमार बीमार से ॥ ॥
अजब सुहबत आपुस में उस दम हुई ॥ कि ऐसी भी सुहबत बहुत कम हुई ॥
वह नज्मुन्निसा और वह फ़ीरोज़ शाह ॥ हया से किये अपनी नीची निगाह ॥
सखियों के मुँह ख़ून बहाने लगे ॥ इस अहवाल पर हैफ़ खाने लगे ॥
और इस तर्फ़ को शाहज़ादा निढाल ॥ लगा रोने आँखों पे रख कर रूमाल ॥
वह मस्त रूह दिल थी जो बद्रे मुनीर ॥ लगी खींचने अपनी आहों के तीर ॥
किया मुँह को उस तर्फ़ से नाज़नीं ॥ लगी करने तर दामनो आस्तीं ॥
पड़ी ग़म की बातें जो आदर मियाँ ॥ यह रोई कि लग लग गईं हिचकियाँ ॥
ग़रज़ देर तक मिल के रोते रहे ॥ जुदाई के दाग़ों को धोते रहे ॥

रुखे ज़र्द पर अश्क गुलगूं बहा | बहारो खिज़ां को किया एक जा
कलेजों पे जो दाग़ थे बेशुमार ।। | सो आंखों से उनके सिलाई बहार
फिर आख़िर को नज्मुलनिसा वह ग़रीब | लगी कहने सुनती है बद्रे मुनीर ।।
किया चाहती है तू अब कहूं क्या | ज़ियादा न बस अपनी उल्फ़त जता
मगर तेरे ख़ातिर यह रोया है कम | कि तू और रोने के देती है ग़म ।।
ज़रा तन में आने दे इसके तवां ।। | अभी इसको रोने की ताक़त कहां
यह मुरदा सा लाई हूं मैं इस लिये | कि देखे से तेरे शिताबी जिये ।।
वहां मैंने इसकी नहीं की दवा ।। | कि है ख़ान ये यारदारू शफ़ा ।।
ले आई हूं इसको मुहब्बत की धुन | जिया है फ़क़त तेरे मिलने को सुन
इसे वस्ल की अपनी दारू पिला | किसी तरह इस नीम जां को जिला ।।
बस कुछ ख़ुशी की करो गुफ़्तगू | ख़ुदा फिर न तुम को रुलाये कभू
नहीं ख़ुश नुमा पास आये हुये | रहें दोजने मुंह उठाये हुये ।।
यह सुन हंस पड़े सब वह आपुस में मिल | पड़े जिस तरह फूल गुलशन में खिल
बहम फिर तो होने लगे इख़्तिलात | उयजने लगे दिल से शादी निशात
शब आधी गई फिर तो खासा मंगा | तकल्लुफ़ से हर एक के आगे धरा
अजब चुहल से सबने आपुस में मिल | किया नोश ख़ाहिशे तमन्नाय दिल
फिर आख़िर को दो दो जुदा हो गये | अलग ख़्वाबगाहों में जा सो गये ।।
उठाये थे जो जो के रंजो मलाल ।। | हुये इस मज़े में वह ख़्वाबो ख़याल
अलग होके लेटी जो वह माहरू ।। | हुई लेटे लेटे अजब गुफ़्तगू
वह गुज़रा हुवा याद कर करके हाल | लगे रोने आंखों पे धर कर रुमाल
कहा शाहज़ादे ने अहवाल सब | कुवें में जो गुज़रा था रंजो तअब ।।
किया मैं अंधेरे में रोया किया | कुवें में तन अपना डुबोया किया
न पहुंचा कोई अपना फ़रयादरस | तड़पना रहा दिल बरंगे जरस ।।

वह तारीक ख़ाना मेरा घर रहा | सदा मेरी छाती पे पत्थर रहा
मुहब्बत ने यह चाशनी और दी | कि मेरे तईं जीते जी गोर दी ॥
ज़मीं से निकलने को कब आस थी | फ़लक के मुझे हाथ से यास थी ॥
अजब तरह से ज़ीस्त करता रहा | तेरी जान से दूर मरता रहा ॥
ख़ुदा ही ने तुझ से मिलाया मुझे | उठा क़ब्र से फिर जिलाया मुझे
दिया शाहज़ादी ने रो रो जवाब | कि मैंने भी एक शब यह देखा था ख़्वाब
तेरे दाग़ की दिल में जो बू गई ॥ | मैं एक रात रोती हुई सो गई ॥
तो क्या देखती हूं कि सहरा है एक | और उस दश्त बर में कुवां सा है एक
सदा वां से आती है बद्रे मुनीर ॥ | इधर आ कि यां क़ैद है बेनज़ीर
मैं हर चंद चाहा करूं तुझ से बात | वलीकिन गई वां न कुछ मुझ से बात
मेरी जान गो उस तरफ़ ढल गई ॥ | उसी दम मेरी आंख फिर खुल गई
अजब उस घड़ी मुझ पे गुज़रा क़लक़ | कि दिल और जिगर हो गया मेरा शक़
उसी दिन से यह हाल पहुंचा मेरा | कि मरती रही नाम ले ले तेरा ॥
न देखा था गो कोई तेरी ख़बर ॥ | वले था तेरे ग़म से दिल को असर ॥
गुज़रता था वां तुझ पे जो सुबहो शाम | वह अंधेर था मुझ पे रौशन तमाम
यह कहती मैं किस से यह दर्द निहां | शबो रोज़ मलती थी मैं आस्मां
अजब तरह से ज़ीस्त करती थी मैं | कि उस ज़ीस्त करने से मरती थी मैं
इसी ग़म में रहती थी लैलो नहार | कि क्योंकर मिलावेगा परवरदिगार
मेरी [illegible] पर रो के नज्मुन्निसा | गई इस तरह हाल अपना बना ॥
फिर आगे तो मालूम है तुम को सब | कि हम तुम मिले फिर उसी के सबब
यह आपस में कह हाल दिल रो उठे | वह कहने को सोये थे बस सो उठे ॥
जो मिलते हैं बिछुड़े हुवे एक जा | उन्हें नींद बातों में आती है क्या ॥
परीज़ाद नज्मुन्निसा वां जुदे ॥ | अलग अपनी बातों में मशग़ूल थे

वह पाजामा ये सब्ज़ कमख़्वाब और | डुपट्टा बनारस का सूरज के तौर ।।
जवाहिर सजा अपने मौक़े से कुल | तरश्शुह में हो जैसे नमदीदा गुल
वह कंघी खिची और अबरू खिचे | हरएक आन में अपने हर सू खिचे
रुख़्सार वह चोटी ज़री का मुबाफ़ | कि जो दूद के बाद शोला हो साफ़
ग़ुरूर सामान उसने किया जो लिबास | तो आने लगी ख़ूब को उसमें बास
बनी जब कि इस रंग वह रश्के हूर | चली आई फ़ीरोज़शाह के हुज़ूर
परीज़ाद तो क़त्ल ही हो गया ।। | कहे तू कोई जान से खो गया ।।
हया से तो की बात नहं कुछ कहा | कलेजी से क़ुरबान उस पर रहा ।।
वह बन ठन के आपुस में रहने लगे | वह सब राज़ दिल अपने कहने लगे
ख़ुशी से हुवे बस कि मसरूर दिल | लगे सब ज़ियां पीने आपुस में मिल
ज़ियाफ़त वह मिल मिल के खाने लगे | वह ग़म खा के उनके ठिकाने लगे
छिपे ऐश आइशरत वह करते रहे | वे ग़ैरों के चश्म से डरते रहे ।।
अगरचे हर एक वस्ल से शाद था | व लेकिन हिज्र का ग़म उन्हें याद था
यह ठहरा के निकले वह दोनों माहरू | कि इस बात को कीजिये एक सू
ग़ज़ब है जो यों ही दो बारा रहें ।। | छिपे कब तलक आश्कारा रहें
सही है यह तकलीफ़ आराम को | यह ना कामिया क्या किस काम को
नसीब इस तरह से जो यारी करें | भया क्यों न हम ख़्वास्तगारी करें
जब आपस में यह मश्विरे हो गये | इधर और उधर मिल के दो से गये
वह नजमुन्निसा और वह बद्रेमुनीर | कुछ एक का बहाना वह दोनों शरीर
रही घर में फिर जा के मां बाप के | कि देखेंगे हम अब क़दम आपके
निकल बेनज़ीर और फ़ीरोज़शाह | किसी शह्र में सब के पौंचे सिपाह
कर असबाब सब सल्तनत का दुरुस्त | फिर आये उसी जा ये बालाक चुस्त
ज़्हां का जो था शाह अंजुम हशम ह ।। | जिसे लोग कहते थे मसऊद शाह

नामा भेजना बेनज़ीर का मसऊद शाह को ख़्वास्तगारी में बद्रमुनीर के ॥

किया नामा येक उसको रक़म | किए शाह शाहाने वे फ़रुख़जम
फ़रेदूं मिसालो सिकंदर नज़ाद | मुरादे जहानो जहाने मुराद
जहाने शुजाअत ज़माने करम | दिले रुस्तमे गुर्द हातिम हुमम
मैं वारिद हूं यां एक मेहमां गरीब | ले आये हैं मुझको मेरे यां नसीब
नवाज़िश से अपने करम कीजिये | गुलामी में अपने मुझे लीजिये
हमेशा से है राहो रसमे शहां ॥ | किवा बिस्तरा यों ही हैं कारे जहां
नहीं घर है सौदान कि मैं माह हूं | मलिकज़ादा हूं मैं मलिक शाह हूं
हर एक मुझसे वाक़िफ़ है बरनाओ पीर | कि है नाम मेरा शाहे बेनज़ीर ॥
बयां सब किया माजरा हाल का | सरम्मुल लिखा फ़ौजो अमवाल का
जिताकर बहुत इज्ज़ औरहुनाकिसार | लिखा यह भी एक हर्फ़ आख़िर को बार
कि गोसोवे दाअब्स्त पुर अज़ शरीफ़ | वह है अपने मज़हब में अपना हरीफ़
अगर मानिये ख़ैर तो मानिये ॥ | नहीं आप आया हमें जानिये ॥
गया यह जो मसऊद शाह को पयाम | सुना और पढ़ा ख़त का मज़मूं तमाम
समझ इसका मज़मून मसऊद शाह | कि इतनी है फ़ौज और इतनी सिपाह
अगर जंग हो तो बड़ी जंग हो ॥ | फिर आख़िर ख़ुदा जाने क्या रंग हो
और आख़िर यही है ज़माने का हाल | कि ये बंद होते हैं बाहम निहाल
नताज़ी यह कुछ रसम पैवंद है ॥ | हमेशा से आलम बरोमंद है ॥

जवाब नामा बेनज़ीर का मलिक मसऊद शाह से

लिखा नामा उसके यह एक दर जवाब | कि आक़िल को नुक़ता लगी है किताब

लिखा बाद हम्दो सनाये ख़ुदा
पस अज़ नात अहमद शहे अंबिया
कि नामा तुम्हारा जो सरबस्ता था
वह राज़े निहां अपने हाथों खुला ॥
शरीअत के आलम में मजबूर हैं
नहीं अपने नज़दीक हम दूर हैं
अगर हम कभी अपने दावे पै आय
तुम्हारे फ़लक को न ख़ातिर में लाय
अभी घर से निकले हो लड़कों के तौर
नहीं नेको बद पर तुम्हें अपने ग़ौर
किसी पास दौलत यह रहती नहीं
सदा नाउ काग़ज़ की बहती नहीं
वले क्या करें रस्म दुनिया है यह
अगर का घमंड आपका क्या है यह
ज़िबस हम को है पास शरए रसूल
सो इस वास्ते करते हैं हम क़बूल
ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ बमंज़िल न ख़्वाहद रसीद
एक अच्छी सी तारीख़ ठहराइये
दिया हुक्म हमने तुम्हें आइये ॥
गया एलची लेके नामा उधर ॥
उड़ी हर तरफ़ यह ख़ुशी की ख़बर
सुनी वह जो नामे की गुफ़्तो शुनीद
हुई शाहज़ादे को गोया कि ईद
कुशादा हुये दिल जो थे ग़म से तंग
उसी दिन से होने लगे राग रंग ॥
हुईं बरतरफ़ सब दिल आज़ारियां
लगीं होने शादी की तय्यारियां
बुला शगुनियों को बना सालो सिन
मुक़र्रर किया नेक साअत का दिन

दास्ताने बेनज़ीर और बद्रे मुनीर के ब्याह की और उसके तजम्मुल में

किधर है तू ऐ साक़िये गुलबदन
धरे आज उस शमअ रू की लगन
बुला मुतरिबाने ख़ुश आवाज़ को
कि आवें लिये अपने सब साज़ को
वह असबाब शादी का तय्यार हो
मुक़र्रर न फिर जिस को तकरार हो
बड़ी ख़्वाहिशों से जब आया वो रोज़
चढ़ा ब्याहने वह महे शब फ़रोज़
महल से निकल जब हुवा वह सवार
बजे शादियाने वहम एक बार ॥

कहूं उस तजम्मुल का क्योंकर बयां
कि बाहर है तक़रीर से यह बयां ॥

वह दूल्हा के उठते ही एक गुल पड़ा
लगा देखने उठके छोटा बड़ा ॥

कोई दौड़ घोड़ों को लाने लगा
कोई हाथियों को बिठाने लगा

लगा कहने कोई इधर आइयो
और शिताबी से लाइयो ॥

किसी ने किसी को पुकारा कहीं
नलाने पे म्याने के मारा कहीं ॥

कोई पालकी में चला हो सवार
सिपाहों को रख अपने आगे क़तार

जो कसरत में देखा कि गाड़ी नहीं
कोई मांगे तांगे पे बैठा कहीं ॥

सिपर और कबूज़े खड़कने लगे
सवारों के घोड़े भड़कने लगे ॥

टकोरे वह नौबत के और उनके बाद
गरजना वह धौंसों का मानिंद राद ॥

वह शहनाइयों की सुहानी धुनें ॥
जिन्हें गोश ज़ुहरा मुफ़स्सल सुनें

हज़ारों तमामी के तख़्ते रवां ॥
और अहले निशात उनपे क़ेसल कुनां

वह तबलों का बजना और उनकी सदा
यह गाना कि अच्छा बना लाड़ला

वह नौशे का घोड़े पे होना सवार
वह मोती का सेहरा जवाहिर निगार

ठिठक कर वह घोड़ों का चलना संभल
हुमा के वह दोनों तरफ़ मोर छल ॥

वह फ़ानूसें आगे ज़मुर्रद निगार
कि हो सब्ज़ मीना जिन्हें मतनेसार

दोरस्ता जो रौशन चिराग़ां हुवे ॥
पतंगे ख़ुशी से ग़ज़ल ख़्वां हुवे ॥

हुवा दिल जो रौशन चिराग़ान से
पढ़े और नूरी के दीवान के ॥ ॥

चिराग़ों के तख़्ते लिये जा बजा ॥
और उनमें वह बाज़ारियों की सदा

कोई पान बेचै खिलौने कोई ॥
कोई दाल मोठ और सलोने कोई

तमाशाइयों का कुछ एक हजूम ॥
पतंगे गिरें जो चिराग़ों पे झूम ॥

खड़कना वह नौबत का बाजों के साथ
गरजना वह धौंसों का डंकों के साथ

तमाशाई इधर और उधर झूक झूक ॥
वह आवाज़ करना और अबान बूक

वह काले पियादे और उनके नफ़ीर
कि ता चर्ख़ पहुंची सदा उनकी चीर

वह आराइश और गुल कई रंग के
वह हाथी कि दो देव थे जंग के ॥

वह अबरक़ की टट्टी वह मीने के झाड़
कहूं तू कि तिन के वे अफ़ल पहाड़

दो रस्ता बराबर बराबर वह तख़्त ॥
किसी पर कंवल और किसी पर दरख़्त ॥

वह रंगीं दरख़्त और वह फूल और चिराग़
खिले जिस तरह लालये नूर बाग़

जहां तक नज़र आवे उनकी क़तार
तिलिस्मात की सी हवा पर बहार ॥

अनारों का दग़ना भुचंपे का ज़ोर ॥
सितारों का फटना पटाख़ों का शोर

उड़ाया सितारों को जो आग ने ॥
तो हाथी लगे कांहले भागने ॥

वह महताब का छूटना बार बार
हर एक रंग की जिससे दूनी बहार

धुवां छिप गया नूर में नूर हो ॥
सियाही उड़ी शब की काफ़ूर हो

सरासर वह हर तर्फ़ मशअ़ल के झाड़
कि जो नूर के शुअ़्ल असल हों पहाड़

ज़मीं पे शुआ़ सख़्त रसन एक दिगार ॥
फिरे बर्क़ की तरह इधर उधर ॥

कहे तू कि नज़दीक और दूर से
ज़मीं ता ज़मां भर गया नूर से ॥

जब आई वह दुलहिन के घर पर बरात
कहूं वां के आ़लम की क्या तुझसे बात

दुबाला कि सुहब तकीये के वह फूल
धरे ख़ूब ख़ूब गिर्द अंबर सरिश्ल

खड़े आंतलों के बग़ीं मे बलंद ॥
करे आ़लमे नूर जिसको पसंद ॥

अजब मसनद एक जगमगी और फ़र्श
तमामी के आ़लम का चौकोर फ़र्श

बिलौरी धरे शमअ़दां बेशुमार ।
चढ़ीं मोम की बत्तियां चार चार

नये रंग के और नये तौर के ॥
धरे हर तरफ़ झाड़ बिल्लौर के ॥

तमाशाइयों का यह कसरत के बस
मिले एक से एक सब पेश पस

दुल्हा नूरी पेश आ बैठे तमाम ॥
शादे ख़ुशी के किये जो शराज़ाम

वह दूल्हा का मसनद पे जा बैठना
बराबर अ़रूसों का आ बैठना ॥

तवायफ़ का उठना एक अंदाज़ से
दिखानी वह आसूरते नाज़ से ॥

करूं राग और नाच का क्या बयां
क़दीमी किसी वक़्त का सा समां

वह अरबाब इशरत का आपुस में मिल
ज़माना खड़े राग का देके दिल ।।

वह एमन की तानें इधर और उधर
मिले सुर तंबूरों के बाहम दिगर ।।

और इस सफ़ से इक छोकरी का निकल
जताना हुनर अपना पहले पहल ।।

उलटना वह ठोकर को देदे के ताल
वह बूटा सा क़द और खरदे की चाल

कभी पर मलों को दिखाती अदा ।।
कि जों लूट का बिजली होवे हवा ।।

कभी गत फिरी नाचना ज़ौक से ।।
कि त्योरा के आशिक़ गिरे शौक़ से

इधर की तो यह गत और उसका वह भाउ
इधर ओट में नायका का बनाउ ।।

खड़े होके दो घूंट हुक्के के ले ।।
चबा पान और रंग होठों पे दे ।।

अंगूठे को ले सामने आरसी ।।
वह सूरत को देख अपनी गुलनार सी

उलट आस्तीनें और मुहरी का चाक
नये सिर से अंगिया को कर ठीक ठाक

बना कंघी और करके अबरू दुरुस्त
झटक दामन और होके चाला को चुस्त

दुपट्टे को सिर पर उलट और संभल
एकाएक वह सफ़ चीर आना निकल

पकड़ कान और घूंगुरू को उठा
पहिन पाउं में अपने सिर से छुवा ।।

इधर और उधर सबके कांधे पे हाथ
चली नाचनी आना संगत के साथ

फ़तह चंद के हाथ की मूर्त्ति एक
लजाई हुई चांद से सूर्त्ते एक ।। ।।

कभी नाचना और गाना कभी
रिझाना कभी और बनाना कभी

खुशी आवाजियों से वह गाना ख़याल
दिखाना हर एक दम में अपना कमाल

वह प्यारी की मजलिस वह गाने का रंग
वह जी की खुशी और वह दिल की तरंग

वह फूलों के गहनों के नारों के हार
वह बैठी हुई रंडियों की क़तार ।।

वह तोड़ों के पत्ते पड़े हर तरफ़ ।।
ग़मे दिल जिसे देख हो बरतरफ़

इधर का तो यह ठाठ था और यह राग
महल में उधर तोड़ियां और सुहाग

वह गहरी सी शादी मुबारक वह ढोल
वह टोने सलोने वह मोंढे से बोल

उझकने की वां समधिनों की फबन
खिली फूल जैसे चमन दर चमन

गलेमें पहिन्ना वहहंसहंस के हार | सटासट वह फूलों की छड़ियों की मार
दिखाना वह बन बन के अपना बनाऊ | वह आपुस की रस्मैं वह आपुस की चौऊ
कहांवै हंसी औरो गुल गालियां | सुहानी सुहानी नई गालियां ॥
गरज़ क्या लिखूं ताब मुझ में नहीं | न देखेगा आलम कोई यह कहीं

दास्तान निकाह होना बेनज़ीर का साथ बद्रेमुनीर के और शादी नज्मुलनिसा की परीज़ाद से और रुखसत होना आपुस में

हुआ यूं नशे में बहुत सा किया | मुझे बदले अब मैं के शरबत पिला
किसी पर न ऐसा हो जो बार हूं ॥ | कि फिर मैं गले का तेरे हार हूं ॥
हुआ जब निकाह और बटे हार पान | पिला सब को शरबत दिये हम पान
उठा फिर तो नौशाह बाद अज़ निकाह | महल में बुलाने की ठहरी सलाह ॥
बलायें वह दूलह दुलाहन की तरफ़ | उड़े जैसे बुलबुल चमन की तरफ़
वहां तक पहुंचते हुये क्या कहूं ॥ | हुई दिल्लगी लाख बहरे फ़ुगूं ॥
हुवा ले कि न उस वक्त दूना मज़ा | कि दूलह दुलहन जब हुये एक जा
अरूसी वह गहना वह सूहा लिबास | वह मेंहदी सुहानी वह फूलों की बास
मला सुर्ख जोड़े पे अतरे सुहाग ॥ | खुले मिल के आपुस में दोनों के भाग
दिखा मुसहफ़ और आरसी को निकाल | धरा बीच में सिर पै आंचल को डाल
नज़ारा बदल इसतरह का ध्यान में ॥ | खुदा ने किया आरसी आन में ॥
अजब कुदरते हक़ नुमायां हुई ॥ | जिसे आरसी देख हैरां हुई ॥
वही मिलन का होना वह शादी की धूम | वहै आपुस में दूलह दुलहिन की रसूम
किसी ने पसारा मरज़ आन कर ॥ | कोई गालियां दे गई जान कर ॥

सुहागा गई कान को कोई लगा — गई कोई दुलहिन की जूती छुवा ।।
वह शीरी जो बैठी थी शीरी बनी — नबात उसकी चोनी बने को बनी ।
चुनाई नबात उसको इस घात से — कि धक्का दिया हर घड़ी बात से
ग़रज़ बस दिल तो था उसका हर ज़ा पे बंद — सभी जा से उसने चुनी कर पसंद ।।
उठाई डली उसकी आंखों से यों — करैं नोश बादाम शीरीं को ज्यों ।।
डली वह जो होठों की थी लब मिली — वह मिसरी की मुंह से उठाई डली
कमर से उठाई डली इस तरह ।। — कि हां हूं नहीं की नहीं जिस तरह
ज़रा पाउं पड़ के उठाते अड़ा ।। — नहीं और हां का अजब गुल पड़ा
वह ज़ाहिर की तनकार थी बार बार — बग़ल दिल उस पाउं पर था निसार
अजब तरह की सैर लिया हुई — कि बातें वह मिसरी की डलियां हुईं
वह सब हो चुकी जब कि रस्मो रसूम — सवारी की होने लगी फिर तो धूम
सहर का वह होना वह रोने का वक़्त — वह दुलहन की रुख़सत वह रोने का वक़्त
वह सब का लाचार मुंह देखना ।। — कि यारब यह क्या है जहां देखना ।।
वह दुलहन का रो रो के होना जुदा — वह मां बाप का और रोना जुदा
निकलते वह जाना महल से दहेज़ — कि जों चश्म से अश्क हो मौज ख़ेज़
यहां मौत है अहले इरफ़ान को ।। — कि जाना है एक दिन यों ही जान को
वह तो दर्दमंदी से हैं आशना ।। — वह शादी का लेते हैं ग़म से मज़ा
वह दूलह ने दुलहन को गोदी में ला — बिठाया महाफ़े में आख़िर को ला
चले ले के चंडोल जिस दम कहार — किया दो तरफ़ से ज़र उन पर निसार
खड़े थे जो वां चश्म को तर किये ।। — सो मोती उन्हों ने निछावर किये
इधर और उधर अपने सहरे को चीर — वह एक चांद सा मुंह दिखा बेनज़ीर
सवार अपने घोड़े पे हो कर शिताब — कि जों सुबह हो वे बलंद आफ़ताब
दिखाता हुवा हशमतो अज़्म शान — लिये साथ साथ अपने नौबत निशान

वह पीछे तो चंडोल में रख के माह
और आगे वह ख़ुर्शीद आलमपनाह

फिर घर को अपने क़दम ब क़दम
सवारी लगा घर में उतरा सनम

ग़रज़ इस तरह जब वह दुल्हन को ब्याह
ले आया जहां उसकी थी ऐशगाह

हुई वह जो होती थी रस्मो रसूम ॥
कि ज़ाहिर में थी यह भी दरकार धूम

उठाया उसी धूम में लगते हाथ ॥
परीज़ाद का ब्याह चौथी के साथ

वह नज्मुल निसा थी जो दुख़्तर वज़ीर
गया उसके वालिद कने बेनज़ीर

कहा बाप को उसके ऐ ख़ैरख़्वाह
मेरा भाई है एक फ़ीरोज़ शाह ॥

सो मैं तुम से रखता हूं एक इल्तिजा
कि तू उसको फ़र्ज़ंदी में अपनी ला

ग़रज़ हर तरह कर रज़ामंद उसे ॥
किया हाल पर अपने पाबंद उसे ॥

परीज़ाद वह था जो फ़ीरोज़ शाह
दिया उसको नज्मुल निसा से बियाह

उसी धूम से और उसी फ़ौज से ॥
उसी शान से और उसी औज से ॥

वही सब तजम्मुल वही सब रसूम
हुईं थीं जो कुछ ब्याह में उसके धूम ॥

इसी का न छोड़ा किसी बात में ॥
बराबर रही चेहल दिन रात में ॥

उसी तरह उसको बियाहा ग़रज़
जो कुछ क़ौल था सो निबाहा ग़रज़

ख़ुदा रास लाया उन्हों के जो काम
बर आये दिलों के मतालिब तमाम

हुईं मुत्तसिल यह जो दो शादियां
बसीं एक जा चार आबादियां

फिर एक दिन तो अपने वतन को फिरे
वह आशुफ़्ता बुलबुल चमन को फिरे

ख़ुशी से लिये हुरमतो जालो माल
चले शाह को अपने वह हाल हाल

वह नज्मुल निसा और वह फ़ीरोज़ शाह
फ़लक पर से हो मिस्ल ख़ुर्शीदो माह

गो उनसे लेकर उसी आन में ॥
गये शादो ख़ुर्रम परिस्तान में ॥

यह इक़रार चलते हुये कर गये
कि गो तुम उधर और हम इधर गये

तुम इस ग़म से मत हूजियो सीनः रेश
कि हम तुमसे मिलते रहेंगे हमेश

तसल्ली वह देकर उधर को चले ॥
यह इधर लिये अपना लश्कर चले

दास्तान बेनज़ीर की बद्रे मुनीर को अपने वतन ले जाने और मा बाप से मुलाक़ात करने में

पिलासा किया आखिरी एक जाम
कि होती है बस अब कहानी तमाम

वह नज़दीक पहुंचे जो उस शह्र के
किया पास जा ख़ीमा एक नह्र के

किया जबकि ख़िलक़त ने नफ़ तो शुमा
और आंखों से देखा वो बद्रे कमाल

पड़ा शह्र में यक बयक फिर यह गुल
कि ग़ायब हुवा था सो आया वह गुल

ख़बर यह हुई जबकि मा बाप को
किया गुम उन्हों ने कहीं आप को

ज़िबस दिल तो था यास ही से भरा
यह सुन हाथ और पांव थरथरा

लगे रोने आपुस में ज़ारो नज़ार
कहा हाय हम को नहीं एतबार

मिलेगा वह हम से हमारा हबीब
यह दुश्मन नहीं अपने ऐसे नसीब

यह होगा कोई दुश्मने मुल्को माल
सो मैं आप ही हूं गिरफ़्तार हाल

कोई इसका वारिस तो आखिर नहीं
वही लेके जावे यह भगड़ा कहीं

कहा सबने साहब चलो तो सही
वह बेटा तुम्हारा वही है वही ॥

मुकर्रर सुना जबकि बेटे का नाउं
चला फिर तो रोता हुवा नंगे पाउं

वह आता था जैसे कि बेटा उधर
पड़ी बाप पर जो इकाइक नज़र

जोंही अपने बाबा को देखा वां
चला सिर के बल बेनज़ीर जहां

गिरा पाउं पर कहके यह बाप से
ख़ुदा ने दिखाये क़दम आप के

सुनी यह सदा जोंही उस माह की
तो इस ग़म रसीदा ने इक आह की

उठा सिर क़दम पर से छाती लगा
लिपट के बड़ी देर तक ख़ूब सा

वह रोया वह रोया कि ग़श कर चला
कहे तू कि आंसू का लश्कर चला

मिले फिर से आपस में वह ख़ूब से
कि यूसुफ़ मिले जैसे याक़ूब से ॥

वह गुल गुल शिगुफ़्ता हुवा गुल की त.
वह गुल की तरह और वह बुलबुल की तरह

तसवीर बेनज़ीर के बाप के क़दम पर गिरने की

हुये शादो खुर्रम सग़ीरो कबीर ॥ चले लेके नज़रें अमीरो वज़ीर ॥ ॥

नये शा से सबको मस्ती हुई ॥ नये सिर से आबाद बस्ती हुई ॥ ॥

बड़ी धूम से और बड़ी आन से ॥ बजाते हुये नौबतें शान से ॥ ॥

वह फूला जो था हिज्र के दाग़ में ॥ हुवे आके दाख़िल उसी बाग़ में ॥

ज़नानी सवारी उतरवा के साथ ॥ पकड़ उस गुले नौ शिगुफ़्ता का हाथ

दरामद हुवा घर में सर्वे रवां ॥ लिये साथ अपने वह गुंचा दहां ॥

कि इतने में आगे नज़र जो पड़ी ॥ तो देखा कि है राह में मा खड़ी ॥

बहे चश्म से आंसुवों की क़तार ॥ गिरा मां के पावों पे बेइख़्तियार

वह मां ख़ूब बेटे के लग कर गले ॥ यह रोई कि आंसू के नाले चले ॥

वह दोनों की दो हाथ से लीं बला
वह और बेटे को छाती लगा ।।

पिया पानी उन दोनों पर वार वार
हुई जान और जी से उस पर निसार

बुझे वस्ल से हिज्र के वह चिराग़
जिगर पर जो थे दर्द और ग़म के दाग़

फिर आके चमन में वह गुल खिल खिला
सब आपुस में रहने लगे मिल मिला

जहां में जो थीं रश्क गुल शादमान हुईं
वह आँखें जो अंधी थीं रौशन हुईं

दुबारा उन्हों ने किया उसका व्याह
ग़रज़ बस बाप मां को थी सेहरे की चाह

तो फिर यह कहानी न होवे तमाम
लिखूं मैं गर उस व्याह की धूमधाम

निकाले उन्हों ने यह सब दिल के चाव
बनाउन की तक़दीर का जो बनाउ

बसे आके फिर उन में सब गुल रुख़ां
वह जैसी कि उस बाग़ में थी ख़िज़ां

वह मुरझाए गुल फिर हुवे लहलहे
महल में अजाय बकुवे वह चहचहे

वही शाहज़ादी वही शाह यार
हुवा शाह पर फ़ज़ल परवरदिगार

वही नाज़ो अंदाज़ के अपने काम
वही लोग और वो ही चरचे मुदाम

शिगुफ़्ता गुलो यासमन ये दोस्तां ।।
वही बुलबुलें और वही बोस्तां ।।

हमारे तुम्हारे फिरें वैसे दिन ।।
उन्हें के जहां में फिरे जैसे दिन ।।

वह के मुहम्मद अलेहुस्सलाम
मिलें सब के बिछुड़े इलाही तमाम

रहे शाह में अपने आबाद हम ।।
हुवे जैसे वह शाद हों शाद हम ।।

कि है आसफ़ुद्दौला जिसका ख़िताब
रहे शाद नव्वाब आली जनाब ।।

रहे रौशन उसका चिराग़े मुराद ।।
ख़ुशी उसकी है सब का बागे मुराद ।।

रहूं शाद मैं भी ग़ुलामे हसन ।।
वह के हुसेनो वह के हसन ।।

कि दादे सख़ुन का दिया है बहा
ज़रा मुंसिफ़ी दार की है यह जा ।।

तब ऐसे यह निकले हैं मोती से हर्फ़
निबस उम्र की इस कहानी में सर्फ़

तब ऐसे हुवे हैं सख़ुन बे नज़ीर ।।
जवानी में जब बन गया हूं मैं पीर

मुसलसल है मोती की गोया लड़ी
नहीं मसनवी है यह एक फुलझड़ी

नहीं मसनवी है यह सहरुल्बयां
नई तर्ज़ है और नई है ज़बां ।।

कि है यादगारे जहां यह कलाम
रहेगा जहां में मेरा इससे नाम ।।

जब इस तरह रंगीं यह मज़्मूं किया
हर एक बात पर दिल को मैं खूं किया

सिला इसका कम है जो कुछ दीजिये
अगर वाक़ई ग़ौर टुक कीजिये ।।

हसन आफ़रीं मरहबा मरहबा
ग़रज़ जिसने इसको सुना यह कहा

न ऐसी हुई है न होगी कभी ।।
जो मुन्सिफ़ सुनेंगे कहेंगे यही ।।

कि हैं शाहज़ादे सख़ुन के ख़लील
मेरे सब्ज़ मुश्फ़िक़ हैं मिर्ज़ा क़तील

दिया इसकी तारीख़ को इत्तिज़ाम
सुनी मसनवी जब यह मुझसे तमाम

हर इक शेर उनका है जों आरसी ।।
ज़ि बस शौक़ कहते हैं यह फ़ारसी

यह तारीख़ की फ़ारसी में रक़म ।।
उन्हूं ने ख़ुशी से उठाकर क़लम

तारीख़ तबअ़ज़ाद मिर्ज़ा क़तील

कि गुफ़्त अज़ हसन शाइरे देहलवी
बनफ़्से शुदा तारीख़ ईं मसनवी ।।

कि आरम बकफ़ गौहरे मुद्दआ
ज़ेदम ग़ोता दर बह्र फ़िक्रे रसा ।।

बरीं मसनवी बादहा दिल फ़िदा ११९९
बगोयम मज़ीं हातिफ़ स्रोदे निदा

तारीख़ तबअ़ज़ाद मुसह़फ़ी

उन्हूं ने भी कर फ़िक्र अज़ राह ग़ौर
मियां मुसह़फ़ी को जो भाया यह तौर

यह बुतख़ानये चीन है बेबदल ११९९
कहा इसकी तारीख़ यों बरमहल

तारीख़ फ़ख़्र राजा माहिर की

तो महज़ूज़ हो फ़िक्र तारीख़ की
सुनी जब कि माहिर ने यह मसनवी

हि इस मसनवी की यह नादिर तरह
[illegible] पढ़ा वो ही पाकर फ़रह